संस्कृत व्याकरण मंजूषा



डा. अयूब

कपूर ब्रदर्स जम्मू व श्रीनगर

Donated

संस्कृत व्याकरण मंजूषा

(जम्मू-कश्मीर विश्वविद्यालय की मैट्रिक तथा हायर सैकिण्डरी परीक्षा के
पाठ्य-क्रम के अनुसार लिखित)

लेखक

प्रो० मुहम्मद अयूब

एम० ए० संस्कृत, एम०ए० हिन्दी

स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग

जम्मू-कश्मीर विश्वविद्यालय

प्रकाशक

कपूर ब्रदर्स

लाल चौक, श्रीनगर

[द्वितीय संस्करण]

प्रकाशक :
कपूर ब्रदर्स,
लाल चौक, श्रीनगर

मूल्य साढे आठ रुपये

मुद्रक :
बी० बी० इन्टरप्राइजर्स
द्वारा, मेहता प्रिन्टर्स,
दिल्ली-११०००६

भूमिका

जम्मू-कश्मीर प्रदेश संस्कृत भाषा का प्रमुख केन्द्र रहा है। इस समय भी यहाँ संस्कृत के प्रति विशेष अभिरुचि देखकर अत्यन्त सन्तोष का अनुभव होता है। संस्कृत व्याकरण एवं अनुवाद सम्बन्धी प्रस्तुत पुस्तिका इसी अभिरुचि को जागृत करने के लिए लिखी गई है। जम्मू-कश्मीर विश्वविद्यालय के मैट्रिक तथा हायर सैकिण्डरी परीक्षा के पाठ्य-क्रम में निर्धारित व्याकरण को सरलतम रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है। वैसे यह बी० ए० तक के छात्रों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी।

'संस्कृत व्याकरण मंजूषा' मूलतः विद्यार्थियों के लिए है। अतः इसमें सरल एवं सुबोध पद्धति को ही अपनाया गया है। प्रत्येक प्रकरण के अन्त में अभ्यास-हेतु समुचित सामग्री प्रस्तुत की गई है। अनुवाद-पद्धति के प्रकरण से इस पुस्तिका की उपयोगिता में और भी वृद्धि हुई है।

मैं अपने सहयोगियों तथा उन विद्वानों के प्रति सदैव आभारी रहूँगा जिनसे मैंने इस दिशा में प्रेरणा प्राप्त की है। मुझे पूर्ण आशा है कि अपने प्रस्तुत रूप में यह पुस्तिका विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगी। फिर भी उपयोगी सुझावों का लेखक सदैव स्वागत करेगा।

यूनीवर्सिटी बायज़ हॉस्टिल,
श्रीनगर

लेखक

विषय-सूची

		पृष्ठ
प्रथम अध्याय		
सामान्य परिचय		१—४
द्वितीय अध्याय		
सन्धि-प्रकरण	...	५—१९
स्वर (अच्) सन्धि	...	५— ९
व्यञ्जन (हल्) सन्धि	...	९—१५
विसर्ग सन्धि	...	१५—१७
तृतीय अध्याय		
विभक्ति एवं कारक प्रकरण	...	२०—२८
चतुर्थ अध्याय		
शब्द-रूप-प्रकरण	...	२९—५३
अजन्त पुल्लिङ्ग	...	३०—३२
अजन्त स्त्रीलिङ्ग	...	३४—३८
अजन्त नपुंसकलिङ्ग	...	४०—४१
अविकृत हलन्त पुल्लिङ्ग	...	४४—४६
अविकृत हलन्त स्त्रीलिङ्ग	...	४७—४७
हलन्त विकृत नपुंसकलिङ्ग	...	४८—४८
हलन्त विकृत पुल्लिङ्ग	...	४८—५१
पञ्चम अध्याय		
सर्वनाम शब्द-प्रकरण	...	५४—६३
षष्ठ अध्याय		
संख्यावाचक शब्द-प्रकरण	...	६४—७१

सप्तम अध्याय

समास-प्रकरण ... ७२— ८०

अष्टम अध्याय

प्रत्यय-प्रकरण ... ८१— ९५

कृत् प्रत्यय ... ८१— ९१

तद्धित प्रत्यय ... ९१— ९४

नवम अध्याय

स्त्रीप्रत्यय-प्रकरण ... ९६— ९७

दशम अध्याय

धातु-प्रकरण ... ९८—१९६

भ्वादिगण ... ९९—१२४

अदादिगण ... १२४—१३८

जुहोत्यादिगण ... १३८—१४४

दिवादिगण ... १४४—१५६

स्वादिगण ... १५६—१६०

तुदादिगण ... १६०—१७१

रुधादिगण ... १७२—१७७

तनादिगण ... १७७—१८१

क्र्यादिगण ... १८१—१८६

चुरादिगण ... १८७—१९६

एकादश अध्याय

णिजन्त रूप ... १९७—२०१

द्वादश अध्याय

विशेषण ... २०२—२०७

त्रयोदश अध्याय

अव्यय ... २०८—२०९

चतुर्दश अध्याय

उपसर्ग ... २१०—२११

पञ्चदश अध्याय

वाच्य ... २१२—२१८

षोडश अध्याय

अनुवाद-पद्धति-प्रकरण ... २१९—२२१

अभ्यास ... २२१—२५०

जम्मू-कश्मीर यूनीवर्सिटी की मैट्रिकुलेशन
परीक्षा के प्रश्न-पत्र ... २५१—२६४

Jammu & Kashmir University Syllabus

SANSKRIT

Paper (a) No Grammar book is prescribed or suggested.

The following syllabus is prescribed :—

1. Ach, Hal and Visarga Sandhis .
2. Change of न into ण and of श into ष
3. Declensions of simple bases and Sarvanamas.
4. Prominent feminine affixes.
5. Prominent uses of cases.
6. Numerals.
7. Degrees of comparison.
8. Conjugation of the following roots in लट्, लङ्, लोट्, विधिलिङ् and लृट् :

(a) भ्वादि—भू (P) हस् (P) पठ् (P) रक्ष् (P) वद् (P) पच् (P) नम् (P) गम् (P) दृश् (P) सद् (P) स्था (P) स्मृ (P) पा (P) and जि (P) सेव् (A) लभ् (A) वृत् (A) वृध् (A) मुद् (A) सह् (A) and ईश् (A) याच् (U) नी (U) and हृ (U).

(b) अदादि—अद् (P), अस् (P), स्तु (P), ब्रू (P), रुद् (P), दुह् (P), जागृ (P), स्वप् (P), हन् (P), विद् (P), शास् (P), and इ (P) आस् (A) शी (A), and अधि+इ (A).

(c) जुहोत्यादि—हु (P), and भी (P) दा (U) and भृ (U).

(d) दिवादि—दिव् (P) नृत् (P) व्यध् (P) नम् (P) शम् (P) and भ्रम् (P) विद् (A) युध् (A) and जन् (A).

(e) स्वादि—सु (U) आप् (P) शक् (P).

(f) तुदादि—तुद् (P) इष् (P) स्पृश् (P) and प्रच्छ् (P) मृ (A) विद् (U) and मुच् (U).

(g) रुधादि—रुध् (U) भुज् (U) and युज् (U).

(h) तनादि—तत् (U) कृ (U).

(i) क्रयादि—क्री (U) ग्रह् (U) ज्ञा (U) and मुष् (P).

(j) चुरादि—चुर् (U) चिन्त् (U) तड् (U) कथ् (U) and भक्ष् (U).

N.B P Stands for परस्मैपद Roots.

A stands for आत्मनेपद Roots.

U Stands for उभयपद Roots.

9. Prominent Casual forms.
10. Voices—an elementary knowledge.
11. Compounds—an elementary knowledge only.
12. Kridantas—use of only the following affixes : Kta, ktva, ktavatu; tum, tavya, anya, yat, shatri and shanach.

Paper (b) Saral Sanskrit Sangrah, published by the University of Jammu and Kashmir, Srinagar.

प्रथम अध्याय

सामान्य परिचय

व्याकरण—वह शास्त्र है जिसमें किसी भाषा-विशेष के व्यवहारिक उपयोग को दृष्टि में रखकर उसके शब्दों के साधुत्व एवं असाधुत्व का ज्ञान होता है। वाक्य-पदीय (१/१४३) के अनुसार भी यही स्पष्ट होता है—

"साधुत्वज्ञानविषया सैषा व्याकरणस्मृतिः।"

शब्द—सार्थकता को ध्यान में रखते हुए विचार-विशेष के प्रतीक रूप वर्णात्मक ध्वनि-समूह को शब्द कहते हैं। अक्षरों से ही सार्थकता आती है। वाक्य में प्रयुक्त होने से पूर्व या विभक्ति-रहित रूप को पद कहते हैं, शब्द नहीं।

अक्षर—स्वर और व्यञ्जन के मेल से अक्षर का निर्माण होता है। एक स्वर भी स्वतन्त्र रूप से अक्षर कहलाता है।

वर्ण—वह मूल ध्वनि है जिसके खण्ड नहीं हो सकते। जैसे 'धन' में ध और न अक्षरों के खण्ड क्रमशः ध् और अ वर्ण तथा न् और अ वर्ण है लेकिन अब ध्, अ, न् और अ के आगे खण्ड नहीं हो सकते हैं। वर्ण इस प्रकार दो विभागों में बांटे जा सकते हैं—स्वर और व्यञ्जन।

स्वर

उन वर्णों को कहते हैं जिसके उच्चारण में किसी दूसरे वर्ण की सहायता न लेनी पड़े। इसके तीन प्रकार हैं—ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत।

ह्रस्व—जिन अक्षरों के उच्चारण में थोड़ा-सा समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। जैसे—अ, इ, उ, ऋ, लृ।

दीर्घ—जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से दुगुना समय लगे, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। जैसे—आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ।

प्लुत—जिनके उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगे, उन्हें प्लुत कहते हैं। जैसे—ओ३म् ।

व्यञ्जन

वे वर्ण हैं जिनके उच्चारण के लिए किसी न किसी स्वर की सहायता अनिवार्य है। मुख्य रूप से व्यञ्जन तीन प्रकार के हैं :

१. स्पर्श—कवर्ग क् ख् ग् घ् ङ्।
चवर्ग च् छ् ज् झ् ञ्।
टवर्ग ट् ठ् ड् ढ् ण्।
तवर्ग त् थ् द् ध् न्।
पवर्ग प् फ् ब् भ् म्।

२. अंतःस्थ— य् र् ल् व्

३. ऊष्म— श् ष् स् ह् विसर्ग (:)

इनके अतिरिक्त शुद्ध अनुस्वार (ं) भी व्यंजन के स्थान पर प्रयुक्त होता है। इस प्रकार कुल व्यञ्जन ३५ हुए और स्वर १४।

अवयवों के अनुसार वर्णों का वर्गीकरण

वर्णों का वर्गीकरण उच्चारणोपयोगी अवयवों के अनुसार ८ प्रकार का होता है :

१. काकल्य—काकल स्थान से निकलने वाले वर्णों को काकल्य कहते हैं। जैसे—ह् ।

२. कंठ्य—कण्ठ तालु का अन्तिम कोमल भाग है। अ, आ, क, ख्, ग्, घ् ङ् तथा विसर्ग (:) इसी स्थान से निकलने वाले वर्ण हैं।

३. मूर्द्धन्य—कठोर तालु के पिछले भाग और जिह्वाग्र से उच्चरित वर्ण को मूर्द्धन्य कहते हैं। जैसे—ऋ, ॠ, ट् ठ् ड् ढ् ण् र् और ष् ।

४. तालव्य—तालु स्थान से निकलने वाले वर्णों को तालव्य कहते हैं। जैसे—इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य तथा श ।

५. दन्त्य—ऊपर के दाँतों और जिह्वाग्र से उच्चारित होने वाले वर्णों को दन्त्य वर्ण कहते हैं। जैसे—लृ, त् थ् द् ध् न्, ल्, स।

६. ओष्ठ्य—ओष्ठ्य वर्णों का उच्चारण केवल ओठों से ही होता है। जैसे—उ, ऊ, प् फ् ब् भ् म्।

७. अनुनासिका—नाक के स्वर से निकलने वाले वर्णों को अनुनासिक कहते हैं। जैसे—ङ् ञ् ण् म् न्। यद्यपि ये वर्ण कंठ्य, मूर्द्धन्य,. तालव्य, ओष्ठ्य और दन्त्य में भी गिने गये है लेकिन इनका स्थान नासिका भी है। अनुस्वार (ं) भी इसी के अन्तर्गत माना जाता है।

८. कण्ठ-तालव्य—कण्ठ-ओष्ठ्य—दन्तोष्ठ्य—ए, ऐ का स्थान कण्ठ-तालु है अतः कण्ठतालव्य ; ओ, औ का स्थान कण्ठ-ओष्ठ है अतः कण्ठ-ओष्ठ्य ; व का स्थान दन्त-ओष्ठ है अतः व दन्तोष्ठ् हुआ।

प्रयत्न के अनुसार वर्गीकरण

उच्चारण करते समय जिह्वा की जो क्रिया होती है उसी को प्रयत्न कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है—आभ्यंतर तथा बाह्य।

आभ्यंतर प्रयत्न पाँच प्रकार का है—

१. स्पर्श—(क् से म् तक) वर्णों का।
२. अंतःस्थ—(य् र् ल् व्) वर्णों का।
३. विवृत—स्वरों का।
४. ईषद्विवृत—ऊष्म (श् ष् स् ह्, विसर्गः) वर्णों क
५. संवृत—ह्रस्व आकार का।

बाह्य प्रयत्न के मुख्य रूप से चार भेद हैं—

१. घोष—सभी स्वर, प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा और पाँचवाँ वर्ण, य् र् ल् व् और ह्, घोष वर्ण हैं।

२. अघोष—वर्गों के प्रथम एवं द्वितीय वर्ण, श् ष् स् और विसर्ग (:) अघोष हैं।

३. **अल्पप्राण**—सभी स्वर, वर्गों के पहले, तीसरे और पाँचवें वर्ण तथा य् र् ल् व् अल्पप्राण हैं।

४. **महाप्राण**—वर्गों के दूसरे, चौथे वर्ण तथा श् ष् स् ह् और विसर्ग महाप्राण हैं।

अभ्यास

१. व्याकरण की परिभाषा दीजिए।
२. शब्द तथा पद में क्या अन्तर है ?
३. वर्णों का वर्गीकरण कितने प्रकार का होता है ?
४. वर्णों का वर्गीकरण स्थान के अनुसार कीजिए।

द्वितीय अध्याय

सन्धि-प्रकरण

दो वर्णों (स्वर, व्यंजन अथवा विसर्ग) के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

सन्धि के भेद—सन्धि तीन प्रकार की होती है।

(१) स्वर-सन्धि, (२) व्यंजन-सन्धि, (३) विसर्ग-सन्धि।

१. स्वर-सन्धि (अच्)

जब स्वर और स्वर, स्वर और व्यंजन तथा स्वर एवं विसर्ग का मेल होता है, तब स्वर-सन्धि होती है।

स्वर सन्धि के भेद :

१—दीर्घसन्धि (अकः सवर्णे दीर्घः)

यदि अ, इ, उ, ऋ के आगे कोई समान स्वर आये तो वे दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं—अ + अ = आ, अ + आ = आ, आ + अ = आ, आ + आ = आ। इसी प्रकार इ, उ तथा ऋ के विषय में भी समझना चाहिए।

जैसे—

देवारिः = देव + अरिः = देव् + अ + अ + रिः = देव् + आ + रिः
= देवारिः → अ + अ = आ।

दैत्यारिः = दैत्य + अरिः = दैत्य + अ + अ + रिः = दैत्य् + आ + रिः
= दैत्यारिः → अ + अ + आ।

इसी प्रकार—

हिमालयः = हिम + आलयः — अ + आ = आ
देवालयः = देव + आलयः — अ + आ = आ
विद्यालयः = विद्या + आलयः — आ + आ = आ
विद्याभ्यासः = विद्या + अभ्यासः — आ + अ = आ

रवीन्द्र=रवि+इन्द्रः —इ+इ=ई
हरीशः=हरि+ईशः —इ+ई=ई
लक्ष्मीशः=लक्ष्मी+ईशः —ई+ई+ई
विष्णूदयः=विष्णु+उदयः —उ+उ+ऊ
लघूर्मि=लघु+ऊर्मि —उ+ऊ=ऊ
वधूत्सवः=वधू+उत्सवः —ऊ+उ=ऊ
पितृणम्=पितृ+ऋणम् —ऋ+ऋ=ऋ

२—यणादि सन्धि (इको यणचि)

यदि इ, उ, ऋ, लृ (ह्रस्व या दीर्घ) के आगे अ, इ, उ, ए, ऐ, ओ तथा औ में से कोई असमान स्वर आये तो उनके स्थान पर क्रमशः य्, व्, र्, ल् हो जाता है। यथा—

यद्यपि=यदि+अपि —इ+अ=य
इत्यादि=इति+आदि —इ+आ=या
मध्यवरिः=मधु+अरिः —उ+अ=व
स्वागतम्=सु+आगतम् —उ+आ=वा
गुर्वादेशः=गुरु+आदेशः —उ+आ=वा
अन्वेषणम्=अनु+एषणम् —उ+ए=वे
सुव्युपास्यः=सुधी+उपास्यः —ई+उ=यु
अप्येवम्=अपि+एवम् —इ+ए=ये
पित्रालयः=पितृ+आलयः —ऋ+आ=रा
पित्राज्ञा=पितृ+आज्ञा —ऋ+आ=रा
लाकृतिः=लृ+आकृतिः —लृ+आ=ला

३—गुणादि सन्धि (आदगुणः)

(क) यदि ह्रस्व या दीर्घ अ के आगे ह्रस्व या दीर्घ इ अथवा उ आये तो अ और इ मिलकर ए तथा अ और उ मिलाकर ओ हो जाते हैं। यथा—

देवेन्द्रः=देव+इन्द्रः —अ+इ =ए
उपेन्द्रः=उप+इन्द्रः —अ+इ =ए

महेन्द्रः = महा + इन्द्रः	—आ + इ = ए
सुरेशः = सुर = ईशः	—अ + ई + ए
रमेशः = रमा + ईशः	—आ + ई = ए
हितोपदेशः = हित + उपदेशः	—अ + उ = ओ
महोत्सवः = महा + उत्सवः	—आ + उ = ओ
गंगोदकम् = गंगा + उदकम्	—आ + उ = ओ
सूर्योदयः = सूर्य + उदयः	—अ + उ = ओ
फलोत्पत्तिः = फल + उत्पत्तिः	—अ + उ = ओ
महोदयः = महा + उदयः	—आ + उ = ओ

(ख) यदि ह्रस्व या दीर्घ अ के आगे ऋ या लृ आये तो अ + ऋ मिलक अर् तथा अ + लृ मिलकर अल् हो जाते हैं। यथा—

सप्तर्षयः = सप्त + ऋषयः	—अ + ऋ = अर्
महर्षिः = महा + ऋषिः	—आ + ऋ = अर्
कृष्णर्द्धिः = कृष्ण + ऋद्धिः	—अ + ऋ = अर्
तवल्कारः = तव + लृकारः	—अ + लृ = अल्

४—वृद्धि सन्धि (वृद्धिरेची)

यदि अ या आ के बाद ए या ऐ हो तो दोनों के स्थान पर ऐ; और ओ या औ हो तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है। यथा—

अद्यैव = अद्य + एव	—अ + ए = ए
कृष्णैकत्वम् = कृष्ण + एकत्वम्	—अ + ए = ऐ
जनैक्यम् = जन + ऐक्यम्	—अ + ऐ = ऐ
महैश्वर्यम् = महा + ऐश्वर्यम्	—आ + ऐ = ऐ
सदैव = सदा + एव	—आ + ए = ऐ
वनौषधिः = वन + औषधि	—अ + औ = औ
तवौदार्यम् = तव + औदार्यम्	—अ + औ = औ
कृष्णौत्कंठ्यम् = कृष्ण + औत्कंठ्नम्	—अ + औ = औ

गंगौघ:=गंगा+ओघ: —अ+ओ=औ

महौषधम्=महा+औषधम् —आ+औ=औ

५. अयादि संधि (एचोऽयवायाव:)

यदि ए, ओ, ऐ अथवा औ के आगे कोई स्वर आये तो उनके स्थान पर क्रमश: अय्, अव्, आय् और आव् हो जाते हैं। यथा—

नयनम्=ने+अनम् —ए+अ=अय्

नयति=ने+अति —ए+अ=अय्

जयति=जे+अति —ए+अ=अय्

नायक:=नै+अक: —ऐ+अ=आय्

भवनम्=भो+अनम् —ओ+अ=अव्

पावक:=पौ+अक: —औ+अ=आव्

पवित्रम्=पो+इत्रम् —ओ+इ=अव्

विष्णवे=विष्णो+ए —ओ+ए=अव्

६. पूर्वरूप सन्धि (एङ: पदान्तादति)

पद के अन्त में एकार-ओकार के बाद यदि अकार आवे तो उसका लोप हो जाता है, अर्थात् पूर्व स्वर का रूप हो जाता है। सन्धि दिखाने के लिये अ के स्थान पर (ऽ) चिह्न बना दिया जाता है। जैसे—

वनेऽपि=वने+अपि —ए+अ=ऽ

हरेऽव=हरे—अव —ए+अ=ऽ

कवेऽवेहि=कवे+अवेहि —ए+अ=ऽ

विष्णोऽव=विष्णो+अव —ओ+अ=ऽ

प्रभोऽनुगृहाण=प्रभो+अनुगृहाण —ओ+अ=ऽ

७. पररूप सन्धि (एङि: पररूपम्)

कुछ शब्दों में अ के बाद ए होने पर दोनों को मिलाकर क्रमश: ए-ओ ही रहते हैं, अर्थात् पर स्वर का रूप हो जाता है। यथा—

प्रेजते=प्र+एजते, बिम्ब+ओष्ठी=बिम्बोष्ठी

८—लोप: शाकल्यस्य

पदान्त य् और व् से पूर्व यदि अ या आ हो और आगे अकार के अतिरिक्त कोई स्वर हो, तो य् और व् का विकल्प से लोप हो जाता है। लोप होने के बाद सन्धि नहीं होती। यथा—

हरे+एहि=हर एहि या हरयेहि

विष्णो+इह=विष्ण इह=विष्ण इह या विष्णविह।

श्रियै+उद्यत:=श्रिया उद्यत: या श्रियायुद्यत:।

अपवाद

९—प्रकृतिभाव सन्धि (ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्)

(क) द्विवचनान्त पद के ई, ऊ, ए के बाद किसी स्वर के रहने पर परस्पर सन्धि नहीं होती। यथा—

कवी+इमौ=कवी इमौ।

साधू+अत्र=साधू अत्र।

लते+इमे=लते इमे।

(ख) प्लुत स्वर की सन्धि नहीं होती (प्लुत प्रगृह्या अचि नित्यम्)। यथा—राम ॐ आगच्छ।

(ग) अदस् शब्द के म् से परे ई ऊ की सन्धि नहीं होती (अदसोमात्)। यथा—

अमी अश्वा: ; अमू अर्भकौ।

व्यंजन संधि अर्थ

यदि किसी व्यञ्जन के आगे स्वर, व्यञ्जन अथवा विसर्ग आये तो उनके मिलने पर जो सन्धि होती है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।

व्यञ्जन सन्धि के भेद:

१—स्तो: श्चुनाश्चु:

यदि सकार और तवर्ग के आगे श् और चवर्ग आवे तो स् के स्थान पर श् और तवर्ग के स्थान पर चवर्ग हो जाता है। यथा—

रामस्+शेते=रामश्शेते —स् के स्थान पर श्

रामस्+चिनोति=रामश्चिनोति —स् के स्थान पर श्

सत्+चित्=सच्चित् —त् के स्थान पर च्

तद्+जन्य=तज्जन्य —द् के स्थान पर ज्

उत्+चारणम्=उच्चारणम् —त् के स्थान पर च्

तद्+जय:=तज्जय: —द् के स्थान पर ज्

२—ष्टुनाष्टु:

यदि साकार या तवर्ग के पहले या पीछे षकार या टवर्ग हो तो सकार को षकार और तवर्ग को क्रमश: टवर्ग हो जाता है। यथा—

रामस्+षष्ठ:=रामष्षष्ठ: (राम छटवां है) —स् के स्थान पर ष्

रामस्+टीकते=रामष्टीकते (राम जाता है) —स् के स्थान पर ष्

धनुस्+टङ्कार:=धनुष्टङ्कार —स् के स्थान पर ष्

तत्+टीका=तट्टीका —त् के स्थान पर ट्

इष्+त:=इष्ट: —त् के स्थान पर ट्

पेष्+ता=पेष्टा (पीसने वाला) —त् के स्थान पर ट्

भवत्+टीका=भवट्टीका —त् के स्थान पर ट्

३—तोर्लि

यदि तवर्ग के परे ल् हो तो तवर्ग को ल् हो जाता है, न को अनुनासिक ल्ँ हो जाता है। यथा—

उत्+लङ्घनम्=उल्लङ्घनम् —त् के स्थान पर ल्

उत्+लास:=उल्लास: — ,, ,, ,,

विद्युत्+लता=विद्युल्लता — ,, ,, ,,

भवान्+लिखित=भवाँल्लिखित —न् के स्थान पर अनुना० ल्

४—झलां जश् झशि

वर्ग के पहले, दूसरे, चौथे अक्षर तथा श् ष् स् ह् के आगे वर्ग का तीसरा या चौथा अक्षर आवे तो वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है। यथा—

आरम्+ध:=आरब्ध: —भ चौथे अक्षर के आगे ध चौथा अक्षर है, अत: म् का ब् हो गया।

शुध् + घः = शुद्धः	—ध चौथे अक्षर के आगे थ चौथा अक्षर है, अतः ध् को द् तीसरा अक्षर हो गया।
क्रुध् + धः = क्रुद्धः	— ,, ,, ,, ,, ,,
लभ् + धुम् = लब्धुम्	—म् चौथे अक्षर के आगे ध् चौथा अक्षर है, अतः भ् का ब् तीसरा अक्षर हो गया।

५—झलां जशोऽन्ते

वर्ग के पहले, दूसरे और चौथे अक्षर को पदान्त में वर्ग का तीसरा अक्षर कर दिया जाता है। यथा—

वाक् + ईशः = वागीशः	—क् पहले का ग् तीसरा कर दिया गया
षट् + अधिका = षडधिका	—ट् पहला वर्ण ड् तीसरे वर्ण में बदल गया
जगत् + ईशः = जगदीशः	—त् पहला वर्ण द् ,, ,,
अप् + जम् = अब्जम्	—प् पहला वर्ण ब् ,, ,, ,,
अच् + अन्तः = अजन्तः	—च् ,, ,, ज् ,, ,, ,,
सत् + धर्मः = सद्धर्मः	—त् ,, ,, द् ,, ,, ,,

६—खरि च

यदि वर्ग के दूसरे, तीसरे और चौथे अक्षर के आगे वर्ग का पहला, दूसरा अक्षर या श् ष् स् हों तो वर्ग का पहला अक्षर हो जाता है। यथा—

उद् + थानम् = उत्थानम्	—द् तीसरे वर्ण के आगे थ् दूसरा वर्ण आने से त् पहला वर्ण हो गया।
शरद् + कालः = शरत्कालः	—द् तीसरे वर्ण के आगे क् पहला वर्ण आने से त् पहला वर्ण हो गया।
हृद् + सु = हृत्सु	—द् तीसरे वर्ण के आगे स् आने से त् पहला वर्ण हो गया।
युध् + सु = युत्सु	—ध् चौथे वर्ण के आगे स् होने से ध् का त् पहला वर्ण हो गया।

७—झयो होऽन्यतरस्याम्

वर्ग के प्रथम चार वर्णों के परे ह् को विकल्प से उस वर्ग का **चौथा अक्षर** कर देते हैं। यथा—

वाक्+हरि:=वाग्घरि:	—क् का चौथा घ् हुआ।
उत्+हरणम्=उद्धरणम्	—त् का चौथा ध् हुआ।
दिक्+हस्ती=दिग्घस्ती	—क् का चौथा घ् हुआ।
तत्+हितम्=तद्धितम्	—त् का चौथा ध् हुआ।

८—शश्छोऽटि

यदि पदान्त में वर्ग के प्रथम चार वर्णों के परे श् हो और श् के पश्चात् कोई स्वर या ह् य् र् ल् व् में से कोई अक्षर हो तो श को छ कर दिया जाता है। यथा—

तत्+शापोदकम्=तच्छापोदकम्	—श् का छ् हुआ।
उत्+श्वास:=उच्छ्वास:	—,, ,,
एतत्+श्रुत्वा=एतच्छ्रुत्वा	—,, ,,
हृत्+शोक:=हृच्छोक:	—,, ,,

९—छे च, पदान्ताद्वा

छ के पहले कोई ह्रस्व स्वर हो तो छ् से पहले च् लगाया जाता है। पर यदि छ् से पहले पदान्त में दीर्घ स्वर हो तो छ् से पहले च् विकल्प से लगाया जाता है। यथा—

वृक्ष+छाया =वृक्षच्छाया या वृक्षछाया

लक्ष्मी+छाया =लक्ष्मीच्छाया या लक्ष्मी छाया

१०—परोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा

पदान्त वर्ण (क् से म् तक) तथा य् व् ल् के परे यदि कोई **अनुनासिक** अक्षर हो तो विकल्प से सवर्ण अनुनासिक अक्षर हो जाता है। यथा—

दिक्+नग: =दिग्नाग: या दिङ्नाग:

षट्+मासा: =षड्मासा: या षण्मासा:

जगत्+नाथः	=जगन्नाथः या जगद्नाथः
वाक्+मयम्	=वाङ्मयम्
अप्+मयम्	=अम्मयम्

११—मोऽनुस्वारः

यदि पद के अन्त में म् के आगे कोई व्यञ्जन हो तो म् के स्थान पर अनुस्वार हो जाता है। यथा—

हरिम्+वन्दे	=हरिं वन्दे
मातरम्+वन्दे	=मातरं वन्दे

१२—नश्चापदान्तस्य झलि

यदि अपदान्त न् और म् के परे वर्गों के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे वर्ण तथा श् ष् स् ह् आयें तो अनुस्वार हो जाता है। यथा—

यशान्+सि	=यशांसि
आक्रम्+स्यते	=आक्रंस्यते

१३—अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः

यदि अपदान्त अनुस्वार से परे किसी वर्ग का कोई वर्ण हो या य् ल् व् में से कोई वर्ण हो तो अनुस्वार को उस अक्षर का सवर्ण अनुनासिक हो जाता है और यदि अनुस्वार पदान्त हो तो अनुनासिक विकल्प से होता है। यथा—

अपदान्त—अन्+कितः	=अंकितः
कुन्+ठितः	=कुण्ठितः
शाम्+तः	=शान्तः
पदान्त—त्वम्+करोषि	=त्वङ्करोषि या त्वं करोषि
फलम्+चिनोति	=फलञ्चिनोति या फलं चिनोति
पूर्वम्+तावत्	=पूर्वन्तावत् या पूर्वं तावत्
यम्+लोकम्	=यँल्लोकम् या यं लोकम्
पुम्+लिङ्गाः	=पुँल्लिङ्गाः या पुंलिङ्गाः
सम्+वत्सरः	=संव्वत्सरः या संवत्सरः

१४—नश्छव्यप्रशान्

यदि पदान्त न् से आगे च् छ् ट् ठ्, त् थ् में से कोई वर्ण हो और उनके बाद कोई स्वर या ह य् र् ल् व् या किसी वर्ग का पांचवां वर्ण हो, तो न् को अनुस्वार और स् हो जाता है। यथा—

पूर्वन्+तावत् = पूर्वंस्तावत्
तान्+ते = तांस्ते
कस्मिन्+चित् = कंस्मिश्चित्
अस्मिन्+तडागे = अंस्मिस्तडागे

१५—ङमो ह्रस्वादचिङ् मुण्नित्यम्

यदि पदान्त ङ् ण् न् के पहले ह्रस्व हो और आगे भी कोई स्वर हो, तो ङ् ण् न् का द्वित्व हो जाता है। यथा—

विद्वन्+इयम् = विद्वन्नियम्
कुर्वन्+एवेह = कुर्वन्नेवेह
एकस्मिन्+अहनि = एकस्मिन्नहनि
सुगण्+ईशः = सुगण्णीशः
प्रत्यङ्+आत्मा = प्रत्यङ्ङात्मा

१६—ससजुषोरुः

पदान्त स् को र् हो जाता है। यथा—

रात्रिस्+गमिष्यति = रात्रिर्गमिष्यति

१७—खरवसानयोर्विसर्जनीयः

यदि पदान्त र् से आगे वर्गों के पहले, दूसरे वर्ण या श् ष् स् में से कोई वर्ण हो या कोई वर्ण न हो, तो र् का विसर्ग हो जाता है। यथा—

वालकस्+कथयति = वालकः कथयति।
हरिस् = हरिः

१८—रोरि ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः

यदि र् से आगे र् हो तो पहले र् का लोप हो जाता है और लुप्त र् से पूर्व

दीर्घ स्वर हो जाता है। यथा—

निर +रोगः =नीरोगः
निर्+रसम् =नीरसम्
निर्+रवम् =नीरवम्

१९—अतो रोरप्लुतादप्लुते हशि च

यदि पदान्त र् से पूर्व ह्रस्व आकार हो और बाद में अकार या ह् य् र् ल् व् या वर्णों के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्णों में से कोई हो, तो र् का उ हो जाता है। यथा—

नरन्+याति=नरर्+याति=नर+उ+याति=नरो याति
मनन्+रथः=मनर्+रथः =मन+उ+रथः=मनोरथः

२०—भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि

यदि पदान्त र् से पहले ह्रस्व अ हो और बाद में अ को छोड़कर कोई स्वर हो, या र् से पहले आ हो और पीछे कोई स्वर अथवा ह् य् र् ल् व् या वर्गों के तीसरे, चौथे, पाँचवे वर्णों में से कोई वर्ण हो, तो र् के स्थान पर य् होता है और उसमें य का लोप होता है। यथा—

दमनकस्+आह=दमनकर्+आप=दमनकय्+आह=दमनक आह
देवाम्+इह =देवार्+इह =देवाय्+इह =देवा इह
युधिष्ठिरस्+उवाच=युधिष्ठिरर्+उवाच=युधिष्ठिरय्+उवाच
=युधिष्ठिर उवाच।

विसर्ग सन्धि

विसर्ग और स्वर, विसर्ग और व्यञ्जन अथवा विसर्ग और विसर्ग के मेल को विसर्ग सन्धि कहते हैं। विसर्ग+स्वर, विसर्ग+व्यञ्जन, विसर्ग+विसर्ग =विसर्ग सन्धि।

विसर्ग संधि के भेद :

१—विसर्जनीयस्य सः

यदि विसर्ग के आगे च् छ्, ट् ठ् और त् थ् आवें तो विसर्ग के स्थान पर

स् हो जाता है। यथा—

राम:+तथा =रामस्तथा

विष्णु:+त्राता =विष्णुस्त्राता

२—वा शरि

श् ष् स् यदि विसर्ग के आगे हों तो विसर्ग का श् ष् स् विकल्प से होता है। यथा—

राम:+स्थाता=रामस्+स्थाता=रामस्स्थाता या राम: स्थाता

हरि:+शेते =हरिश्+शेते =हरिश्शेते या हरि: शेते

मनम्+षष्ठम् =मन: षष्ठम् या मनष्षष्ठम्

३—इण: ष:

यदि प्रत्यय सम्बन्धी विसर्ग से पहले ह्रस्व इ या उ हो और आगे कवर्ग या पवर्ग के वर्ण हों तो विसर्ग का ष् हो जाता है। यथा—

आवि:+कृतम् =आविष्कृतम्

चतु:+पथम् =चतुष्पथम्

४—स सजुषो रु:, अतो रोरलुप्तादप्लुते, हशि च

यदि विसर्ग से पूर्व अ अ हो और बाद में अ या वर्गों के तीसरे, चौथे और पाँचवें वर्ण हों तथा य् र् ल् व् ह् हों तो विसर्ग के स्थान पर उ हो जाता है। यथा—

राम:+धावति=रामउ+धावति=रामो धावति

नृप: वदति =नृपउ+वदति —नृपो वदति

५—एतत्तदो: सुलोपोऽकोरनञ् समासे हलि

यदि विसर्ग के आगे अ से भिन्न कोई वर्ण हो तो स: और एष: के विसर्ग का लोप हो जाता है। यथा—

स:+देव: =स देव:

एष:+शश: =एष शश:

स:+ऋषि: =स ऋषि:

६—भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि

यदि विसर्ग से पूर्व अ हो और आगे अ के अतिरिक्त कोई स्वर हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है। यथा—

कः इच्छति =क इच्छति

नृपः उवाच =नृप उवाच

अतः एव =अत एव

नरः इव =नर इव

अभ्यास

१. सन्धि की परिभाषा कीजिए। उसके प्रमुख भेदों को सोदाहरण लिखिये।

२. नियम-निर्देश करते हुए निम्नलिखित युग्मों की सन्धि कीजिए :

कः+अपि, वने+अत्र, इति+उक्त्वा, भ्रमन्+च, तस्मिन्+एव, तत्+श्रुत्वा, कवी+इमौ, अति+आचारः, रमा+ईशः, ते+अपि, वाक्+मयम् मुने+एहि, दिक्+अन्तः, पितृ+आदेशः, सखे+इह, अभि+उदयः, ककुभ+सु, करि+स्यति, स्मरन्+उवाच, नरः+एति, कृतः+लोभः, तथा+एव, प्रभो+अत्र, गुरू+आगतौ, ते+ऊचुः, मुनि+अयम्, सम्यक्+उक्तम्, साधुः+तरति, केन+इदानीम् गुरो+अग्रतः, न+एषा, सः+चकार, अन्यन्+चरसि, उक्तः+एवम्, त्वम्+कुरु, ग्रामात्+गच्छति, नील+उत्पलम्, रामः+अगच्छत, प्रातः+आगच्छत्, वाचः+पतिः, गच्छन्+एवम्, मुनिः+वदति, गृहम्+गच्छ।

३. नीचे लिखे शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा नियम भी समझाइये—

जलौघः, प्रत्यूषः, दिग्गजः, कुर्वन्नपि, जगन्नायकः, राज्ञो वदति, साधुस्तरति, नीरोगः, उभयोरपि, सरस्तीरे, तपोवनम्, असावागत्य, महदपि, दिग्विभागे, महर्षिः, हितोपदेशः, स्वागतम्, जगन्नाथः, कश्चित्, तेनैव, प्रत्युवाच, प्रसन्नोऽस्मि, पुरान्निर्गतः, एकैकम्, अन्वेषणम, भवानि,

गवे, दिगन्तः, रामायणम्, नरोऽयम, पुनरपि, विधूदयः, तवोपालम्भः, स्वागतम्, देव्यागमनम्, देवर्षयः, प्रातरेव, तपस्तेपे, ऋषिर्नारदः, बालोऽपि, इत्यभिधाय, तन्मित्रम् तावूचतुः, विपज्जालम् दिग्भागः, कदापि, महोषधिः, महद्धनुः, प्राङ्मुखः, महांल्लाभः, तच्छृणोति, विध् राजते, नद्यास्तीरे, अत एव, तच्छरीरम्, निष्कलंकः, तांस्ते ।

४. नीचे लिखे वाक्यों को सन्धि सहित लिखिये—

(क) पितः ! रक्ष माम् शरणागतम् ।

(ख) अस्मिन् मधुवने उपविश ।

(ग) एषः नरः अद्य यास्यति ।

(घ) महत् अपि परदुःखं शीतलं सम्यक् आहुः ।

५. नीचे लिखे शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए :—

अप्येवम्, नायकः, अजन्ताः, यशांसि, दुर्नीतिः, षष्ठः, गिरीन्द्र, महैश्वर्यम्, वसन्ततुः, वैश्यालयः, सदैव, तच्छ्रुत्वा, वागीशः, नरोगच्छति, स्वागतम्, गणेशः, रामोऽथयत्, युवावस्था, प्रत्युवाच, भानूदयः, सच्चित, बालोऽवदत्, तन्मयम्, यदीदम्, रामश्चकार, विद्वांस्तत्र, देवालयः, महद्भयम्, तदैव, देवर्षिः, सिन्धावपि, तल्लाभः, कविश्चकार, कुर्वंस्तदा, वधूपरि, शिलोच्चये, नवोढ़ा, ईश्वरेच्छा, इतीव, रात्रावागतः, तट्टीका, नीरसः ।

६. नीचे लिखे युग्मों की सन्धि कीजिए :—

अद्य+एव, पितृ+आज्ञा, इष्+तः, क्रुध्+धः, कस्मिन्+चित् महा+ऋषिः, निः+फलम्, पौ+अनः, कवि+इन्द्रः, सूर्य+उदयः, जगत्+नाथः, निः+कपटः, नरः+अवदत्, दैत्य+अरिः, यदि+अपि, रामः+चितोति, वाक्+ईशः, शिव+वन्द्यः, तद्+शिव, गंगा+उदकम्, यदा+एव, अर्जुनः+उवाच, तद्+हितम्, हसन्+अपि, यती+इमौ ।

७. नीचे लिखे वाक्यों को सन्धि रूपों के विच्छेद के साथ लिखो :—

१. रामो धावति राज मार्गं ।
२. नृपो वदति अलोकं ।
३. स देवः भाषते ।
४. एष शशः तृणं खादति ।
५. स ऋषिः विद्यालयं प्रविशति ।
६. क इच्छति फलम् ?
७. अत एव सः जयति ।
८. नृप उवाच—"रात्रिर्गमिष्यति ।"

८. सन्धि रूपों का प्रयोग करते हुए नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिये :—

१. हिमालय एक पर्वत है ।
२. वे देवालय में पूजा करते हैं ।
३. विद्यालय दूर है ।
४. आज वधू का उत्सव है ।
५. यह गुरू का आदेश है ।
६. यह पिता की आज्ञा है ।
७. गंगा का उदक पवित्र है ।
८. सूर्य का उदय है ।

तृतीय अध्याय

विभक्ति एवं कारक-प्रकरण

क्रिया के उत्पन्न करने वाले को कारक कहते हैं। कारकों की संख्या ६ है। सम्बन्ध को कारक नहीं माना जाता, क्योंकि उसका क्रिया पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। विभक्तियाँ सात हैं :

१.	प्रथमा	विभक्ति अथवा	कर्त्ता कारक
२.	द्वितीया	,, ,,	कर्म कारक
३.	तृतीया	,, ,,	करण ,,
४.	चतुर्थी	,, ,,	सम्प्रदान ,,
५.	पंचमी	,, ,,	अपादान ,,
६.	षष्ठी	,, ,,	सम्बन्ध ,,
७.	सप्तमी	,, ,,	अधिकरण ,,

कर्त्ता

क्रिया के करने वाले को कर्त्ता कहते हैं। इसमें प्रथमा विभक्ति होती है। इसका चिन्ह 'ने' है। जैसे—

१. लड़कों ने पुस्तक को पढ़ा।
बालकाः पुस्तकानि अपठन्।

२. राम गांव को जाता है।
रामः ग्रामं गच्छति।

३. अध्यापक शिष्य को मारता है।
अध्यापकः शिष्यं ताडयति।

४. गोपाल चन्द्रमा को देखता है।
गोपालः चन्द्रं पश्यति।

पूर्वोक्त वाक्यों में क्रमश: बालका:, राम:, अध्यापक:, और गोपाल:, प्रथमा विभक्ति में हैं ।

कर्म

कर्त्ता की क्रिया का जो विषय होता है उसे कर्म कारक कहते हैं । इसका चिन्ह 'को' है । इसमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है । जैसे—

१. राम फूलों (को) देखता है ।
   राम: पुष्पं पश्यति ।
२. वह बालक (को) मारता है ।
   स बालकं ताडयति ।
३. सीता पत्र (को) लिखती है ।
   सीता पत्रं लिखति ।

ऊपर के वाक्यों में पुष्पं, बालकं और पत्रम् में द्वितीया विभक्ति है ।

करण

क्रिया की सिद्धि के साधन को करण कारक कहते हैं । इसका चिन्ह 'से' या 'द्वारा' है । इसमें तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है । जैसे—

१. राम कलम से लिखता है ।
   राम: लेखिन्या लिखती ।
२. रमेश हाथ से खाता है ।
   रमेश: हस्तेन खादति ।
३. वह लकड़ी से मारता है ।
   स यष्ट्या ताडयति ।

ऊपर लेखिन्या, हस्तेन और यष्ट्या में तृतीया विभक्ति है ।

सम्प्रदान

जिसे कुछ दिया जाय या जिसके लिये कार्य किया जाय, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं । इसका चिन्ह 'के लिए' या 'को' है, इसमें चतुर्थी विभक्ति

का प्रयोग होता है। जैसे

१. उन्नति के लिए पढ़ो।
उन्नतये पठ!

२. वह बालक को लड्डू देता है।
स बालकाय मोदकं ददाति।

३. मुझे जल दो।
मह्यं जलं देहि।

ऊपर उन्नतये, बालकाय और मह्यम् में चतुर्थी विभक्ति है।

अपादान

जिससे किसी वस्तु का अलग होना मालूम हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। डर, घृणा और लज्जा के भाव के साथ भी अपादान का प्रयोग होता है। इसका चिन्ह 'से' है। इसमें पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे—

१. मैं घर से जाता हूँ।
अहं गृहात् गच्छामि।

२. वृक्ष से फल गिरता है।
वृक्षात फलं पतति।

३. वह चोर से डरता है।
स चौरात् बिभेति।

४. पाप से घृणा करता है।
पापात् जुगुप्सते।

षष्ठी

दो शब्दों में परस्पर सम्बन्ध बताने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। इसका चिन्ह 'का' के, की' या 'रा, रे, री' है। जैसे—

१. राम की पुस्तक।
रामस्य पुस्तकम्।

२ कमल का फूल।
कमलस्य पुष्पम्।

अधिकरण

क्रिया के आधार को अधिकरण कारक कहते हैं। इसका चिन्ह 'में, पै, पर' हैं। इसमें सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे—

१. आकाश में बादल गरजता है।
   आकाशे मेघः गर्जति।
२. गाँव में मनुष्य रहते हैं।
   ग्रामे मनुष्याः वसन्ति।
३. वृक्ष पर फल हैं।
   वृक्षे फलानि सन्ति।

विशेष—कुछ शब्दों व धातुओं के लिए विशेष कारकों का प्रयोग भी होता है :

द्वितीया या कर्मकारक—

(क) निम्नलिखित शब्दों के योग में कर्म कारक अर्थात द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है—

अन्तरेण, अन्तरा, अभितः, परितः, उभयतः, सर्वतः, उपर्युपरि, अध्यधि, अबोधः, धिक्, विना, निकषा, प्रति, उप, अधि, अनु, समया, ऋते; यथा—

१. राममन्तरेण (अन्तरा) भक्तस्य न मुक्तिः।
   राम के विना भक्त को मोक्ष नहीं है।
२. नगरमभितः (परितः) उपवनं वर्तते।
   नगर के चारों तरफ उपवन हैं।
३. ग्रामं प्रति रामः गच्छति।
   राम गाँव की तरफ जाता है।
४. विद्यालयं निकषा नदी वर्तते।
   विद्यालय के पास नदी है।
५. सिंहः मृगमनुधावति।
   सिंह मृग के पीछे दौड़ता है।

(६) मन्दिरे आसनमध्यास्ते।
मन्दिर में आसन पर बैठता है।

(७) ज्ञानं बिना (ऋते) न मुक्तिः।
ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं।

(८) धिक पापिनं पुत्रम् !
पापी पुत्र को धिक्कार है !

(ख) निम्नलिखित धातुएँ द्विकर्मक हैं। इनके दोनों कर्मों में द्वितीया का प्रयोग होता है—

दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, चि, ब्रू, शास्, प्रच्छ, जि, मथ्, मुष्, नी, हृ, कृष्, वह्।

(१)	गां दोग्धि पयः	गाय का दूध दुहता है।
(२)	बलिं याचते वसुधाम्	बलि से भूमि माँगता है।
(३)	तण्डुलान् ओदनं पचति	चावलों का भात पकाता है।
(४)	चौरं शतं दण्डयति	चोर को सौ रुपये दण्ड देता है।
(५)	गृहं बालकं रुणद्धि	बालक को घर में रोकता है।
(६)	लतां पुष्पाणि चिनोति	लता से फूल चुनता है।
(७)	बालकं कथां ब्रूते	बालक से कहानी कहता है।
(८)	शिष्यं धर्मं शास्ति	शिष्य को धर्म की शिक्षा देता है।
(९)	गुरुं धर्मं पृच्छति	गुरु से धर्म पूछता है।
(१०)	देवदत्तं शतं जयति	देवदत्त से सौ रुपये जीतता है।
(११)	नवनीतं दधि मथ्नाति	मक्खन के लिए दही मथता है।
(१२)	देवदत्तं शतं मुष्णाति	देवदत्त के सौ रुपये चुराता है।
(१३)	ग्रामं गां नयति	गौ को गाँव ले जाता है।
(१४)	ग्रामं गां हरति	गाँव से गाय को हरता है।
(१५)	अजां गृहम् वहति	बकरी को घर ले जाता है।

तृतीय या करण कारक—

१. निम्नलिखित शब्दों के योग में तृतीय विभक्ति का प्रयोग होता है : अलम्, कृतम्, सह, सकम्, समम्, सार्धम् ।

(१) अलं विवादेन	झगड़ा बस करो !
(२) कृतमेभिः विलपैः	इन विलापों को छोड़ !
(३) रामेण सहयाति सीता	राम के साथ सीता जाती है ।
(४) शशिना साकं (समं, सर्धम्) कौमुदी	चाँद के साथ चाँदनी ।

२. जिस विकृत अंग से देही का विकार मालूम हो, तद्वाचक शब्दों के साथ तृतीया विभक्ति आती है :

(१) अक्ष्णा काणः	आँख से काना ।
(२) पृष्ठेन कुब्जः	पीठ से कुबड़ा ।

चतुर्थी सम्प्रदान कारक—

निम्नलिखित शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है :

रुच्, क्रुध्, द्रुह्, स्पृह् और ईर्ष्या अर्थ की धतुओं के योग से तथा नमः, स्वस्ति, स्वाहा, अलम् (समर्थ) शब्दों के योग में चतुर्थी आती है :

(१) मह्यं ओदनं रोचते	मुझे चावल का भात अच्छा लगता है।
(२) गुरुः शिष्याय क्रुध्यति	गुरु शिष्य पर क्रुद्ध होता है ।
(३) रावणः रामाय द्रुह्यति	रावण राम से द्रोह करता है ।
(४) स फलाय स्पृहयति	वह फल की इच्छा करता है।
(५) नमः शिवाय	शिवजी को नमस्कार !
(६) मनुष्येभ्यः स्वस्ति अस्तु	मनुष्यों का कल्याण हो !
(७) अर्जुनः दुःशासनाय अलम्	अर्जुन दुःशासन के लिए समर्थ है ।
(८) अग्नये स्वाहा	आग को समर्पित है ।

पंचमी विभक्ति या अपादान कारक—

(क) निम्नलिखित शब्दों के योग में पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है—

प्रभृति, आरभ्य, बहिः, अनन्तरम्, ऊर्ध्वम्, पृथक्, विना, ऋते आदि।

(१) जन्मनः प्रभृति (आरभ्य) मया मांसं न भुक्तम् — जन्म से मैंने मांस नहीं खाया।

(२) नगरात् बहिः अस्माकं गृहं — नगर से बाहर हमारा घर है।

(३) अध्ययनादनन्तरम् स गच्छति — अध्ययन के बाद वह जाता है।

(४) ज्ञानात् विना (ऋते) न मुक्तिः — ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं।

(ख) दो वस्तुओं की तुलना में कम या अधिक बताने में भी पंचमी का प्रयोग होता है :

(१) रामात् कृष्ण प्रियतरः — राम से कृष्ण अधिक प्यारे हैं।

(२) नगरात् ग्रामः रुचिकरः — नगर से ग्राम रुचिकर है।

षष्ठी—

दूर, समीप और तुल्य शब्दों के योग में पंचमी और षष्ठी दोनों का प्रयोग होता है :

(१) नगरस्य (नगरात्) दूरं गृहम् — नगर से घर दूर है।

(२) ग्रामस्य (ग्रामात्) समीपं विद्यालयम — गाँव से विद्यालय पास है।

(३) चन्द्रस्य तुल्यं मुखम् — चाँद जैसा मुख।

सप्तमी या अधिकरण कारक—

निर्धारण या चुनाव के अर्थ में सप्तमी या षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। स्निह्, अनुरञ्ज्, रम् धातुओं के साथ सप्तमी का प्रयोग होता है :

(१) नृषु (नृणां) ब्राह्मणः श्रेष्ठः — मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है।

(२) गोषु (गवां) कृष्णा बहुक्षीरा — गायों में काली गाय बहुत दूध देती है।

(३) बालेऽस्मिन् स्निह्यति मे मनः — इस बालक में मेरा मन स्नेह रखता है।

(४) राजनि प्रजा अनुरज्यन्ति — राजा में प्रजा प्रेम करती है ।

(५) ब्रह्मणि रमते मनः — ब्रह्म में मन रमण करता है ।

अभ्यास

१. नमः स्वस्ति, अध्यधि, प्रति, अलम्, वहिः, स्वाहा शब्दों के योग में कौन-कौन सी विभक्तियाँ आयेंगीं ?

२. नीचे के वाक्यों में रेखांकित विभक्तियों को स्पष्ट कीजिए—

(क) मेघेन सह तडित् प्रलीयते ।

(ख) न विना परवादेन रमते दुर्जनो मनः ।

(ग) उभयतः नद्यां उपवनं वर्तते ।

३. नीचे लिखे वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

(१) शिशुः कक्षं विशति ।

(२) उद्याने खगाः कूजन्ति ।

(३) रामः वनं गच्छति ।

(४) सिंहो गुहाम् अविशत् ।

(५) जनाः ईश्वरं स्मरन्ति ।

(६) सुवर्णकाराः भूषणानि रचयन्ति

(७) बालकाः कन्दुकेन क्रीडन्ति ।

(८) नटः पादाभ्यां नृत्यति ।

(९) रामः दण्डेन चौरम् ताडयति ।

(१०) अश्वः वेगेन धावति ।

(११) रामः लक्ष्मणः सीता च वनम् गच्छन्ति ।

(१२) मोहनः अध्ययनाय काशीं गच्छति ।

(१३) शिक्षानिर्देशको बालकेभ्यः पारितोषिकम् अदात् ।

(१४) मह्यं मोदकं रोचते ।

(१५) श्यामः देवदत्तं रूप्यकं धारयति ।

(१६) रावणः कस्मात् ईर्ष्यति ।
(१७) सः मरणाद् अपि न विभेति ।
(१८) राजा गृहाद् वनं याति ।
(१९) अहं अध्यापकाद गणितं पठामि ।
(२०) राजा नगरात् रथेन आगच्छति ।

४. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

(१) गंगा हिमालय से निकलती है ।
(२) अशोक पाटलिपुत्र से रथ से आ रहे हैं ।
(३) मनुष्यों में नाई चतुर होता है ।
(४) पेड़ से पत्ते गिर रहे हैं ।
(५) गुरू जी को नमस्कार करता हूँ ।
(६) मैं नदी के किनारे जाता हूँ ।
(७) राम दशरथ के पुत्र थे ।
(८) तुम स्नेह के पात्र हो ।
(९) रावण ने जल्दी से लक्ष्मण पर गदा मारी ।
(१०) तिलों में तेल होता है और जगत् में ईश्वर होता है ।
(११) दण्डकवन में राम पर्णशाल में रहते हैं ।
(१२) छात्रों में रमेश प्रवीण है ।
(१३) मेरा नौकर पीठ से कुबड़ा है ।
(१४) तुम आँख से काने हो ।
(१५) मनुष्यों का कल्याण हो !
(१६) गाँव से विद्यालय समीप नहीं है ।
(१७) गायों में भूरी गाय सीधी है ।
(१८) सीता का मुख चन्द्रमा के सदृश है ।
(१९) वह फल की इच्छा करता है ।
(२०) ज्ञान के विना मनुष्य की मुक्ति नहीं है ।

चतुर्थ अध्याय

शब्द-रूप-प्रकरण

शब्द अनेक प्रकार के होते हैं। स्वरान्त और व्यञ्जनान्त अनेक शब्द होते हैं। जिस शब्द के अन्त में जो स्वर होता है, उसी के नाम पर उस शब्द को पुकारा जाता है। जैसे शब्द के अन्त में यदि अ है तो अकारांत, यदि इ है तो इकारांत, इत्यादि। ऐसे स्वरांत शब्दों को अजन्त शब्द कहते हैं। व्यंजनांत शब्द हलन्त कहलाते हैं। भिन्न-भिन्न विभक्तियों और वचनों में इनके रूप परिवर्तित होते रहते हैं। इनके रूप-परिवर्तन में, निम्नलिखित विभक्ति-प्रत्यय जुड़ जाते हैं—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा और संबोधन	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट्	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पंचमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

ये प्रत्यय सु से प्रारम्भ होकर प् पर समाप्त होते हैं इसलिए इन्हें सुप् कहते हैं। इसी प्रकार क्रिया में लगने वाले प्रत्ययों को तिङ् कहते हैं। संस्कृत में तीन लिंग होते हैं—पुंल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग। इनके भेद से शब्दों के अनेक भेद हो जाते हैं। जैसे—अकारान्त पुंल्लिग, अकारांत स्त्रीलिंग, अकारांत नपुंसकलिंग, इकारांत पुंल्लिग, इकारांत स्त्रीलिंग, इत्यादि।

अजन्त पुल्लिग संज्ञा शब्द

अकारान्त पुल्लिग 'राम' शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	,,	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	,,	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	,,	,,
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	,,	रामेषु
सम्बोधन	हे राम !	हे रामौ !	हे रामः !

इस प्रकार निम्नलिखित अकारान्त पुल्लिग शब्द 'राम' के रूप के समान ही बनेंगे—

बाल, बालक, गज, अश्व, नर, जन, वानर, कर, कुक्कुर, व्याघ्र, माजरि, सर्प, शब्द बसन्त ग्रीष्म, गन्ध, ग्राम, छात्र, सिंह, नख, काल, विडाल, मूषक, कंठ, केश, अनिल, वायस, शुक, पिक, मयूर, हंस, बक, कपोत, हस्त, पाद, दन्त, अग्रज, जनक, अनुज, मेघ, सूर्य, चन्द्र, अनल, मृग, विहंगम, सागर, पर्वत, पाषाण, ईश्वर, देव, चोर, शिक्षक, अर्थ, पुत्र इत्यादि ।

यहां इतना ध्यान रहे कि जिन पदों में 'ऋ, र् या ष' हो, तो न को ण हो जाता है । जैसे 'राम' में र् है अतः तृतीया में रामेण बना तथा षष्ठी में रामाणाम् रूप हुआ । लेकिन 'गज' शब्द में र् नहीं है अतः तृतीय में गजेन और षष्ठी में गजानाम् बनेंगे । इसी प्रकार अन्य रूपों को समझना चाहिए ।

इकारान्त पुल्लिग 'हरि' शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	,,	हरीन्

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	,,	हरिभ्यः
पंचमी	हरेः	,,	,,
षष्ठी	,,	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	,,	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे !	हे हरी !	हे हरयः !

इसी प्रकार मुनि, ऋषि, कवि, कपि, पवि, गिरि, रवि, असि, यति, नृपति, पाणि, अतिथि, भूपति, विधि, मणि, अग्नि, अरि, अलि, आदि इकारान्त शब्दों के रूप बनेंगे।

उकारान्त पुंल्लिग 'गुरु' शब्द

प्रथमा	गुरुः	गुरु	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	,,	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवे	,,	गुरुभ्यः
पंचमी	गुरोः	,,	,,
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	,,	गुरुषु
सम्बोधन	हे गुरो !	हे गुरु !	हे गुरवः !

इसी प्रकार निम्नलिखित उकारान्त पुंल्लिग शब्दों के भी रूप बनते हैं :

भानु, मनु, साधु, वायु, रिपु, शिशु, शत्रु, विधु, विष्णु, तरु, मृत्यु, पशु, इन्दु इत्यादि।

ऋकारान्त पुंल्लिग 'पितृ' (पिता) शब्द

प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	,,	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्य:
पंचमी	पितु:	,,	,,
षष्ठी	पितु:	पित्रो:	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	,,	पितृषु
सम्बोधन	हे पित: !	हे पितरौ !	हे पितर: !

इसी प्रकार भ्रातृ, जामातृ आदि शब्दों के रूप बनते हैं।

ऋकारान्त पुल्लिग 'कर्तृ' शब्द

प्रथमा	कर्ता	कर्तारौ	कर्तार:
द्वितीया	कर्तारम्	,,	कर्तृन्
तृतीया	कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभि
चतुर्थी	कर्त्रे	,,	कर्तृभ्य:
पंचमी	कर्तु:	,,	,,
षष्ठी	,,	कर्त्रो:	कर्तृणाम्
सप्तमी	कर्तरि	,,	कर्तृषु
सम्बोधन	हे कर्त !	हे कर्तारौ !	हे कर्तार: !

दातृ, भर्तृ, जेतृ, श्रोतृ, होतृ, सवितृ इत्यादि ऋकारान्त शब्दों के रूप भी कर्तृ की तरह बनते हैं।

ओकारांत पुल्लिग 'गो' शब्द

प्रथमा	गौ	गावौ	गाव:
द्वितीया	गाम्	,,	गा:
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभि:
चतुर्थी	गवे	,,	गोभ्य:
पंचमी	गो:	,,	,,
षष्ठी	,,	गवो:	गवाम्
सप्तमी	गवि	,,	गोषु
सम्बोधन	हे गौ: !	हे गावौ !	हे गाव: !

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

(१) गज एक विशालकाय पशु है।
(२) बालक अश्व पर बैठता है।
(३) वानर, कुक्कुर, व्याघ्र, मार्जार और सिंह पशु हैं।
(४) वसन्त में पिक के शब्द मधुर होते हैं।
(५) हिमालय एक पर्वत है।
(६) वन में मृग दौड़ते हैं।
(७) मुनि के केश काले हैं।
(८) ऋषि का आश्रम वन में है।
(९) कालिदास प्रसिद्ध कवि था।
(१०) सर्प के मुख में मणियाँ हैं।
(११) साधुओं का हृदय पाषाण नहीं है।
(१२) वायु में गन्ध है।
(१३) विष्णु संसार का कर्ता है।
(१४) मृग का शत्रु सिंह है।
(१५) पिता के हृदय में पुत्र के लिए प्यार है।
(१६) विष्णु दाता है और भर्ता है।
(१७) भाई माँ को देखता है।
(१८) ईश्वर कर्ता है और सर्वव्यापक है।
(१९) मृत्यु मनुष्य के लिए भयंकर काल है।
(२०) गाय वन्य पशु नहीं है।

नीचे लिखे वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिये :—

(१) अस्ति वनप्रदेशे शमीवृक्षः।
(२) मगध देशे विस्तीर्णः सरः अस्ति।
(३) कोसल जनपदे रामो नाम राजकुमारो आसीत्।

(४) संस्कृत साहित्ये श्रीहर्षोनिपुण: कवि: ।
(५) सरोवरे अनागतविधाता नाम मत्स्य: अस्ति ।
(६) पुष्पपुर नगरे महावीरो श्रृंगारशेखरो नाम राजाअस्ति ।
(७) अस्ति गौतमस्य महर्षे: तपोवने महातपसो नाम मुनि: ।
(८) गौतमारण्ये अस्ति कश्चिद् ब्राह्मण: ।
(९) ग्रीष्मकाले परिश्रान्त: पथिक: तरुतले सुप्त: आसीत् ।
(१०) आश्रमे तरुतले व्याघ्रा:, गजा:, वानरा:, मयूरा:, हंसा:, एवं सर्पा सन्ति ।
(११) अयं बालक: सदा रुग्णे वर्तते ।
(१२) ग्रामीण नरा: नगरेषु चकिता: सन्ति ।
(१३) उत्तमा: मध्यमा, अधमाश्च संसारे त्रिविधा: पुरुषा: सन्ति ।
(१४) कस्मिश्चिद् ग्रामे धनीराम: नाम दरिद्र: मूर्खश्च विप्र: आसीत् ।
(१५) कच्छप: शनै: शनै: चलति ।

—:०:—

अजन्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द

आकारांत स्त्रीलिंग 'रमा' शब्द

प्रथमा	रमा	रमे	रमा:
द्वितीया	रमाम्	,,	,,
तृतीय	रमया	रमाभ्याम्	रमाभि:
चतुर्थी	रमायै	,,	रमाभ्य:
पंचमी	रमाया:	,,	,,
षष्ठी	,,	रमयो:	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	,,	रमासु
सम्बोधन	हे रमे !	हे रमे !	हे रमा: !

इसी प्रकार नीचे लिखे आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप रमा की भांति चलेंगे—

लता, कन्या, विद्या, लज्जा, छाया, चिंता, कथा, तृष्णा, आज्ञा, क्रीडा, भार्या, कान्ता, निशा, आशा, शंका, परीक्षा, वार्ता, भिक्षा, शोभा, निन्दा, ग्रीवा, सन्ध्या, माला, गंगा, सीता इत्यादि।

अम्बा (माता) का सम्बोधन एकवचन में 'हे अम्ब' होता है।

इकारांत स्त्रीलिंग 'मति' शब्द

प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	,,	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्ये, मत्यै	,,	मतिभ्यः
पंचमी	मतेः, मत्याः	,,	,,
षष्ठी	मतेः, मत्याः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मतौ, मत्याम्	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते !	हे मती !	हे मतयः !

इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों के रूप मति के समान चलेंगे—

गति, श्रुति, स्मृति, रीति, स्तुति, धृति, प्रीति, मूर्ति, कीर्ति, प्रकृति, विपत्ति, मुक्ति, जाति, आकृति, भूमि, बुद्धि, रात्रि, सृष्टि, सम्पत्ति, इत्यादि।

ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'नदी'

प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	,,	नदीः
तृतीय	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	,,	नदीभ्यः
पंचमी	नद्याः	,,	,,

षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	,,	नदीषु
सम्बोधन	हे नदी !	हे नद्यौ !	हे नद्यः !

नीचे लिखे स्त्रीलिंग शब्द नदी के समान ही विभिन्न रूप धारण करते हैं—

वापी, वीची, जानकी, महिषी, पत्नी, नगरी, नारी, दासी, पुत्री, जननी, देवी, भगिनी, रजनी, सखी, पृथिवी इत्यादि।

ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'धी' (बुद्धि)

प्रथमा	धीः	धियौ	धियः
द्वितीया	धियम्	,,	,,
तृतीया	धिया	धीभ्याम्	धीभिः
चतुर्थी	धिये, धियै	,,	धीभ्यः
पंचमी	धियः, धियाः	,,	,,
षष्ठी	,, ,,	धियोः	धियाम्, धीनाम्
सप्तमी	धियि, धियाम्	,,	धीषु
सम्बोधन	हे धीः !	हे धियौ !	हे धियः !

ईकारान्त स्त्रीलिंग 'स्त्री' शब्द

प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्री
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	,,	स्त्रीभ्यः
पंचमी	स्त्रियाः	,,	,,
षष्ठी	,,	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	,,	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्रि !	हे स्त्रियौ !	हे स्त्रियः !

उकारांत स्त्रीलिंग 'धेनु' शब्द

प्रथमा	धेनुः	धेनु	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	,,	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेनवे, धेन्वै	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पंचमी	धेनोः, धेन्वाः	,,	धेनुभ्यः
षष्ठी	,, ,,	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेनौ, धेन्वाम्	,,	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो !	हे धेनू !	हे धेनवः !

इसी प्रकार तनु, रज्जु, रेणु शब्दों के रूप बनेंगे।

ऊकारांत स्त्रीलिंग 'वधू' शब्द

प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	,,	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	,,	वधूभ्यः
पंचमी	वध्वाः	,,	,,
षष्ठी	,,	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	,,	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु !	हे वध्वौ !	हे वध्वः !

इसी प्रकार श्वश्रू, चमू, चम्पू आदि स्त्रीलिंग शब्दों के रूप बनेंगे।

ऊकारांत स्त्रीलिंग 'भू' शब्द

प्रथमा	भूः	भुवौ	भुवः
द्वितीया	भुवम्	,,	भुवः
तृतीया	भुवा	भूभ्याम्	भूभिः
चतुर्थी	भुवै, भुवे	,,	भूभ्यः
पंचमी	भुवा, भुवः	,,	भूभ्यः

षष्ठी	भुवाः, भुवः	भुवोः	भुवाम, भूनाम
सप्तमी	भुवि, भुवाम	,,	भूषु
सम्बोधन	हे भूः !	हे भुवौ !	हे भुवः !

इसी प्रकार भ्रू (गति), भ्रू (भौं), सू (माता) के रूप बनते हैं।

ऋकारांत स्त्रीलिंग 'मातृ' (माता) शब्द

प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	,,	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	,,	मातृभ्यः
पंचमी	मातुः	,,	,,
षष्ठी	,,	मात्रोः	मातॄणाम
सप्तमी	मातरि	,,	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः !	हे मातरौ !	हे मातरः !

अभ्यास १

१. नीचे लिखे वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(१) अस्मिन् संसारे विद्या एवं सर्वश्रेष्ठं वस्तु अस्ति।

(२) संसारे धनस्य महती प्रतिष्ठा वर्तते।

(३) व्यायामस्य गुणाः लाभाश्च अगणनीयाः सन्ति।

(४) शिक्षया एव मनुष्यः विद्वान् भवति।

(५) क्रीड़ाः द्विविधा सन्ति—गृहक्रीड़ाः बहिः क्रीड़ाश्च।

(६) कन्दुक क्रीड़ा भारत देशस्य अति प्राचीना तथा लोकप्रिया क्रीड़ा अस्ति।

(७) परीक्षा छात्राणां बुद्धेः परिश्रमस्य च तोलनस्य एका महती तुला अस्ति।

(८) यत्र बालकाः शिक्षकेभ्यः पाठं पठन्ति सा पाठशाला कथ्यते।

(९) गंगा भारत देशस्य एका महानदी अस्ति ।
(१०) हिमालयः भारतस्य उत्तरदिशायाम् अस्ति ।
(११) भारतस्य सर्वाधिका जानता ग्रामेषु एव वसति ।
(१२) मनुष्याणां सुखाय समुन्नतये च आवश्यकं कार्यं स्वास्थ्यरक्षा अस्ति ।
(१३) साहित्ये मातृभक्तानां पितृभक्तानां च अनेकाः कथा लिखिताः सन्ति ।
(१४) पराधीनता महान् कलंको अस्ति ।
(१५) अस्माकं समाजे अनेके भाग्यवादिनः पुरुषाः सन्ति ।
(१६) जीवने धनस्य आवश्यकताया सीमा नास्ति ।

अभ्यास २

२. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) उद्यान में लताओं की मनोहर छाया है ।
(२) विद्या जीवन की शोभा है ।
(३) लज्जा स्त्री का आभूषण है ।
(४) भार्या पति की छाया है ।
(५) चिंता जीवन के लिए चिता है ।
(६) रामायण की कथा बहुत रोचक है ।
(७) कांता की प्रीति में तृष्णा है ।
(८) गुरु की आज्ञा सफलता की सीढ़ी है ।
(९) सम्पत्ति सदा विपत्ति की भूमि है ।
(१०) सीता मेरी पत्नी की भगिनी है ।
(११) जन्म-भूमि जननी है ।
(१२) दासी की पुत्री मेरी सखी है ।
(१३) गंगा नदी की कीर्ति मुदित देती है ।
(१४) वधू की शोभा लज्जा है ।
(१५) स्त्रियों में माता पूजनीया है ।
(१६) माता के द्वारा शिशु का पालन होता है ।

(१७) पृथिवी पर नदियां और पहाड़ हैं।
(१८) मेरी स्मृति में रजनी की शोभा है।
(१९) ब्राह्मण का धन भिक्षा हैं।
(२०) माता प्रेम की देवी है।

—:o:—

अजन्त नपुंसकलिंग

अकारान्त नपुंसकलिंग 'गृह' शब्द

प्रथमा	गृहम्	गृहे	गृहणि
द्वितीया	"	"	"

शेष अकारान्त पुल्लिंग शब्दों के रूप राम के समान चलेंगे। निम्नलिखित शब्द 'गृह' के समान चलेंगे—

कमल, कुसुम, उद्यान, वन, फल, पुष्प, नेत्र, पद, मुख, नख, उदर, नयन, बल, दुःख, सुख पुण्य, पाप, धन, वस्त्र, सुवर्ण, राज्य, रत्न, आभरण, भोजन, गीत, नगर, स्थान, हिम, पीयूष, वैर, कर्त्तव्य, नृत्य, मित्र, कार्य, आदि।

इकारान्त नपुंसकलिंग 'वारि' शब्द

प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	"	वारिभ्य
पंचमी	वारिणः	"	"
षष्ठी	"	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	"	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि, हे वारे !	हे वारिणी !	हे वारीणि !

इकारान्त नपुंसकलिंग 'दधि' (दही) शब्द

प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	,,	दधिभ्यः
पंचमी	दध्नः	,,	,,
षष्ठी	,,	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दध्नि, दधनि	,,	दधिषु
सम्बोधन	हे दधे, हे दधि !	हे दधिनी !	हे दधीनि

इसी प्रकार अक्षि (आँख), अस्थि, सक्थि (जाँघ) के रूप बनते हैं।

उकारांत नपुंसकलिंग 'मधु' शब्द

प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	,,	मधुभ्यः
पंचमी	मधुनः	,,	,,
षष्ठी	,,	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	,,	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु, हे मधो !	हे मधुनी !	हे मधूनि !

इसी प्रकार अम्बु, अश्रु, वस्तु और वसु शब्दों के रूप बनते हैं।

अभ्यास १

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

(१) उद्यान में वृक्ष और लताएँ हैं।

(२) लताओं में फूल हैं।

(३) सरोवर में कमल के फूल हैं।

(४) वन में पिक और मयूर हैं।
(५) वृक्षों से फल गिरते हैं।
(६) कांता के नेत्र चंचल हैं।
(७) चरित्र पुरुष का बल है।
(८) सुख-दुख जीवन के दो रूप हैं।
(९) मित्र के गीतों में प्रीति का भाव है।
(१०) राज्य में रत्नों के घर हैं।
(११) नगर में रत्नों के नृत्य-घर हैं।
(१२) धन, वस्त्र, स्वर्ण, रत्न और आभरण सुख के साधन हैं।
(१३) दही भोजन का आवश्यक तत्व है।
(१४) नदी के पानी में गति है।
(१५) लता के फूलों में बहुत मधु है।
(१६) स्थान-स्थान पर अनेक उद्यान हैं।
(१७) हिम में जड़ता और शीतलता है।
(१८) रमेश के दोनों पैर पानी में है।

अभ्यास २

१. नीचे लिखे वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिये—
(१) ईश्वरः संसारस्य कर्ता अस्ति।
(२) ईश्वरः चन्द्रं, सूर्यं, नक्षत्राणि, उद्यानानि, पशून् पक्षिणः वृक्षान्, नारीः नरान् न सृजाति।
(३) ईश्वरस्य अनेकानि अदभुतानि ए रूपाणि सन्ति।
(४) स एव ब्रह्मरूपेण जगतः निर्माणं करोति।
(५) यथा ईश्वरस्य अनेकानि रूपाणि सन्ति तथैव तस्य अनेकानि नामानि अपि सन्ति।
(६) सरस्वती ज्ञानस्य देवता अस्ति।

(७) परिश्रमेण, अभ्यासेन, सदाचारेण, विनयेन, गुरु सेवया च सरस्वति प्रसन्ना भवति।

(८) इमानि एवं सरस्वतीपूजायाः प्रधानानि साधनानि सन्ति।

(९) भारतवर्षे महिलासमाजे विशेषरूपेण दुर्गापूजायाः रीतिः अस्ति।

(१०) ग्रामे ग्रामे, नगरे नगरे च दुर्गायाः मन्दिराणि वर्तन्ते।

(११) संसारे पशुनाम् अनेकाः जातयः सन्ति।

(१२) भारते एकस्मिन् वर्षे षट् ऋतवः सन्ति।

(१३) अस्मिन्ः ऋतौ शीतलः मन्दः सुगन्धिश्च वायुः वहति।

(१४) सर्वाणि आम्राणि प्रायः वसन्त ऋतौ एवं फलन्ति।

(१५) हिमालयस्य उपरि अनेके देशाः अनेकानि नगराणि च विद्यमानानि सन्ति।

—:o:—

हलन्त पुंल्लिग शब्द

हलन्त शब्दो के दो प्रकार हैं: अविकृत और विकृत। अविकृत शब्दों में कोई विकार नहीं होता। इनमें केवल अन्त्य व्यञ्जनों का विभक्ति-प्रत्ययों के साथ सन्धि-विकार होता है। पुंल्लिग और स्त्रीलिंग में समान रूप रहते हैं। नपुंसकलिंग में केवल कर्ता, कर्म और सम्बोधन के द्विवचन और बहुवचन भिन्न होते हैं।

विकृत हलन्त शब्दों में किसी स्वर की वृद्धि या गुण से अथवा किसी स्वर या व्यञ्जन के लोप के कारण अंग में विकार हो जाता है। इन शब्दों के अन्त

में प्रायः निम्नलिखित अक्षर होते हैं :

त्—अत्, मत्, वत्
न्—अन्, मन्, वन्
इन्—मिन्, विन्
स्—यस्, वस्
च्—अच्

अविकृत हलन्त शब्द

चवर्गान्त पुंल्लिग 'पयोमुच्' (बादल)

प्रथमा	पयोमुक्	पयोमुचौ	पयोमुचः
द्वितीया	पयोमुचम्	"	"
तृतीया	पयोमुचा	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भिः
चतुर्थी	पयोमुचे	"	पयोमुग्भ्यः
पंचमी	पयोमुचः	"	"
षष्ठी	"	पयोमुचो	पयोमुचाम
सप्तमी	पयोमुचि	"	पयोमुक्षु
सम्बोधन	हे पयोमुक् !	हे पयोमुचौ !	हे पयोमुचः !

चवर्गान्त पुंल्लिग 'वणिक्' शब्द

प्रथमा, सम्बो०	वणिक्	वणिजौ	वणिजः
द्वितीया	वणिजम्	"	"
तृतीया	वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भिः
चतुर्थी	वणिजे	"	वणिग्भ्यः
पंचमी	वणिजः	"	"
षष्ठी	"	वणिजोः	वणिजाम्
सप्तमी	वणिजि	"	वणिक्षु

पुंल्लिग 'सम्राज्' शब्द

प्रथमा, सम्बो०	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः

द्वितीया	सम्राजम्	सम्राजौ	सम्राजः
तृतीया	सम्राजा	सम्राड्भ्याम	सम्राड्भिः
चतुर्थी	सम्राजे	,,	सम्राड्भ्यः
पंचमी	सम्राजः	,,	,,
षष्ठी	,,	सम्राजोः	सम्राजाम्
सप्तमी	सम्राजि	,,	सम्राट्सु

तवर्गान्त पुल्लिंग 'मरुत्' (वायु) शब्द

प्रथमा, सम्बो०	मरुत् मरुद्	मरुतौ	मरुतः
द्वितीया	मरुतम्	,,	,,
तृतीया	मरुता	मरुद्भ्याम्	मरुद्भिः
चतुर्थी	मरुते	,,	मरुद्भ्यः
पंचमी	मरुतः	,,	,,
षष्ठी	,,	मरुतोः	मरुताम्
सप्तमी	मरुति	,,	मरुत्सु

इसी प्रकार, रोहित (सूर्य) और भूभृत् के रूप बनते हैं।

तवर्गान्त पुल्लिंग 'भगवत्' शब्द

प्रथमा	भगवान्	भगवन्तौ	भगवतः
द्वितीया	भगवन्तम्	,,	भगवतः
तृतीया	भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः
चतुर्थी	भगवते	,,	भगवदभ्यः
पंचमी	भगवतः	,,	,,
षष्टी	,,	भगवतो	भगवताम्
सप्तमी	भगवति	,,	भगवत्सु
सम्बोधन	हे भगवन् !	हे भगवन्तौ !	हे भगवन्तः

इसी प्रकार बुद्धिमत्, बलवत्, श्रीमत्, भवत्, आदि तवर्गान्त शब्दों के रूप बनेंगे।

तवर्गान्त पुं० 'सुहृद' (मित्र) शब्द

प्रथमा, सम्बो०	सुहृत्	सुहृदौ	सुहृदः
द्वितीया	सुहृदम्	,,	,,
तृतीया	सुहृदा	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भि
चतुर्थी	सुहृदे	,,	सुहृद्भ्यः
पंचमी	सुहृदः	,,	,,
षष्ठी	सुहृदः	सुहृदोः	सुहृदाम्
सप्तमी	सुहृदि	,,	सुहृत्सु

वेदविद्, तमोनुद् शब्दों के रूप भी इसी प्रकार बनेंगे।

शकारान्त पुं० 'विश्' (वैश्य) शब्द

प्रथमा, सम्बो०	विट्	विशौ	विशः
द्वितीया	विशम्	,,	,,
तृतीया	विशा	विड्भ्याम्	विड्भिः
चतुर्थी	विशे	,,	विड्भ्यः
पंचमी	विशः	,,	,,
षष्ठी	,,	विशोः	विशाम्
सप्तमी	विशि	,,	विट्सु

शकारान्त पुं० 'चन्द्रमस्' (चाँद) शब्द

प्रथमा	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वितीया	चन्द्रमसम्	,,	,,
तृतीया	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभि
चतुर्थी	चन्द्रमसे	,,	चन्द्रमोभ्यः
पंचमी	चन्द्रमसः	,,	,,
षष्ठी	,,	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
सप्तमी	हे चन्द्रमः !	हे चन्द्रमसौ !	हे चन्द्रमसः !

अविकृत हलन्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द

चवर्गान्त स्त्रीलिंग 'वाच्' (वाणी) शब्द

प्रथमा, सम्बो०	वाक्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	"	वाग्भ्यः
पंचमी	वाचः	"	"
षष्ठी	"	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	"	वाक्षु

तवर्गान्त स्त्रीलिंग 'सरित्' (नदी) शब्द

प्रथमा, सम्बो०	सरित्	सरितौ	सरितः
द्वितीया	सरितम्	"	"
तृतीया	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
चतुर्थी	सरिते	"	सरिद्भ्यः
पंचमी	सरितः	"	"
षष्ठी	सरितः	सरितोः	सरिताम्
सप्तमी	सरिति	"	सरित्सु

तडित्, विद्युत्, योषित् आदि शब्दों के रूप भी इसी प्रकार बनेंगे।

शकारान्त स्त्रीलिंग 'दिश्' (दिशा) शब्द

प्रथमा, सम्बो०	दिक्	दिशौ	दिशः
द्वितीया	दिशम्	"	"
तृतीया	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
चतुर्थी	दिशे	"	दिग्भ्यः
पंचमी	दिशः	"	"

षष्ठी	दिशः	दिशोः	दिशाम्
सप्तमी	दिशि	,,	दिक्षु

हलन्त विकृत नपुंसकलिंग संज्ञा शब्द

तवर्गान्त नपुंसकलिंग 'जगत्' शब्द

प्र०,द्वि०,सम्बो०	जगत्	जगती	जगन्ति
तृतीया	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः
चतुर्थी	जगते	,,	जगद्भ्यः
पंचमी	जगतः	,,	,,
षष्ठी	,,	जगतोः	जगताम्
सप्तमी	जगति	,,	जगत्सु

सकारान्त नपुंसकलिंग 'पयस्' (दूध) शब्द

प्रथमा	पयः	पयसी	पयांसि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
चतुर्थी	पयसे	,,	पयोभ्यः
पंचमी	पयसः	,,	,,
षष्ठी	,,	पयसोः	पयसाम्
सप्तमी	पयसि	,,	पयस्सु
सम्बोधन	हे पयसः !	हे पयसी !	हे पयांसि !

दो अंगों वाले हलन्त विकृत शब्द

पु० 'भवत्' शब्द

प्रथमा, सम्बो०	भवन्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	,,	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	,,	भवद्भ्यः

पंचमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	,,	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	,,	भवत्सु

'महत्' पुल्लिंग शब्द

प्रथमा	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वितीया	महान्तम्	,,	महतः
सम्बोधन	हे महन् !	हे महान्तौ !	हे महान्तः !

शेष रूप मरुत् शब्द की भांति बनेंगे।

इन्नन्त पु० 'करिन्' (हाथी) शब्द

प्रथमा	करी	करिणौ	करिणः
द्वितीया	करिणम्	,,	,,
तृतीया	करिणा	करिभ्याम्	करिभिः
चतुर्थी	करिणे	,,	करिभ्यः
पंचमी	करिणः	,,	,,
षष्ठी	,,	करिणोः	करिणाम्
सप्तमी	करिणि	,,	करिषु
सम्बोधन	हे करिन् !	हे करिणौ !	हे करिणः !

शशिन्, बलिन्, मानिन्, धनिन्, दण्डिन्, प्राणिन्, कामिन् आदि शब्दों के रूप भी इसी प्रकार बनते हैं।

पुल्लिंग 'युवन्' शब्द

प्रथमा	युवा	युवानौ	युवानः
द्वितीया	युवानम्	,,	यूनः
तृतीया	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
चतुर्थी	यूने	,,	युवभ्यः
पंचमी	यूनः	,,	,,

षष्ठी	यूनः	यूनोः	यूनाम्
सप्तमी	यूनि	,,	युवसु
सम्बोधन	हे युवन् !	हे युवानौ !	हे युवानः !

अन्नन्त पु० 'राजन्' शब्द

प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	,,	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	,,	राजभ्यः
पंचमी	राज्ञः	,,	,,
षष्ठी	,,	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राजनि, राज्ञि	,,	राजसु
सम्बोधन	हे राजन् !	हे राजानौ !	हे राजानः !

पु० 'श्वन्' (कुत्ता) शब्द

प्रथमा	श्वा	श्वानौ	श्वानः
द्वितीया	श्वानम्	,,	शुनः
तृतीया	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
चतुर्थी	शुने	,,	श्वभ्यः
पंचमी	शुनः	,,	,,
षष्ठी	,,	शुनोः	शुनाम्
सप्तमी	शुनि	,,	श्वसु
सम्बोधन	हे श्वन् !	हे श्वानौ !	हे श्वानः !

मन्नन्त पुं० 'आत्मन्' (आत्मा) शब्द

प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	,,	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः

चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पंचमी	आत्मनः	,,	,,
षष्ठी	,,	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	,,	आत्मनाम्
सम्बोधन	हे आत्मन् !	हे आत्मानौ !	हे आत्मानः !

पु० 'विद्वस्' (विद्वान्) शब्द

प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	,,	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	,,	विद्वद्भ्यः
पंचमी	विदुषः	,,	,,
षष्ठी	,,	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	,,	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन् !	हे विद्वांसौ !	हे विद्वांसः !

अभ्यास

१. नीचे लिखे शब्दो के प्रथमा, द्वितीया, तृतीया और सप्तमी विभक्ति में रूप लिखिए—

मति, गुरु, वणिज्, विद्वस्, आत्मन् ।

२. नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं चार के प्रथमा, तृतीया, पंचमी और षष्ठी में रूप लिखिए—

कवि, स्त्री, पितृ, जगत्, धनिन्, राजन् ।

३. नीचे लिखे शब्दों के द्वितीया, तृतीया, और षष्ठी के रूप लिखिए—

पति, दातृ, मधु, मनस्, पयस् ।

४. निम्नलिखित वाक्यों को हिन्दी में अनूदित कीजिए—

(१) एको गोपः धेनुं दुग्धं दोग्धि ।

(२) क्रोशं पर्वतमाला तिष्ठति ।

(३) रामः त्रीणि वर्षाणि संस्कृत भाषाम् अपठत ।
(४) गंगा नदी क्रोशं कुटिला अस्ति ।
(५) तरुणी वृक्षं पुष्पाणि चिनोति ।
(६) तस्करः नारीं भूषणानि हरति ।
(७) सीता तण्डुलान् ओदनं पचति ।
(८) राजा जनकः चौरं शतं दण्डयति ।
(९) पथिकः बालकं मार्गं पृच्छति ।
(१०) अश्वः भारं नगरं वहति ।
(११) नृपतिः प्रजाः नियमान् शास्ति ।
(१२) हरिः सम्भारान् गृहं नयति ।
(१३) साधुः गोत्रेण कौशिको अस्ति ।
(१४) पिता कर्णाभ्यां बधिरः अस्ति ।
(१५) गुरुः जटाभिः तापसः अस्ति ।
(१६) शिशवः पादकंदुकेन क्रीडन्ति ।
(१७) अतिथिः प्रकृत्या भीरुः ।
(१८) ग्रामाय गच्छन्ति स्त्रियः ।
(१९) पिता क्रोधात् पुत्रं प्रहरति ।
(२०) श्रीनगरात् दक्षिणे जम्मू नगरम् अस्ति ।
(२१) जगति महान्तः विद्वांसः सन्ति ।

५. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) धर्म के बिना जीवन व्यर्थ है ।
(२) गाँव के बाहर आश्रम है ।
(३) नगर के बाहर एक बड़ा तालाब है ।
(४) गुरु के विना विद्या नहीं आती ।
(५) बसन्त के बाद ग्रीष्म ऋतु आती है ।
(६) सरिता में स्वच्छ जल बहता है ।
(७) पूर्व दिशा में सूर्योदय होता है ।

(८) मैं गुरु जी को नमस्कार करता हूँ।
(९) शिशु निष्पाप होता है।
(१०) बालक चोर से डरते हैं।
(११) रमा हाथ से खाती है।
(१२) माता जी पिता जी को पत्र लिखती हैं।
(१३) चन्द्रमा में कलंक है।
(१४) राम लेखनी से लिखता है।
(१५) वधू की माँ लड्डू देती है।
(१६) वृक्ष से फल गिरते हैं।
(१७) राम से कृष्ण अधिक प्यारे हैं।
(१८) गुरु शिष्य पर क्रुद्ध होता है।
(१९) राजा के प्रासाद (महल) में उत्सव है।
(२०) आत्मा का रूप अमर है।
(२१) राजा की आत्मा आप में है।

पंचम अध्याय

सर्वनाम शब्द-प्रकरण

सर्वनाम—संज्ञा के स्थान पर उसके अर्थ को प्रकट करने के लिए जिन पदों का प्रयोग होता है, उन्हें **सर्वनाम** कहा जाता है। सर्वनामों का प्रयोग तीनों लिंगों में होता है।

सर्वनाम के कई भेद हैं :

१. पुरुषवाचक
२. निश्चयवाचक
३. सम्बन्धवाचक
४. प्रश्नवाचक
५. पुरुष सम्बन्धवाचक
६. निजवाचक
७. अनिश्चयवाचक
८. सार्वनामिक विशेषण

१. पुरुषवाचक सर्वनाम

'अस्मद्'

प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	अवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

'युष्मद्'

प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

२. निश्चयवाचक सर्वनाम

'तद्' (वह) पु०

प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	"	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	"	"
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	"	तेषु

'तद्' स्त्रीलिंग

प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	"	"
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	"	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	"	"
षष्ठी	"	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	"	तासु

'तद्' नपुं० लिंग

प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	"	"	"

शेष रूप पुल्लिंग की भाँति चलेंगे।

'एतद्' (वह) पुं०

प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्, एनम्	एतौ, एनौ	एतान्, एनान्
तृतीया	एतेन, एनेन	एताभ्याम	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पंचमी	एतस्मात्	"	"
षष्ठी	एतस्य	एतयोः, एनयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	" "	एतेषु

'एतद्' स्त्रीलिंग

प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्, एनाम्	एते, एने	एताः, एनाः
तृतीया	एतया, एनया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यैः	"	एताभ्यः
पंचमी	एतस्याः	"	"
षष्ठी	"	एतयोः, एनयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	" "	एतासु

'एतद्' नपुंसकलिंग

प्रथमा	एतत्,	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्, एनत्	एते, एने	एतानि, एनानि

शेष रूप पुल्लिंग की भाँति चलेंगे।

इदम् (यह) पुं०

प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्, एनम्	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्

तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	,,	एभ्यः
पंचमी	अस्मात्	,,	,,
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	,,	एषु

'इदम्' स्त्रीलिंग

प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्, एनाम्	इमे, एने	इमाः, एनाः
तृतीया	अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	,,	आभ्यः
पंचमी	अस्याः	,,	,,
षष्ठी	,,	अनयोः, एनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	,, ,,	आसु

'इदम्' नपुंसकलिंग

प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्, एनत्	इमे, एने	इमानि, एनानि

शेष रूप पुल्लिग की भाँति ।

'अदस्' (वह) पु०

प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	,,	,,
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	,,	अमीभ्यः
पंचमी	अमुष्मात्	,,	,,
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	,,	अमीषु

'अदस्' स्त्रीलिंग

प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमूम्	,,	,,
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	,,	अमूभ्यः
पंचमी	अमुष्याः	,,	,,
षष्ठी	,,	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	,,	अमूषु

'अदस्' नपुंसकलिंग

प्रथमा	अदः	अमू	अमूनि
द्वितीया	,,	,,	,,

शेष रूप पुल्लिग की भांति चलेंगे।

३. सम्बन्धवाचक सर्वनाम

'यद्' (जो) पुल्लिग

प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	,,	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	,,	येभ्यः
पंचमी	यस्मात्	,,	,,
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	,,	येषु

'यद्' स्त्रीलिंग

प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	,,	,,
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	,,	याभ्यः

पंचमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	,,	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	,,	यासु

'यद्' नपुंसकलिंग

प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	,,	,,	,,

शेष रूप पुल्लिंग की भाँति चलेंगे।

४. प्रश्नवाचक सर्वनाम

'किम्' (कौन) पुल्लिंग

प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	,,	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	,,	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	,,	,,
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	,,	केषु

'किम्' स्त्रीलिंग

प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	,,	,,
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	,,	काभ्यः
पंचमी	कस्याः	,,	,,
षष्ठी	,,	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	,,	कासु

'किम्' नपुंसकलिंग

प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	,,	,,	,,

शेष रूप पुल्लिंग की भाँति चलेंगे।

५. पुरुष सम्बन्धवाचक सर्वनाम

अस्मद्, युष्मद्, तद् आदि सर्वनामों में ईश प्रत्यय लगाने से इस प्रकार के सर्वनाम बनते हैं : अस्मदीय (हमारा), मदीय (मेरा), युष्मदीय (तुम्हारा), त्वदीय (तेरा), तदीय (उसका), भवदीय (आपका)।

६. निजवाचक सर्वनाम

निजवाजक सर्वनाम 'आत्मन्' सदैव एकवचन पुल्लिग में सब पुरुषों और लिंगों के लिए प्रयुक्त होता है।

'स्वयम्' अव्यय है और सभी वचनों व पुरुषों में समान रूप से इसका प्रयोग होता है।

'स्वः, स्वा, स्वम्' निजवाचक विशेषण है और तीनों वचनों और पुरुषों में निजवाचक सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

७. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

सभी लिंगों और विभक्तियों में जब प्रश्नवाचक सर्वनाम 'किम्' में चित्, चन, अपि, स्वित् लगा दिये जाते है; तब अनिश्चयवाचक सर्वनाम बनते हैं। जैसे—

कश्चित्, काचित्, किंचित्, कश्चन, काचन, किंचन, कोपि, कयापि, किमपि, किस्वित् इत्यादि।

८. सार्वनामिक विशेषण

अन्य, अन्यतर, इतर, सर्व और विश्व के रूप भी प्रथमा और द्वितीया के एकवचन नपुंसकलिंग के अतिरिक्त यद् की भांति बनते हैं।

'सर्व' (सब) पुल्लिग

प्रथमा	सर्व	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	,,	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	,,	सर्वेभ्यः
पंचमी	सर्वस्मात्	,,	,,
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्

सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

'सर्व' स्त्रीलिंग

प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	"	"
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	"	सर्वाभ्यः
पंचमी	सर्वस्या	"	"
षष्ठी	"	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	"	सर्वासु

'सर्व' नपुंसकलिंग

प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	"	"	"

शेष रूप पुल्लिंग को भाँति चलेंगे।

इसी प्रकार पूर्व, अवर, उत्तर, दक्षिण आदि जब सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त होते हैं तो इनके रूप सर्व की भाँति बनते हैं।

अभ्यास

१. सर्वनाम किसे कहते हैं ? उसके प्रकारों का उल्लेख कीजिये।

२. सम्बन्धवाचक, निजवाचक, अनिश्चयवाचक तथा पुरुष सम्बन्धवाचक सर्वनामों के उदाहरण दीजिये।

३. अदस् (पुल्लिग), युष्मद् (स्त्रीलिंग) और एतद् (नपुंसकलिंग) के रूप लिखिये।

४. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

(१) मैं विद्यालय में पढ़ने के लिए जाता हूँ।

(२) हम पुस्तकें पढ़ते हैं।

(३) तुम मेरे भाई हो।

(४) मेरा नाम रमेश है।

(५) हमारे पिता तुम्हारे पिता के मित्र हैं ।

(६) चन्द्रमा में तुम्हारा रूप है ।

(७) पश्चिम दिशा में मेरा मित्र रहता है ।

(८) हमारे नगर में व्यापारी रहते हैं ।

(९) घड़े में हमारे कुत्ते के लिए दूध है ।

(१०) उस आदमी के लिए तुम्हारे हृदय में करूणा है ।

(११) उस पुरुष में अनेक गुण हैं ।

(१२) उस स्त्री का हृदय कठोर है।

(१३) इस वन में अनेक सिंह और व्याघ्र हैं ।

(१४) यह पुरुष विद्वान है ।

(१५) इस वृक्ष से पत्ते गिरते हैं ।

(१६) यह लड़की सदैव रूग्ण रहती है ।

(१७) इन नदियों में गंगा नदी सबसे बड़ी है ।

(१८) यह संसार नश्वर है, आत्मा अमर है ।

(१९) तुम्हारी लड़की अपने भाई से चतुर है ।

(२०) इन बालकों में यह बालक बहुत दुर्बल है ।

५. नीचे लिखे वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए:—

(१) अस्मिन् सरसि कमलानि विकसितानि सन्ति ।

(२) सर्वासु नदीषु गंगायाः जलं पवित्रतमम् अस्ति ।

(३) अस्मिन् संसारे कविरेव प्रजापतिः ।

(४) अस्मिन् जगति निर्मलं यशः दुर्लभम् अस्ति ।

(५) अस्माकं साहित्ये मातृभक्तानां च अनेकाः कथा लिखिता सन्ति ।

(६) माता पुत्रस्य लालन-पालनादिकं करोति पिता च तं शिक्षणाय पाठशालायां प्रेषयति ।

(७) विद्या सर्वेषु वस्तुषु श्रेष्ठं अस्ति ।

(८) अस्माकं वहवो विवेकशून्याः आततायिनः शत्रवः सन्ति ।

(९) ये जनाः सर्वदा गृहे निवसन्ति ते प्रायेण सहिष्णवो न भवन्ति ।

(१०) सर्वेषां पठनाय यत्र पुस्तकानां संग्रहः वर्तते स पुस्तकालयः अस्ति ।

(११) अस्माकं देशस्य प्राचीनं नाम "भारतं" वर्तते ।

(१२) अस्य पूर्वदिशायां ब्रह्मदेशः (बर्मा), पश्चिमदिशायां अफगानिस्तानं, उत्तर दिशायां हिमालयः च दक्षिण दिशायां लंका अस्ति ।

(१३) भारतस्य खंडितः भागः अयं पाकिस्तान इति ।

(१४) अस्माकं देशे अनेकाः भाषा सन्ति परन्तु हिन्दी भाषा राष्ट्रभाषा-पदे सुशोभिता वर्तते ।

(१५) ज्ञानस्य यानि अनेकानि साधनानि सन्ति तेषु पुस्तकं एकं प्रधानं साधनं वर्तते ।

(१६) यः पुरुषः अन्येषां सत्कारं करोति स सर्वेषां प्रीतिभाजनं भवति ।

अध्याय षष्ठ

संख्यावाचक शब्द-प्रकरण

ये शब्द विशेषण के अन्तर्गत लाये जायेंगे। इसलिए इनके लिंग विभक्ति और वचन भी संज्ञा के अनुसार होते हैं। इनके रूप संज्ञा शब्दों के अनुसार तीनों लिंगों में बनते हैं।

'एक' शब्द

	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	एकः	एकाः	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	एकेन
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पंचमी	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्
षष्ठी	एकस्य	एकस्याः	एकस्य
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

'द्वि' (दो) शब्द

	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	द्वाभ्याम्	"	"
चतुर्थी	"	"	"
पंचमी	"	"	"
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	"	"	"

'त्रि' (तीन) शब्द

	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	नपंसकलिंग
प्रथमा	त्रय:	तिस्र:	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	,,	,,
तृतीया	त्रिभि:	तिसृभि:	त्रिभि:
चतुर्थी	त्रिभ्य:	तिसृभ्य:	त्रिभ्य:
पंचमी	,,	,,	,,
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

'चतुर्' (चार) शब्द

	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	चत्वार:	चतस्र:	चत्वारि
द्वितीया	चतुर:	,,	,,
तृतीया	चतुर्भि:	चतसृभि:	चतुर्भि:
चतुर्थी	चतुर्भ्य:	चतसृभ्य:	चतुर्भ्य:
पंचमी	,,	,,	,,
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

'पञ्चन्' (पांच) शब्द

प्रथमा	पञ्च
द्वितीया	,,
तृतीया	पञ्चभि:
चतुर्थी	पञ्चभ्य:
पंचमी	,,
षष्ठी	पञ्चानाम्
सप्तमी	पञ्चसु

	'षष्' (छः)	'सप्तन्' (सात)	'अष्टन्' (आठ)
प्रथमा	षट्	सप्त	अष्टौ, अष्ट
द्वितीया	"	"	" "
तृतीया	षड्भिः	सप्तभिः	अष्टाभिः, अष्टभि
चतुर्थी	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः
पंचमी	"	"	" "
षष्ठी	षण्णाम्	सप्तानाम्	अष्टानाम्
सप्तमी	षट्सु,षट्त्सु	सप्तसु	अष्टासु, अष्टसु

	'नवन्' (नौ)	'दशन्' (दश)
प्रथमा	नव	दश
द्वितीया	"	"
तृतीया	नवभिः	दशभिः
चतुर्थी	नवभ्यः	दशभ्यः
पंचमी	"	"
षष्ठी	नवानाम्	दशानाम्
सप्तमी	नवसु	दशसु

गणनावाचक विशेषण

१.	एकः	११.	एकादश
२.	द्वौ	१२.	द्वादश
३.	त्रयः	१३.	त्रयोदश
४.	चत्वारः	१४.	चतुर्दश
५.	पञ्च	१५.	पञ्चदश
६.	षट्	१६.	षोडश
७.	सप्त	१७.	सप्तदश
८.	अष्ट	१८.	अष्टादश
९.	नव	१९.	नवदश या एकोनविंशति
१०.	दश	२०.	विंशतिः

२१. एकविंशति
२२. द्वाविंशति
२३. त्रयोविंशति
२४. चतुर्विंशति
२५. पञ्चविंशति
२६. षड्विंशति
२७. सप्तविंशति
२८. अष्टाविंशति
२९. नवविंशति या एकोनत्रिंशत्
३०. त्रिंशत्
३१. एकत्रिंशत्
३२. द्वात्रिंशत्
३३. त्रयस्त्रिंशत्
३४. चतुस्त्रिंशत्
३५. पञ्चत्रिंशत्
३६. षट्त्रिंशत्
३७. सप्तत्रिंशत्
३८. अष्टात्रिंशत्
३९. नवत्रिंशत् या एकोनचत्वारिंशत्
४०. चत्वारिंशत्
४१. एकचत्वारिंशत्
४२. द्वाचत्वारिंशत्
४३. त्रयश्चत्वारिंशत्
४४. चतुश्चत्वारिंशत्
४५. पञ्चचत्वारिंशत्
४६. षट्चत्वारिंशत्
४७. सप्तचत्वारिंशत्
४८. अष्टचत्वारिंशत्
४९. नवचत्वारिंशत् या एकोनपञ्चाशत्
५०. पञ्चाशत्
६०. षष्टि
७०. सप्तति
८०. अशीति
९०. नवति
१००. शत
२००. द्वेशते, द्विशतम्
३००. त्रीणि शतानि, त्रिशतम्
४००. चतुश्शतम्
५००. पञ्चशतम्
१०००. सहस्रम्
१००००. अयुतम्
१०००००. लक्षम्

गणनावाचकों से क्रमवाचक (Ordinals) भी बनाये जा सकते हैं—एक, द्वि, त्रि, चतुर और षष् के क्रमवाचक क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और षष्ठ बनते हैं तथा पञ्चन्, सप्तन्, अष्ठन, नवन् और दशन् के क्रमवाचक न् के स्थान पर म लगाने से बनते हैं। यथा—पञ्चमः, दशमः।

दशन् से नवशदन् तक केवल न् हटाने से; यथा—दशः, नवदशः।

विंशति से ऊपर 'तम' लगाने से या विंशति का 'ति' और शेष के अन्त्य व्यंजन हटाने से । यथा—विंशतितमः या विंशः ।

प्रथमः
द्वितीयः
तृतीयः
चतुर्थः
पञ्चमः
षष्ठः
सप्तमः
अष्टमः
नवमः
दशमः
एकादशः
द्वादशः
त्रयोदशः
चतुर्दशः
पञ्चदशः
षोडशः
सप्तदशः
अष्टादशः
नवदशः
एकोनविंशतितमः }
एकोनविंशः }
विंशतितमः }
विंशः }
एकविंशतितमः }
एकविंशः }
द्वाविंशतितमः }
द्वाविंशः }

त्रयोविंशतितमः	या	त्रयोविंशः
चतुर्विंशतितमः	या	चतुर्विंशः
पञ्चविंशतितमः	या	पञ्चविंशः
षड्विंशतितमः	या	षड्विंशः
सप्तविंशतितमः	या	सप्तविंशः
अष्टाविंशतितमः	या	अष्टाविंशः
नवविंशतितमः	या	नवविंशः
एकोनत्रिंशत्तमः	या	एकोनत्रिंशः
त्रिंशत्तमः	या	एकत्रिंशः
द्वात्रिंशत्तमः	या	द्वात्रिंशः
त्रयस्त्रिंशत्तमः	या	त्रयस्त्रिंशः
चतुस्त्रिंशत्तमः	या	चतुस्त्रिंशः
पञ्चत्रिंशत्तमः	या	पञ्चत्रिंशः
षट्त्रिंशत्तमः	या	षट्त्रिंशः
सप्तत्रिंशत्तमः	या	सप्तत्रिंशः
अष्टात्रिंशत्तमः	या	अष्टात्रिंशः
नवत्रिंशत्तमः	या	नवत्रिंशः
एकोनचत्वारिंशत्तमः	या	एकोनचत्वारिंशः
चत्वारिंशत्तमः	या	चत्वारिंशः
एकचत्वारिंशत्तम	या	एकचत्वारिंशः
द्वाचत्वारिंशत्तमः }	या	द्वाचत्वारिंशः }
द्विचत्वारिंशत्तमः }	या	द्विचत्वारिंशः }
त्रयश्चत्वारिंशत्तमः	या	त्रयश्चत्वारिंशः
चतुश्चत्वारिंशत्तमः	या	चतुश्चत्वारिंशः
पंचचत्वारिंशत्तमः	या	पंचचत्वारिंशः
षट्चत्वारिंशत्तमः	या	षट्चत्वारिंशः
सप्तचत्वारिंशत्तमः	या	सप्तचत्वारिंशः

अष्टचत्वारिंशत्तमः	या	अष्टाचत्वारिंशः
नवचत्वारिंशत्तमः	या	नवचत्वारिंश
एकोनपञ्चाशत्तमः	या	एकोनपञ्चाशः
पञ्चाशत्तमः	या	पञ्चाशः
षष्टितमः		
एकषष्टितमः	या	एकषष्टः
सप्ततितमः		
एकसप्ततितमः	या	एकसप्ततः
अशीतितमः		
एकाशीतितमः	या	एकाशीतः
नवतितमः		
एकनवतितमः	या	एकनवतः
शततमः		
सहस्रतमः		
अयुततमः		
लक्षतमः		

शतम् से ऊपर के गणनावाचक 'अधिक' के योग से बनते हैं। जैसे— एकाधिकं शतम् या एकाधिकशतम् (१०१), अष्टादशाधिकं शतम् (११८) पञ्चादशाधिकं शतम् (१५०)।

अभ्यास

१. निम्नलिखित हिन्दी-शब्दों को संस्कृत में लिखिये :

पाँच सौ रुपये, पचपन विद्यार्थी, उन्नीस बालिकाएँ, तीसरा दिन, पच्चीसवाँ वर्ष, सोलह साल, एक सौ आठ घोड़े, आठ सौ सत्तर हाथी, तीन फूल, बीसवाँ जन्म-दिन, पचासी सैनिक, चौदहवीं का चाँद।

२. नीचे लिखे अंकों में संख्यावाचक शब्द लिखिये :

४०, १२, २६, ३५, ६५, ५४, ९३, ७८, १२८, १५५, २१५, ६२५, ९६६।

३. निम्नलिखित शब्दों को हिन्दी के अंकों में लिखिये :—

पञ्चाधिकं शतम्, पञ्चदशाधिकद्विशतम्, सप्तत्रिंशदधिकनवशताधिकसहस्रम् ।

४. नीचे लिखे वाक्यों पर ध्यान दीजिये :—

१. एकं द्वे च फले मिलित्वा त्रीणि फलानि भवन्ति ।
एक और दो फल मिलकर तीन फल होते हैं ।

२. दशरथस्य तिस्रः भार्याः आसन ।
दशरथ की तीन पत्नियाँ थीं ।

३. गृहस्थाश्रमः चतुर्षु अपि आश्रमेषु श्रेष्ठो अस्ति ।
गृहस्थाश्रम चारों आश्रमों में भी श्रेष्ठ है ।

४. अस्याम् कक्षायाम् एकाधिकशतम् छात्राः सन्ति ।
इस कक्षा में १०१ छात्र हैं ।

५. मम श्रेण्यां त्रिंशत् बालकाः पठन्ति ।
मेरी कक्षा में ३० छात्र पढ़ते हैं ।

६. एकादश पुरुषाः कन्दुकेन क्रीडन्ति ।
ग्यारह पुरुष गेंद से खेल रहे हैं ।

७. अहं त्रीन पुरुषान् पश्यामि ।
मैं तीन पुरुषों को देखता हूँ ।

८. वृक्षात् त्रीणि फलानि पतन्ति ।
वृक्ष से तीन फल गिरते हैं ।

९. लतायाम् एकं पत्रं अपि न वर्तते ।
लता में एक भी पत्ता नहीं है ।

१०. एषु बालकेषु द्वादशः, सप्तदशः, विंशतितमः, द्वाचत्वारिंशत्तमः च सर्वेषु श्रेष्ठः ।

इन बालकों में बारहवाँ, सत्रहवाँ, बीसवाँ और बयालीसवाँ सबसे अच्छे हैं ।

५. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

(१) एक वर्ष में ३६५ दिन होते हैं।
(२) एक सप्ताह में सात दिन होते हैं।
(३) यह मेरा बीसवां जन्म दिवस है।
(४) तीसरे दिन बुड्ढ़ा चला गया।
(५) इस कमरे में तीस बालिकायें हैं।
(६) राजा की चार रानियां हैं।
(७) इन लड़कों में तीसरा, पांचवां और ग्यारहवां उत्तम हैं।
(८) मेरे पिता के सौ घोड़े हैं।
(९) सड़क पर अस्सी हाथी जा रहे हैं।
(१०) वन में दो शेर रहते हैं।
(११) इस दुर्ग में ५०० सैनिक हैं।
(१२) इस वृक्ष पर पन्द्रह बन्दर हैं।
(१३) हाथ और पांव की ऊंगलियां मिलकर बीस होती हैं।
(१४) एक पक्ष में दो सप्ताह होते हैं।
(१५) एक मास में तीस दिन होते हैं।
(१६) चार बालक, पांच बालिकायें और ६ पुरुष मिलकर पन्द्रह होते हैं।
(१७) राम तीन फूल लाता है।
(१८) सरोवर में एक हजार कमल खिल रहे हैं।

सप्तम अध्याय

समास-प्रकरण

समास—परस्पर सम्बद्ध अर्थ वाले दो या दो से अधिक शब्दों को एक पद में मिलाना समास कहा जाता है। इन मिले हुए शब्दों को समस्त शब्द कहते हैं। इन शब्दों में सन्धि होती है। इस समस्त शब्द की विभक्ति और प्रत्यय को पृथक्-पृथक् करना ही विग्रह कहलाता है।

समास मुख्यतः छ प्रकार के होते हैं :

१. द्वन्द्व समास २. तत्पुरुष ३. अव्ययी भाव ४. बहुव्रीहि ५. द्विगु ६. कर्मधारय।

द्वन्द्व

द्वन्द्व समास में प्रत्येक पद की प्रधानता होती है। उसके पद च के अर्थ में मिलाये जाते हैं। इसके तीन प्रकार हैं :

१. इतरेतर द्वन्द्व; २. एकशेष द्वन्द्व; ३. समाहार द्वन्द्व।

(१) **इतरेतर द्वन्द्व**—जिस द्वन्द्व समास में प्रत्येक पद का स्वतन्त्र अर्थ रहता हो, उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। यथा—

कन्दश्च मूलञ्च फलञ्च = कन्दमूलफलानि
रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ
नदी च पर्वतश्च = नदीपर्वतौ
रागश्च शोकश्च = रागशोकौ
जयश्च अजयश्च = जयाजयौ
धर्मश्च अर्थश्च कामश्च मोक्षश्च = धर्मार्थकाममोक्षाः
शीतञ्च उष्णञ्च = शीतोष्णे
सीता च रामश्च लक्ष्मणश्च = सीतारामलक्ष्मणाः

(२) एकशेष द्वन्द्व—जब दो पदों में से एक पद शेष रह जाए और दोनों का अर्थ दे, उसे एकशेष द्वन्द्व कहते हैं। यथा—

पुत्रश्च दुहिता च	=	पुत्रौ
भ्राता च स्वसा च	=	भ्रातरौ
माता च पिता च	=	पितरौ
श्वश्रूश्च श्वशुरश्च	=	श्वशुरौ
ब्राह्मणश्च ब्राह्मणी च	=	ब्राह्मणौ
हंसी च हंसश्च	=	हंसौ

(३) समाहार द्वन्द्व—जब द्वन्द्व समास के पदों में पृथक्-पृथक् महत्व न होकर समूह का महत्व हो, तो उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। यथा—

गंगा च शोणश्च	=	गंगाशोणम्
कृष्णा च ब्रह्मपुत्रश्च	=	कृष्णाब्रह्मपुत्रम्
कुरवश्च कुरुक्षेत्रञ्च	=	कुरुकुरुक्षेत्रम्
पाणी च पादौ च तेषां समाहारः	=	पाणिपादम्
अहिश्च नकुलञ्च	=	अहिनकुलम्
शिरश्च ग्रीवञ्च	=	शिरोग्रीवम्

तत्पुरुष-समास

तत्पुरुष समास में उत्तरपद की प्रधानता होती है। पूर्व पद प्रथमा के अतिरिक्त हर विभक्ति में प्रयुक्त होता है तथा उत्तर पद के अर्थ की व्यवस्था करता है। समास का लिंगादि उत्तर पद के अनुसार होता है। यथा—

तस्य पुरुष=तत्पुरुषः।

द्वितीया तत्पुरुष—इसमें पूर्व पद द्वितीयान्त होता है और उसका श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त, आपन्न आदि के साथ समास होता है। यथा:

ग्रामं गतः	=	ग्रामगतः
नरकं पतितः	=	नरकपतितः
दुःखं अतीतः	=	दुःखातीतः
कृष्णं श्रितः	=	कृष्णाश्रितः

दु:खम् अतीत: = दु:खातीत:
तरंगम् अत्यस्त: = तरंगात्यस्त:
सुखम् आपन्न: = सुखापन्न:
गृहम् प्राप्त: = गृहप्राप्त:
संवत्सरं वास: = संवत्सरवास:
वर्षम् भोग्य: = वर्षभोग्य:

तृतीया पुरुष—इसमें पूर्वपद तृतीयान्त होता है। यथा—

अहिना हत: = अहिहत:
देवेन दत्त: = देवदत्त:
नखैर्भिन्न: = नखभिन्न:
हरिणा त्रात: = हरित्रात:
धान्येन अर्थ: = धान्यार्थ:
मासेन पूर्व: = मासपूर्व:
स्वामिना सदृश: = स्वामिसदृश:
मात्रा सम: = मातृसम:
वाचा निपुण: = वाङ्निपुण:

चतुर्थी तत्पुरुष—इनमें पूर्वपद चतुर्थ्यन्त होता है। यथा—

हवनाय सामग्री = हवनसामग्री
गोभ्यां हितम् = गोहितम्
यूपाय दारु = यूपदारु
द्विजाय अर्थ: = द्विजार्थ:

पञ्चमी तत्पुरुष—इसमें पूर्वपद पंचम्यन्त होता है। यथा—

चौरात् भीत: = चौरभीत:
वृकेभ्यो भीत: = वृकभीत:
स्वर्गात् पतित: = स्वर्गपतित:
सुखाद् अपेत: = सुखापेत:
धर्मात् भ्रष्ट: = धर्मभ्रष्ट:

चक्रात् मुक्तः =चक्रमुक्तः

कल्पनायाः अपोढ़ः =कल्पनापोढ़ः

षष्ठी तत्पुरुष—इसमें पूर्वपद षष्ठ्यन्त होता है। यथा—

तस्य पुरुषः =तत्पुरुषः

राज्ञः पुरुषः =राजपुरुषः

चन्दनस्य गन्धः =चन्दनगन्धः

गंगायाः जलम् =गंगाजलम्

राज्ञः परिचारकः =राजपरिचारकः

सप्तमी तत्पुरुष—इसमें पूर्व-पद सप्तम्यन्त होता है। यथा—

वाचि पटुः =वाक्पटुः

वाराणस्यां सिद्धः =वाराणसीसिद्धः

आतपे शुष्कः =आतपशुष्कः

चक्रे बन्धः =चक्रबन्धः

तैले पक्वः =तैलपक्वः

न्याये निपुणः =न्यायनिपुणः

मासेदेयम् =मासदेयम्

अलुक तत्पुरुष—इस प्रकार तत्पुरुष समासों में पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता। इसीलिए इन्हें अलुक तत्पुरुष कहते हैं। यथा—

द्वितीया अलुक = धनंजयः, विश्वम्भरः।

तृतीया अलुक = जनुषान्धः, आत्मना द्वितीयः सहसाकृतम्।

चतुर्थी अलुक = परस्मैपदम्, आत्मनेपदम्।

पंचमी अलुक = अन्तिकादागतः, दूरादागतः, स्तोकान्मुक्तः।

षष्ठी अलुक = देवानांप्रियः, दिवस्पतिः, दास्याः पुत्रः, वाचस्पतिः, दिवोदासः, शुनःशेपः।

सप्तमी अलुक = खेचरः, सरसिजम्, युधिष्ठिरः।

उपपद तत्पुरुष—जिसका उत्तरपद क्रिया होता है, उसे उपपद तत्पुरुष

कहते हैं। यथा—

धर्मं जानाति = धर्मज्ञः
जलं ददाति = जलदः
कुम्भं करोति = कुम्भकारः
चित्रं करोति = चित्रकारः
कृषिं करोति = कृषकः

नञ् तत्पुरुष—जिसमें नकारात्मक 'न' पूर्वपद हो, उसे नञ् तत्पुरुष कहते हैं। यथा—

न अजः = अनजः
न वृषलः = अवृषलः
न ब्राह्मणः = अब्राह्मणः
न ज्ञानम् = अज्ञानम्
न अश्वः = अनश्वः

अव्ययी भाव

जिस समास में पूर्वपद अव्यय (उपसर्ग या क्रियाविशेषण) का संज्ञा के साथ सम्बन्ध होता है, उसे अव्ययीभाव कहते हैं। पूर्वपद का अर्थ ही प्रधान होता है। यथा—

कूलस्य समीपे = उपकूलम्
हिमस्यात्ययः = अतिहिमम्
विघ्नानामभावः = निर्विघ्नम्
रूपस्य योग्यम् = अनुरूपम्
गृहे गृहे = प्रतिगृहम्
शक्तिमनतिक्रम्य = यथाशक्तिः
रथस्य पश्चात् = अनुरथम्
गंगायाः समीपम् = उपगङ्गम्
विष्णोः पश्चात् = अनुविष्णुः

बहुव्रीहि

जिस समास में पूर्वपद उत्तरपद का विश्लेषण होता है और दोनों समस्त होकर अन्य पद के विशेषण बनते हैं, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। यथा—

शशी शेखरे यस्य सः	= शशिशेखरः
इन्द्रः शत्रुः यस्य	= इन्द्रशत्रुः
प्राप्तम् उदकम् यम्	= प्राप्तोदकः
पीतं अम्बरं यस्य सः	= पीताम्बरः
चक्रं पाणौ यस्य सः	= चक्रपाणिः
अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः	= अपुत्रः
पुत्रेण सह	= सुपुत्रः या सहपुत्रः
निर्गतं भयं यस्मात् सः	= निर्भयः
निर्गता घृणा यस्यात् सः	= निर्घृणः
दीर्घे अक्षिणी यस्य सः	= दीर्घाक्षः
धृता माला येन सः	= धृतमालः
विशाले अक्षिणी यस्याः सा	= विशालाक्षी

द्विगु

जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक होता है, उसे द्विगु कहते हैं। संख्यावाचक शब्द विशेषण होता है, अतः यह कर्मधारय का ही उपभेद है। यथा—

त्रयाणां भुवनानां समाहारः	= त्रिभुवनम्
त्रयाणां लोकानां समाहारः	= त्रिलोकी
त्रयाणां पथां समाहारः	= त्रिपथम्
अष्टानामध्यायानां समाहारः	= अष्टाध्यायी
पंचानां वटानां समाहारः	= पञ्चवटी
द्वाभ्यां गोभ्यां क्रीतः	= द्विगुः

कर्मधारय

जिस समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद दोनों विशेष्य-विशेषण भाव से संबद्ध हों अर्थात् पूर्वपद उत्तरपद की विशेषता को व्यक्त करे, उसे कर्मधारय करते हैं। दोनों पदों का सम्बन्ध क्रमशः उपमान और उपमेय का भी हो सकता है। ये दोनों पद सदैव समान कारक में होते हैं। यथा—

कृष्णः सर्पः	= कृष्णसर्पः
नीलं कमलम्	= नीलकमलम्
नीलं उत्पलम्	= नीलोत्पलम्
नीलं अम्बरम्	= नीलाम्बरम्
घन इव श्यामः	= घनश्यामः
पुरुषो व्याघ्र इव	= पुरुषव्याघ्रः
सुन्दरी भार्या	= सुन्दरभार्या
मुखं चन्द्र इव	= मुखचन्द्रः

अभ्यास

१. समास किसे कहते हैं ? उनके प्रमुख भेदों का उल्लेख कीजिये।

२. द्वन्द्व समास की परिभाषा सोदाहरण दीजिये। प्रमुख भेदों को उदाहरण देते हुए समझाइये।

३. तत्पुरुष के कितने भेद हैं ? सोदाहरण लिखिये।

४. द्विगु समास के दो उदाहरण दीजिये।

५. कर्मधारय और द्विगु में क्या समानता है ? कर्मधारय समास की विशेषताएँ सोदाहरण समझाइये।

६. बहुव्रीहि की परिभाषा देते हुए चार उदाहरण दीजिये।

७. नीचे लिखे समासों का नामोल्लेख करते हुए विग्रह कीजिये :

मित्रावरुणाभ्याम्, हरिणाङ्गना, पुत्रवात्सल्यम्, पतिहीना, काशीमगधम्, पुत्री, हंसी, पञ्चान्मुक्तः, स्यन्दनालोकभीतः, दीर्घबाहुः, कमलाक्षी, दशमुखः,

अनुज्येष्ठम्, निर्मक्षिकम्, उपनदम्, अनुगंगम्, जनाधिपः, धर्माभिषेकक्रियासमगः, वरदः, अधार्मिकः, अनुपलब्धिः, शरदिजः, वर्षेजः, पश्यतोहरः ।

८. नीचे लिखे विग्रह रूप का समास बनाकर नामोल्लेख कीजिये :

नद्याः समीपम्, मृगी च मृगाश्च, मक्षिकाणामभावः, त्रयाणाम् लोकानाम् समाहारः, सुन्दरः पन्था, नक्तं च दिवा च, मया आदिष्टः, अन्धं तमः, लब्धा श्री येन सः, अल्पा मेधा यस्य सः, अन्यत् नगरम् ।

९. नीचे लिखे वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(१) रामलक्ष्मणौ वनं गतौ ।
(२) अस्मिन् वने शुक्लकृष्ण चित्रिता अनेक विधा मृगाः संचरन्ति ।
(३) काकोलूकं स्वाभाविकं वैरं अस्ति ।
(४) विना दन्तोष्ठं मनुष्यः कुरूपो अस्ति ।
(५) अस्मिन् राज्ये चौरभयं नास्ति ।
(६) हंसौ परस्परं क्रीडतः ।
(७) अस्मिन् गेहे कृष्णा सर्पो निवसति ।
(८) सरेषु नीलोत्पलानि प्रफुल्लितानि सन्ति ।
(९) घनश्यामः कोकिलो मनो मे हरति ।
(१०) तस्मिन्नुत्सवे सर्वे नराः पीतवस्त्रा आसन ।
(११) चन्द्रकान्तियं कन्या पित्रोरानन्दं जनयति ।
(१२) पीताम्बरः कृष्णाः मम ईश्वरः अस्ति ।
(१३) विशालाक्षी सीता आगच्छति ।
(१४) सत्यं द्वापरौ कलिश्चेति चतुर्युगम् ।
(१५) उपगंगम् काशीनगरम् वर्तते ।
(१६) अधिग्राममेको महात्मा तापसो वसति ।
(१७) प्रतिगृहम् जनाः प्रसन्नाः सन्तु ।
(१८) यथाशक्ति अहं यत्नं करोमि ।
(१९) नवरात्रे दुर्गादेव्याः विशेष रूपेण पूजा भवति ।
(२०) कापुरुषेषु न कोऽपि विश्वसिति ।

C86

२०. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

(१) राम और लक्ष्मण वन में रहते हैं।
(२) प्राचीन काल में देवता और असुरों में युद्ध होता था।
(३) पिता-पुत्र में स्नेह है।
(४) ईश्वराश्रित मनुष्य को भय नहीं होता।
(५) सूर्य-ज्योति से रोग नष्ट होते हैं।
(६) धर्म-भ्रष्ट के लिए समाज में कोई आदर नहीं है।
(७) राजपुरुष नगर को जा रहा है।
(८) युधिष्ठिर सत्यवादी है।
(९) कुम्भकार घड़ा बनाता है।
(१०) घर घर में लोग सुखी हैं।
(११) मैं यथाशक्ति पढ़ता हूँ।
(१२) लोग रथ के पीछे चल रहे हैं।
(१३) गंगा के समीप एक मन्दिर है।
(१४) वर कन्या के अनुरूप है।
(१५) शशिशेखर प्रसन्न हैं।
(१६) चक्रपाणि रक्षा करते हैं।
(१७) त्रिभुवन में राम की महिमा है।
(१८) पंचवटी एक तीर्थ स्थान है।
(१९) सरोवर में नीलकमल खिलते हैं।
(२०) मेरी प्रीति मुखचन्द्र में है।

अष्टम अध्याय

प्रत्यय-प्रकरण

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं : (१) कृत् प्रत्यय (२) तद्धित प्रत्यय।

कृत्-प्रत्यय

ये प्रत्यय धातुओं के बाद लगाये जाते हैं। इनके लगने से नाम या अव्यय का रूप बनता है। जिन शब्दों के अन्त में कृत् प्रत्यय लगे हों, वे कृदन्त कहलाते हैं।

इनके निम्नलिखित प्रमुख भेद हैं :

१. शत्रन्त (शतृ-शानच्-प्रत्ययान्त)—इन दोनों प्रत्ययों का प्रयोग वर्तमान काल में होता है। इनका अर्थ 'हुआ' है। परस्मैपदी धातुओं के साथ शतृ का और आत्मनेपदी धातुओं के साथ शानच् का प्रयोग होता है।

परस्मैपदी धातुओं के साथ—शतृ का वास्तविक स्वरूप 'अत्' होता है। इसके रूप गच्छत् की तरह चलते हैं। ये विशेषण के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। अत् को पुल्लिग, प्रथमा, एकवचन में अन् हो जाता है। इस अत् से पूर्व धातु का वही अंग रहता है जो लट् लकार के प्रथम पुरुष बहुवचन के प्रत्यय से पूर्व होता है। अकारान्त अंग के अ का लोप हो जाता है। जैसे—

गम्—गच्छन्ति—गच्छ—गच्छ्+अत्—गच्छत्—पुल्लिग प्रथमा एकवचन—गच्छन्।

इसी प्रकार	भू+शतृ=भवत्—पुं०	प्रथमा एकवचन—	भवन्
	दृश्+शतृ=पश्यत्	,,	पश्यन्
	कृ+शतृ=कुर्वत्	,,	कुर्वन्
	हन्+शतृ=घ्नत्	,,	घ्नन्
	द्विष्+शतृ=द्विषत्	,,	द्विषन्
	सु+शतृ=सुन्वत्	,,	सुन्वन्

तन्+शतृ=तन्वत्—पु० प्रथमा एकवचन—तन्वन्
क्री+शतृ=क्रीणात् „ क्रीणान्
स्था+शतृ=तिष्ठत् „ तिष्ठन्
इष्+शतृ=इच्छत् „ इच्छन्
पा+शतृ=पिवत् „ पिवन्

आत्मनेपदी धातुओं के साथ—शानच् प्रत्यय का स्वरूप आन अथवा मान है। भ्वादि, दिवादि, तुदादि और चुरादि गण की आत्मनेपदी धातुओं के साथ 'मान' तथा इनसे भिन्न धातुओं के साथ 'आन' लगाया जाता है। उदाहरणार्थ—

वृत्+शानच्	वर्तमान=होता हुआ।
सह्+शानच्	सहमान=सहता हुआ।
याच्+शानच्	याचमान=माँगता हुआ।
मृ+शानच्	म्रियमाण=मरता हुआ।
चुर्+शानच्	चोरयमाण=चोरी करता हुआ।
नी+शानच्	नयमान =ले जाता हुआ।
तड्+शानच्	ताड्यमान=मारता हुआ।
ईक्ष्+शानच्	ईक्षमाण =देखता हुआ।
सेव्+शानच्	सेवमान =सेवा करता हुआ।
लभ्+शानच्	लभमान =पाता हुआ।
वृध्+शानच्	वर्धमान =बढ़ता हुआ।
मुद्+शानच्	मोदमान=प्रसन्न होता हुआ।
शी+शानच्	शयान =सोता हुआ।
अधि-इ+शानच्	अधीयान=पढ़ता हुआ।
दा+शानच्	ददान =देता हुआ।
मुष्+शानच्	मुषाण =चुराता हुआ।
ज्ञा+शानच्	जानान =जानता हुआ।
आस्+शानच्	आसीन =बैठता हुआ।
कृ+शानच्	कुर्वाण =करता हुआ।

स्तु +शानच्	स्तुवान =स्तुति करता हुआ।
क्री +शानच्	क्रीणान =खरीदता हुआ।

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए तथा रेखांकित शब्दों के प्रत्यय बताइये :—

(१) यः फलवतः वृक्षस्य छायायां तिष्ठति, स शीतलायाः छायाया आनन्दं लभते, स्वादूनि फलानि च भक्षयति।

(२) अस्मिन् सरसि विकसितानि पद्मानि सन्ति।

(३) महतां चिन्तानि सुकोमलानि वर्तन्ते।

(४) अयं बालकः सदा रुग्णो वर्तते।

(५) विविधानि कार्याणि सम्पाद्य भोजनं च कृत्वा ते शयनं कुर्वन्ति।

(६) दीपावली-दिवसस्य सायंकालीना शोभा अतुलनीया भवति।

(७) सर्वे जनाः वैरादिकं विस्मृत्य परस्परं मिलन्ति।

(८) जनाः वेषभूषादिभि सुसज्जिताः भूत्वा कन्यागृहं प्रति गमनाय समुद्यता भवन्ति।

(९) बहवः विदेशवासिनः पर्यटकाः नानाददीनदान् उत्तीर्य पर्वतान् उल्लंघ्य, समुद्रान् पारे कृत्वा आगतवन्तः सन्ति।

(१०) मनुष्यैः विविध लाभानां प्राप्तये प्रयत्नः कर्त्तव्यः।

२. क्तवत्वन्त, क्तवान्त (क्त, क्तवतु)—ये प्रत्यय भूतकाल कृदन्त हैं अथवा इनका प्रयोग भूतकाल में होता है। इनका अर्थ 'था' लिया जाता है। क्त प्रत्यय का असली रूप 'त' और क्तवतु का 'तवत्' जिसका पुल्लिग में तवान् बनता है। उदाहरणार्थ—

हस्+क्त—हसित,	हस्+क्तवतु—हसितवान्
पठ्+क्त—पठित,	पठ्+क्तवतु—पठितवान्
भू +क्त—भूत,	भू+क्तवतु—भूतवान्
रक्ष+क्त—रक्षित,	रक्ष+क्तवतु—रक्षितवान्

गम् + क्त = गत,	गम् + क्तवतु = गतवान्
नम् + क्त = नत,	नम् + क्तवतु = नतवान्
स्था + क्त = स्थित,	स्था + क्तवतु = स्थितवान्
दृश् + क्त = दृष्ट,	दृश् + क्तवतु = दृष्टवान्
स्मृ + क्त = स्मृत,	स्मृ + क्तवतु = स्मृतवान्
पा + क्त = पीत,	पा + क्तवतु = पीतवान्
जि + क्त = जित,	जि + क्तवतु = जितवान्
सेव् + क्त = सेवित,	सेव + क्तवतु = सेवितवान्
वृध् + क्त = वृद्ध, वर्धित,	वृध् + क्तवतु = वृद्धवान्
सह् + क्त = सोढ,	सह् + क्तवतु = सोढवान्
याच् + क्त = याचित,	याच् + क्तवतु = याचितवान्
भ्रस् + क्त = भूत,	भ्रस् + क्तवतु = भूतवान्
रुद् + क्त = रुदित,	रुद् + क्तवतु = रुदितवान्
स्वप् + क्त = सुप्त,	स्वप् + क्तवतु = सुप्तवान्
दा + क्त = दत्त,	दा + क्तवतु = दत्तवान्
दुह् + क्त = दुग्ध,	दुह् + क्तवतु = दुग्धवान्
लभ् + क्त = लब्ध,	लभ् + क्तवतु = लब्धवान्
हन् + क्त = हत,	हन् + क्तवतु = हतवान्
नृत् + क्त = नृत्त,	नृत् + क्तवतु = नृत्तवान्
नश् + क्त = नष्ट,	नश् + क्तवतु = नष्टवान्
युध् + क्त = युद्ध,	युध् + क्तवतु = युद्धवान्
शक् + क्त = शक्त,	शक् + क्तवतु = शक्तवान्
व्यध् + क्त = विद्ध,	विध् + क्तवतु = विद्धवान्
इष् + क्त = इष्ट,	इष् + क्तवतु = इष्टवान्
मुच् + क्त = मुक्त,	मुच् + क्तवतु = मुक्तवान्
रुध् + क्त = रुद्ध,	रुध् + क्तवतु = रुद्धवान्
भुज् + क्त = भुक्त,	भुज् + क्तवतु = भुक्तवान्

कृ + क्त = कृत,	कृ + क्तवतु = कृतवान्
भिद् + क्त = भिन्न,	भिद् + क्तवतु = भिन्नवान्
शुष् + क्त = शुष्क,	शुष् + क्तवतु = शुष्कवान्
छिद् + क्त = छिन्न,	छिद् + क्तवतु = छिन्नवान्

अभ्यास

नीचे लिखे शब्दों में प्रकृति (धातु) और प्रत्यय को पृथक्-पृथक् बतलाओ और इन शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो :

हन्तुम्, कर्तुम्, श्रुत्वा, नर्तित्वा, प्रष्टुम्, उक्त्वा, दृष्ट्वा, वक्तुम्, दोग्धुम्, हृत्वा, सेवित्वा, ग्रहीतुम्, पठितव्य, देय, नेतव्यं, हन्तव्य, वन्द्य, स्नातव्य, शोचनीय, कार्य, रमणीय, प्रष्टव्य ।

३. विधिकृदन्त—ये तव्य, अनीय और यत् प्रत्यय लगाने से बनते हैं । ये कृदन्त कर्मवाच्य क्रिया की भाँति प्रयुक्त होते हैं । इन प्रत्ययों का अर्थ विधि होता है । जैसे—उसे देना चाहिए=तेन दातव्यम् या दानीयम् । तव्यत् और अनीय प्रत्यय तो सभी धतुओं के साथ लगते हैं । जैसे—

धातु	तव्यत्	अनीय
पठ्	पठितव्य	पठनीय
गम्	गन्तव्य	गमनीय
भू	भवितव्य	भवनीय
हस्	हसितव्य	हसनीय
रक्ष्	रक्षितव्य	रक्षणीय
दृश्	द्रष्टव्य	दर्शनीय
वद्	वदितव्य	वदनीय
नम्	नन्तव्य	नमनीय
पा	पातव्य	पानीय
जि	जेतव्य	जयनीय
स्मृ	स्मर्तव्य	स्मरणीय

श्रु	श्रोतव्य	श्रवणीय
सह्	सोढव्य	सहनीय
याच्	याचितव्य	याचनीय
स्तु	स्तोतव्य	स्तवनीय
ब्रू	वक्तव्य	वचनीय
शास्	शासितव्य	शासनीय
दा	दातव्य	दानीय
भी	भेतव्य	भयनीय
स्वप्	स्वप्तव्य	स्वपनीय
विद्	वेदितव्य	वेदनीय
नृत्	नर्तितव्य	नर्तनीय
शम्	शमितव्य	शमनीय
आप्	आप्तव्य	आपनीय
प्रच्छ्	प्रष्टव्य	पृच्छनीय
कृ	कर्त्तव्य	करणीय
क्री	क्रेतव्य	क्रयणीय
ज्ञा	ज्ञातव्य	ज्ञानीय

यत् प्रत्यय से पूर्व धातुओं में निम्नलिखित विकार होते हैं :

(१) अन्त्य आ, ए, ओ को ए हो जाता है। जैसे—

दा+यत्=देय, ज्ञा+यत्=ज्ञेय
हा+यत्=हेय, पा+यत्=पेय
गै+यत्=गेय, स्था+यत्=स्थेय

(२) इ और ई को गुण, उ और ऊ को गुण या वृद्धि, ऋ और ॠ को वृद्धि हो जाती है। जैसे—

जि+यत्=जेय चि+यत्=चेय
नी+यत्=नेय श्रु+यत्=श्रव्य

भू+यत्=भव्य　　　　कृ+यत्=कार्य

हृ+यत्=हार्य　　　　स्मृ+यत्=स्मार्य

(३) उपधा के इ और उ का क्रमशः ए और ओ गुण हो जाता है, ऋ तथा दीर्घ स्वरों में कोई परिवर्तन नहीं होता । जैसे—

भिद्+यत्=भेद्य　　　　छिद्+यत्=छेद्य

बुध्+यत्=बोध्य　　　　दृश्+यत्=दृश्य

भुज्+यत्=भोज्य / भोग्य　　　　पूज्+यत्=पूज्य

(४) धातु के अन्त्य च् या ज् को कवर्ग होता है । जैसे—

सिच्+यत्=सेक्य　　　　पच्+यत्=पाक्य

युज+यत्=योग्य　　　　मृज्+यत्=मार्ग्य

वच्, यज,, त्यज् अपवाद हैं जो क्रमशः वाच्य, याज्य और त्याज्य ही बनेंगे ।

४. क्त्वान्त—धातुओं में त्वा लगाने से बनते हैं । क्तान्त के त के स्थान पर क्त्वा कर दिया जाता है । जैसे—

ज्ञा	ज्ञात	ज्ञात्वा	दा	दत्त	दत्त्वा
रुध्	रुद्ध	रुद्ध्वा	रुद्	रुदित	रुदित्वा
स्वप्	सुप्त	सुप्त्वा	ग्रह्	गृहीत	गृहीत्वा
दृश्	दृष्ट	दृष्ट्वा	लभ्	लब्ध	लब्ध्वा
कृ	कृत	कृत्वा	त्यज्	त्यक्त	त्यक्त्वा

नोट—चुरादि तथा णिजन्त धातुओं का अय त्वा के लग जाने पर बना रहता है । जैसे—

चुर्	चोरित	चोरयित्वा
कथ्	कथित	कथयित्वा
तड्	ताडित	ताडयित्वा
कृ	कृत	कारयित्वा
भू	भूत	भावयित्वा

५. तुमुन्नन्त—यह प्रत्यय धातु में 'तुम्' लगाने से बनता है। जैसे—

दा	दातुम्	रच्	रचयितुम्
पठ्	पठितुम्	रुद्	रोदितुम्
गम्	गन्तुम्	वच्	वक्तुम्
दृश्	द्रष्टुम्	शास्	शासितुम्
भू	भवितुम्	हन्	हन्तुम्
कृ	कर्तुम्	शी	शयितुम्
नी	नेतुम्	पा	पातुम्
आप्	आप्तुम्	ज्ञा	ज्ञातुम्
ग्रह्	ग्रहीतुम्	त्यज्	त्यक्तुम्
स्था	स्थातुम्	जन्	जनितुम्
स्मृ	स्मर्तुम्	छिद्	छेत्तुम्
पच्	पक्तुम्	चुर्	चोरयितुम्
मुच्	मोक्तुम्	वस्	वस्तुम्
जि	जेतुम्	श्रु	श्रोतुम्
स्पृश्	स्प्रष्टुम्	नम्	नन्तुम्
सह्	सोढुम्	बन्ध्	बन्द्धुम्

६. अ (अच्)—यह प्रत्यय दो अर्थों में प्रयुक्त होता है :

(१) कर्ता के अर्थ में पच् आदि धातुओं पर लगता है। जैसे—

पच्	पचः (पकाने वाला)	चुर्	चोरः (चोर)
भू	भवः (होने वाला)	चल्	चलः (चलने वाला)
सृप्	सर्पः (सरकने वाला)	दिव्	देवः (खेलने वाला)
चर	चरः (घूमने वाला)	धृ	धरः (रखने वाला)

(२) भाववाचक संज्ञा के अर्थ में भी निम्नलिखित धातुओं के साथ लगता है। जैसे—

जि	जयः	चि	चयः

युज्	योगः	कम्	कामः
भी	भयम्	वृष्	वर्षः

७. अ (अप्)—भाववाचक संज्ञा या क्रिया के स्थान के अर्थ में उ, ऊ, ऋ, ॠ अन्त वाले धातुओं के साथ लगता है। जैसे—

भू	भवः	वृ	वरः
स्तु	स्तवः	वि-स्तॄ	विस्तरः

८. अ (अण्)—कर्म के साथ सभी धातुओं में लगता है। जैसे—
कुम्भकार, भारहार।

९. अ (घञ्)—यह प्रायः सभी हलन्त धातुओं में लगता है; धातु के अन्त्य च् या ज् को कवर्ग हो जाता है। जैसे—

पच्	पाकः	त्यज्	त्यागः
वश्	वेशः (घर)	स्पृश्	स्पर्शः
हृ	हारः	रुज्	रोगः
भज्	भागः	कम्	कामः

१०. अक—इसको कर्ता के अर्थ में धातु पर लगाया जाता है।

नृत्	नर्तकः	पच्	पाचकः
निन्द्	निन्दकः	हिंस्	हिंसक
दृश्	दर्शकः	कृ	कारक
नी	नायकः	पू	पाव

११. अन—भाववाचक नपु० संज्ञा के अर्थ में धातु प[illegible] है। जैसे—

साध्	साधनम्	कृ	का[illegible]
दृश्	दर्शनम्	श्रु	श्र[illegible]
हस्	हसनम्	भुज्	भ[illegible]
भज्	भजनम्	वह्	

१२. इन (णिनि)—कर्तृ या शीलवाचक अर्थ में धातु पर लगाया जाता है। जैसे—

स्था	स्थायिन् (ठहरने वाला)	ग्रह्	ग्राहिन्
अप-राध्	अपराधिन्	ब्रह्म-वद्	ब्रह्मवादिन्

१३. इन (घिनण्)—कर्तृवाचक अर्थ में धातु पर लगता है। जैसे—

त्यज्	त्यागिन्	भज्	भागिन्
दुष्	दोषिन्	रञ्ज्	रागिन्
द्विष्	द्वेषिन्	द्रुह्	द्रोहिन्
युज्	योगिन्	वद्	वादिन्
प्र-वस्	प्रवासिन्	अनु-रुध्	अनुरोधिन्
प्र-मद्	प्रमादिन्	शम्	शमिन्

१४. ति (क्तिन्)—स्त्री भाववाचक अर्थ में धातु पर लगाया जाता है। जैसे—

गम्	गतिः	नम्	नतिः
कृ	कृतिः	स्तु	स्तुतिः
स्था	स्थितिः	श्रु	श्रुतिः
रम्	रतिः	गै	गीतिः

१५. तृ (तृच्)—कर्तृवाचक पु० के अर्थ में लगता है। जैसे—

हृ	हर्तृ	कृ	कर्तृ
धा	धातृ	नी	नेतृ
पु	पवितृ	गम्	गन्तृ

१६. त्र (ष्ट्रन्)—क्रिया के साधन के अर्थ में कुछ धातुओं पर लगता है। जैसे—

नी	नेत्रम्	पत्	पत्रम्
शास्	शास्त्रम्	स्तु	स्तोत्रम्
मन्	मन्त्रम्	पा	पात्रम्

१७. न (नङ्)—यज्, याच्, यत्, प्रच्छ्, रक्ष् आदि धातुओं में लगाकर संज्ञा बनाई जाती है। देखिये क्रमशः—यज्ञः, याञ्चा, यत्नः, प्रश्नः, रक्षणः।

तद्धित प्रत्यय

ये प्रत्यय अनेक कार्यों में प्रयुक्त होते हैं। ये कृत् प्रत्ययों द्वारा बने प्रातिपदिकों पर लगाये जाते हैं। निम्नलिखित मुख्य अर्थों में प्रयुक्त होते हैं :

१—अपत्यार्थ तद्धित

अ—प्रत्यय जैसे—

वसुदेव+अ=वासुदेव पर्वत+अ=पार्वती
वशिष्ठ+अ=वाशिष्ठः विश्वामित्र+अ=वैश्वामित्रः
रघु +अ=राघवः शिव+अ=शैवः
इ—मरुत +इ=मारुतिः दक्ष+इ=दाक्षिः
असुर +इ=आसुरिः दशरथ+इ=दाशरथिः
एय—कुन्ती +एय=कौन्तेयः गङ्गा +एय=गाङ्गेय
अत्रि +एय=आत्रेय मार्कण्ड +एय=मार्कण्डेयः

२—मत्वर्थीय प्रत्ययाः

इत (इतच्)—पुष्प+इतच्=पुष्पित फल+इतच्=फलित
मुद्रा+इतच्=मुद्रित सुख+इतच्=सुखित
उत्कण्ठा+इतच्=उत्कण्ठित हर्ष+इतच्=हर्षित
मूर्च्छा+इतच्=मूर्छित पिपासा+इतच्=पिपासित
दीक्षा+इतच्=दीक्षित परीक्षा+इतच्=परीक्षित

इन् (इनि)—अकारान्त प्रातिपदिकों और व्रीही, माया, शाला, शिखा, माला, मेखला, पताका, कर्मन् आदि पर यह प्रत्यय लगता है। जैसे—

दण्ड—दण्डिन् सुख—सुखिन्, दुःख—दुःखिन्, अर्थ—अर्थिन्, व्रीहिन्, मायिन्, शालिन्, शिखिन्, पताकिन्, कर्मिन् इत्यादि।

मत् (मतुप्)—प्रायः सभी प्रातिपदिकों पर लगता है। जैसे—

गो—गोमत्, ऊर्मि—ऊर्मिमत्
भूमि—भूमिमत्, मधु—मधुमत्

वत्—जिन प्रातिपदिकों के अन्त में म या अ, आ या अन्त स्पर्श वर्ण हों, उन पर वत् मत्वर्थ में लगता है। जैसे—

रूप—रूपवत्,	गन्ध—गन्धवत्
रस—रसवत्,	वर्ण—वर्णवत्
लक्ष्मी—लक्ष्मीवत्,	यशः—यशस्वत्
स्नेह—स्नेहवत्,	तडित—तडित्वत्

वन् (विनि)—माया, मेधा, स्रज् तथा सकारान्त प्रातिपदिकों पर लगता है। जैसे—

मायाविन्, मेधाविन्, स्रग्विन्, तेजस्विन्, यशस्विन्, तपस्विन्, ओजस्विन्।

३—क्रियाविशेषण प्रत्यय

तस्—अपादान के अर्थ में लगता है। जैसे—अन्यतः, अज्ञानतः, स्वरतः, वर्णतः, यतः, ततः, कुतः, सर्वतः, परितः।

त्र—अधिकरण के अर्थ में लगता है। जैसे—

सर्वत्र, तत्र, कुत्र, यत्र।

था—करण के अर्थ में प्रकार दर्शाने को लगता है। जैसे—

अन्यथा, सर्वथा, उभयथा।

दा—समय बताने में लगता है। जैसे—

सर्वदा, यदा, कदा, तदा।

धा—प्रकार के अर्थ में लगता है। जैसे—

एकधा, द्विधा, त्रिधा, सप्तधा।

वत् (वतिच्)—इव या तुल्य के अर्थ में लगता है। जैसे—

चन्द्रवत्, पितृवत्, ब्राह्मणवत्, विधिवत्।

च्वि—अभूत तद्भाव—अन्त्य अ और आ को ई आदेश, इ और उ को दीर्घ और ऋ को री आदेश होता है। अन्त्य न् और स् का लोप होकर इनके पूर्ववर्ती अ को ई हो जाता है। जैसे—

कृष्ण + च्वि = कृष्णी, कृष्णीकरोति; ग्राम + च्वि = ग्रामी, ग्रामीकरोति;

ब्रह्मन्+च्वि=ब्रह्मी, ब्रह्मीभवति; गंगा+च्वि=गंगी, गंगीस्यात्; उन्मन्+च्वि=उन्मनी, उन्मनीभवति ।

४. तारतम्यबोधक तद्धित

तर और तम प्रत्यय—इनका प्रयोग विशेषण के लिए किया जाता है। उत्तर अवस्था में विशेषण पर तर प्रत्यय लगाते हैं और उत्तम अवस्था में तम। जैसे—

गुरु—गुरुतर, गुरुतम; लघु—लघुतर, लघुतम; विद्वस्—विद्वत्तर, विद्वत्तम; दृढ़—दृढ़तर, दृढ़तम।

इयस् और इष्ठ प्रत्यय—गुणवाचक विशेषणों में इन दोनों प्रत्ययों का प्रयोग होता है। उत्तर अवस्था में 'इयस्' और उत्तम अवस्था में 'इष्ठ' प्रत्यय लगते हैं। जैसे—

महत्—महीयस्, महिष्ठ ; लघु—लघीयस्, लघिष्ठ।

यदि इयस् और इष्ठ से पूर्व मत्वर्थीय प्रत्यय 'मत्, वत्, इन्, विन्' हों, तो इनका लोप हो जाता है। जैसे—

वसुमत्—वसीयस्, वसिष्ठ। मतिमत्—मतीयस्, मतिष्ठ।

मेधाविन्—मेधीयस्, मेधिष्ठ। यशस्वत्—यशीयस्, यशिष्ठ।

धनिन्—धनीयस्, धनिष्ठ। कर्तृ—करीयस, करिष्ठ।

ईयस् और इष्ठ से पूर्व प्रातिपदिक के व्यञ्जन संयुक्त ऋ को र होता है। जैसे—कृश—क्रशीयस्, क्रशिष्ठ ; मृदु—म्रदीयस्—म्रदिष्ठ।

५. सामान्य तद्धित प्रत्यय

अ—यह निम्नलिखित अर्थों में लगता है :

(क) सम्बन्ध। जैसे—देव—दैव, शर्करा—शार्कर, निशा—नैश, संवत्सर—सांवत्सर।

(ख) स्वामी। जैसे पृथिवी—पार्थिवः, पंचाल—पाञ्चालः।

(ग) समूह। जैसे बक—बाकम्, मयूर—मायूरम्, काक—काकम्।

(घ) भाववाचक संज्ञा। जैसे कुमार—कौमारः, युवन्—यौवनम्। सुहृद्—सौहार्दम्, मृदु—मार्दवम्।

इक—यह प्रत्यय भी अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है।

(क) समय। जैसे मास—मासिकम्, वर्ष—वार्षिकम्।

(ख) आचरण। जैसे धर्म—धार्मिकः, नौ—नाविकः। वाहन—वाहनिकः।

(ग) अध्येता। जैसे वेद—वैदिकः, न्याय—नैयायिकः, इतिहास—ऐतिहासिकः, पुराण—पौराणिकः।

(घ) अस्ति। जैसे अस्ति—आस्तिकः, नास्ति [illegible]

ईन—विशेषण बनाने में प्रयुक्त होता है। जैसे—

ग्राम—ग्रामीण, नव—नवीन, कुल—कुलीन, प्राच्—प्राचीन।

ईय—विशेषण बनाने में प्रयुक्त होता है जैसे—

पर्वत—पर्वतीय, तद्—तदीय, भवत्—भवदीय, राज—राजकीय, स्व—स्वकीय, पर—परकीय।

एय—विशेषण बनाने में प्रयुक्त होता है। जैसे—

पुरुष—पौरुषेय, अतिथि—आतिथेय, पथिन्—पाथेय।

क—विशेषण बनाने में प्रयुक्त होता है। जैसे—

पुत्र—पुत्रकः, वृक्ष—वृक्षकः, अश्व—अश्वकः, शूद्र—शूद्रकः।

ता (तल)—भाववाचक संज्ञा के बनाने में प्रयुक्त होता है। जैसे—

मृदु—मृदुता, चारु—चारुता, सुन्दर—सुन्दरता, जन—जनता, बन्धु—बन्धुता।

त्व—भाववाचक संज्ञा बनाने में प्रयुक्त होता है। जैसे—

अमृत—अमृतत्व, पञ्च—पञ्चत्व, प्रभुष्य—प्रभुत्व, स्त्री—स्त्रीत्व।

त्य—सम्बन्ध दिखाने में प्रयुक्त होता है। जैसे—

दक्षिण—दाक्षिणात्य, पश्चात्—पाश्चात्य।

मय् (मयट्)—मृद्—मृण्मयः, हिरणम्—हिरण्मयः, काष्ठ—काष्ठमयः, घृत—घृतमयः, अन्न—अन्नमयः, मनस्—मनोमयः।

अभ्यास

१. कृत् प्रत्यय किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाइये ।

२. नीचे लिखी धातुओं से शतृ और शानच् प्रत्यय लगाकर कृदन्त बनाइये :

गम्, नम्, सह्, वद्, भू, दृश्, वस्, वह्, नी, सेव्, तुष्, नश्, पद्, प्रच्छ्, विद्, शम्, कथ्, हिंस्, ग्रह्, मुच्, शी, दा, धा, सृज्, पा, जन्, अर्च् ।

३. तद्धित प्रत्यय किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाइये ।

४. नीचे लिखे शब्दों में प्रत्यय अलग करके दिखाइये :

वाशिष्ठः, नैयायिकः, भजनम्, करणम्, श्रवणम्, साधनम्, यत्नः, गीतिः, प्रवासिन्, पाथेय, राजकीय, बन्धुता, अन्नमयः, गोत्वं, यशस्वत्, मेधाविन्, द्विधा, सर्वथा, यत्र, सर्वत्र, शुचीभवति ।

नवम अध्याय

स्त्रीप्रत्यय-प्रकरण

संस्कृत में पुँल्लिग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए चार मुख्य प्रत्यय ये हैं : टाप् (आ), ङीप् (ई), अ और ति।

'टाप्' (आ)

(१) अकारान्त शब्दों तथा अजादिगण के शब्दों को स्त्रीलिंग बनाने के लिए टाप् प्रत्यय लगता है। जैसे—अज—अजा, दीन—दीना, हीन—हीना, प्रथम—प्रथमा, कोकिल—कोकिला, अश्व—अश्वा, बाल—बाला, सुत—सुता, वत्स—वत्सा, कांत—कांता, शांत—शांता, पठित—पठिता, पंडित—पंडिता।

(२) जिन शब्दों के अंत में क हो उनमें भी आ लगाने से स्त्रीलिंग बनता है। क से पूर्व अ को इ कर दिया जाता है। जैसे—दारक—दारिका, पाठक—पाठिका, अध्यापक—अध्यापिका, याचक—याचिका, पाचक—पाचिका, नायक—नायिका, परिव्राजक—परिव्राजिका, साधक—साधिका, दर्शक—दर्शिका, मूषक—मूषिका, पालक—पालिका।

'ङीप्' (ई)

(१) गौर आदि अकारान्त पुँल्लिग शब्दों में ङीप् (ई) प्रत्यय लगता है। जैसे—गौरी, सुन्दरी, मातामही, पारवती, पितामही। वृद्धावस्था को छोड़कर अन्य अवस्थाओं के वाचक शब्दों के साथ ङीप् लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है। जैसे—कुमार—कुमारी, तरुण—तरुणी, किशोर—किशोरी, पुत्र—पुत्री, षोडश—षोडशी, चतुर्थ—चतुर्थी आदि।

(२) ह्रस्व ऋकारान्त, नकारान्त, वत्-मत्-प्रत्ययान्त, वस्, ईयस्, एयस्, और अच्-प्रत्ययान्त शब्दों में भी 'ई' लगता है। जैसे—

कर्तृ—कर्त्री, दातृ—दात्री, गन्तृ—गन्त्री, राजन्—राज्ञी, मानिन्—मानिनी, श्वन्—शुनी, धीमत्—धीमती, विद्वस्—विदुषी, गरीयस्—गरीयसी,

भवत्—भवती, बलवत्—बलवती, श्रीमत्—श्रीमती, श्रेयस्—श्रेयसी, प्राच्—प्राची, प्रत्यच्—प्रतीची, उदच्—उदीची।

(३) शत्रन्त शब्दों में भी 'ई' (ङीप्) लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है। जैसे—गच्छन्ती, पश्यन्ती, पठन्ती, जिघ्रती, जाग्रती, बिभ्यती, ददती, नश्यन्ती, आप्नुवन्ती, इच्छन्ती, कुर्वन्ती आदि।

(४) जातिवाचक अकारान्त के बाद 'ई' (ङीप्) लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है। जैसे—ब्राह्मणी, मृगी, हंसी, काकी, शूकरी, मयूरी, सिंही, बकी, महिषी, बिडाली, कपोती।

(५) गुणवाचक उकारान्त शब्दों में 'ई' (ङीप्) लगने से स्त्रीलिंग रूप बनते हैं। जैसे—गुरु—गुर्वी, मृदु-मृद्वी, तनु—तन्वी, साधु—साध्वी, लघु—लघ्वी।

(६) निम्नलिखित शब्दों के आगे 'आनी' लगाकर ङीप (ई) प्रत्यय लगता है। जैसे—क्षत्रिय—क्षत्रियाणी, इन्द्र—इन्द्राणी, भव—भवानी, रुद्र—रुद्राणी, वरुण—वरुणानी, मातुल—मातुलानी, आचार्य—आचार्याणी।

'ऊ' प्रत्यय

यह उकारान्त शब्दों तथा श्वशुर शब्द के बाद लगता है। जैसे—पंगु=पंगू, कुरु=कुरू, श्वशुर=श्वश्रू।

'ति' प्रत्यय

युवन् शब्द के साथ ति प्रत्यय आता है। जैसे—युवन्+ति=युवति।

अभ्यास

१. नीचे लिखे शब्दों में से प्रत्येक के स्त्री-प्रत्ययान्त रूप लिखो :

विद्वस्, पितामह, रजक, कुमार, वृद्ध, क्षत्रिय, लघु, पंगु, श्वशुर, युवन्, राजन्, अश्व, गायक, शूद्र, मातुल, मृदु, पश्यत्।

२. नीचे लिखे स्त्री-प्रत्ययान्त शब्दों के प्रत्यय बताइये। जैसे—

वृद्धिमति, लघ्वी, महती, क्षयिणी, मैत्री, बलवती, जोपन्ती, तपोधना, कारिका, साधिका।

अध्याय दशम

धातु-प्रकरण

क्रिया, विशेषण, संज्ञा, सर्वनाम और अव्यय इत्यादि सभी धातुओं से व्युत्पन्न हुए हैं। साधारण रूप में क्रिया शब्दों को धातु कहा जाता है लेकिन वास्तव में धातु से ही क्रिया-शब्द निकले हैं। संस्कृत में रचना के अनुसार धातुओं को दस गणों में बांटा गया है और इनके रूप दस लकारों में चलते हैं। दस गण इस प्रकार हैं :

१. भ्वादिगण—भू, हस्, पठ्, रक्ष्, वद्, पच्, नम्, गम्, दृश्, सद्, स्था, स्मृ, पा, जि, सेव्, लभ्, वृध्, मुद्, सह्, ईक्ष, याच्, नी, हृ इत्यादि।

२. अदादिगण—अद्, अस्, स्तु, ब्रू, रुद्, दुह्, जागृ, स्वप्, हन्, विद्, शास्, इ, आस्, शी आदि।

३. जुहोत्यादिगण—हु, भृ, दा, भी, हा इत्यादि।

४. दिवादिगण—दिव्, कुप्, शुष्, शुध्, नश्, नृत्, शम्, व्यध्, भ्रम्, विद्, युध्, मन्, जन् इत्यादि।

५. स्वादिगण—सु, आप्, शक् इत्यादि।

६. तुदादिगण—तुद्, पृच्छ्, सृज्, इष्, स्पृश्, मृ, क्षिप्, विद् (विन्द्), मुच् इत्यादि।

७. रुधादिगण—रुध्, भुज्, युज् इत्यादि।

८. तनादिगण—तन्, कृ इत्यादि।

९. क्र्यादिगण—क्री, ग्रह्, ज्ञा, मुष्, बन्ध् इत्यादि।

१०. चुरादिगण—चुर्, चिन्त्, तड्, कथ्, भक्ष्, दण्ड् इत्यादि।

यद्यपि संस्कृत में रूप दस लकारों में बनते हैं लेकिन मुख्य लकार केवल पांच हैं—लट् (वर्तमान), लृट् (भविष्यत्), लोट् (आज्ञा), लङ् (भूतकाल) और विधिलिङ् (विधि)। संस्कृत में क्रियाओं के तीन पुरुष और प्रत्येक

पुरुष में तीन वचन होते हैं। कहने वाला या सुनाने वाला उत्तम पुरुष, सुनने वाला मध्यम पुरुष और इन दोनों से भिन्न व्यक्ति या वस्तु प्रथम पुरुष के अन्तर्गत माने जाते हैं। एक वस्तु या व्यक्ति के लिए एकवचन, दो के लिए द्विवचन और अधिक के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। प्रत्येक गण में कुछ धातुएँ परस्मैपदी, कुछ आत्मनेपदी और कुछ उभयपदी होती हैं।

भ्वादिगण

(क) परस्मैपदी धातुएँ

'भू'

लट्

	एकवचन	द्विव०	बहुव०
प्र० पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
म० ,,	भवसि	भवथः	भवथ
उ० ,,	भवामि	भवावः	भवामः

लृट्

प्र० पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० ,,	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० ,,	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्याम

लोट्

प्र० पुरुष	भवतु, भवतात्	भवताम्	भवन्तु
म० ,,	भव, भवतात्	भवतम्	भवत
उ० ,,	भवानि	भवाव	भवाम

लङ्

प्र० पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म० ,,	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ० ,,	अभवम्	अभवाव	अभवाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
म० ,,	भवेः	भवेतम्	भवेत
उ० ,,	भवेयम्	भवेव	भवेम

'हस्'

लट्

प्र० पुरुष	हसति	हसतः	हसन्ति
म० ,,	हससि	हसथः	हसथ
उ० ,,	हसामि	हसावः	हसामः

लृट्

प्र० पुरुष	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
म० ,,	हसिष्यसि	हसिष्यथः	हसिष्यथ
उ० ,,	हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	हसतु, हसतात्	हसताम्	हसन्तु
म० ,,	हस, हसतात्	हसतम्	हसत
उ० ,,	हसानि	हसाव	हसाम

लङ्

प्र० पुरुष	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
म० ,,	अहसः	अहसतम्	अहसत
उ० ,,	अहसम	अहसाव	अहसाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	हसेत्	हसेताम्	हसेयुः
म० ,,	हसेः	हसेतम	हसेत
उ० ,,	हसेयम्	हसेव	हसेम

'पठ्' (पढ़ना)

लट्

प्र० पुरुष	पठति	पठथः	पठन्तिः
म० ,,	पठसि	पठथः	पठथ
उ० ,,	पठामि	पठावः	पठामः

लृट्

प्र० पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्तिः
म० ,,	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उ० ,,	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	पठतु, पठतात्	पठताम्	पठन्तु
म० ,,	पठ, पठतात्	पठतम्	पठत
उ० ,,	पठानि	पठाव	पठाम

लङ्

प्र० पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म० ,,	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ० ,,	अपठम्	अपठाव	अपठाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
म० ,,	पठेः	पठेतम्	पठेत
उ० ,,	पठेयम्	पठेव	पठेम

'रक्ष्' (रक्षा करना)

लट्

प्र० पुरुष	रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति
म० ,,	रक्षसि	रक्षथः	रक्षथ
उ० ,,	रक्षामि	रक्षावः	रक्षामः

लृट्

प्र० पुरुष	रक्षिष्यति	रक्षिष्यतः	रक्षिष्यन्ति
म० ,,	रक्षिष्यसि	रक्षिष्यथः	रक्षिष्यथ
उ० ,,	रक्षिष्यामि	रक्षिष्यावः	रक्षिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	रक्षतु, रक्षतात्	रक्षाताम्	रक्षन्तु
म० ,,	रक्ष, रक्षतात्	रक्षतम्	रक्षत
उ० ,,	रक्षाणि	रक्षाव	रक्षाम

लङ्

प्र० पुरुष	अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्
म० ,,	अरक्षः	अरक्षतम्	अरक्षत
उ० ,,	अरक्षम्	अरक्षाव	अरक्षाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	रक्षेत्	रक्षेताम्	रक्षेयुः
म० ,,	रक्षेः	रक्षेतम्	रक्षेत
उ० ,,	रक्षेयम्	रक्षेव	रक्षेम

'वद्' (बोलना)

लट्

प्र० पुरुष	वदति	वदतः	वदन्ति
म० ,,	वदसि	वदथः	वदथ
उ० ,,	वदामि	वदावः	वदामः

लृट्

प्र० पुरुष	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
म० ,,	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ
उ० ,,	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	वदतु, वदतात्	वदताम्	वदन्तु
म० ,,	वद, वदतात्	वदतम्	वदत
उ० ,,	वदानि	वदाव	वदाम

लङ्

प्र० पुरुष	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
म० ,,	अवदः	अवदतम्	अवदत
उ० ,,	अवदम्	अवदाव	अवदाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः
म० ,,	वदेः	वदेतम्	वदेत
उ० ,,	वदेयम्	वदेव	वदेम

'पच्' (पकाना)

लट्

प्र० पुरुष	पचति	पचतः	पचन्ति
म० ,,	पचसि	पचथः	पचथ
उ० ,,	पचामि	पचावः	पचामः

लृट्

प्र० पुरुष	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
म० ,,	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उ० ,,	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	पचतु	पचताम्	पचन्तु
म० ,,	पच, पचतात्	पचतम्	पचत
उ० ,,	पचानि	पचाव	पचाम

लङ्

प्र० पुरुष	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
म० ,,	अपच	अपचतम्	अपचत
उ० ,,	अपचम्	अपचाव	अपचाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
म० ,,	पचेः	पचेतम्	पचेत
उ० ,,	पचेयम्	पचेव	पचेम

'नम्' (झुकना)

लट्

प्र० पुरुष	नमति	नमतः	नमन्ति
म० ,,	नमसि	नमथः	नमथ
उ० ,,	नमामि	नमावः	नमामः

लृट्

प्र० पुरुष	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
म० ,,	नंस्यसि	नंस्यथः	नंस्यथ
उ० ,,	नंस्यामि	नंस्यावः	नंस्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	नमतु,नमतात्	नमताम्	नमन्तु
म० ,,	नम,नमतात्	नमतम्	नमत
उ० ,,	नमानि	नमाव	नमाम

लङ्

प्र० पुरुष	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
म० ,,	अनमः	अनमतम्	अनमत
उ० ,,	अनमम्	अनमाव	अनमाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	नमेत्	नमेताम्	नमेयु:
म० ,,	नमे:	नमेतम्	नमेत
उ० ,,	नमेयम्	नमेव	नमेम

'गम्' (गच्छ्)

लट्

प्र० पुरुष	गच्छति	गच्छत:	गच्छन्ति
म० ,,	गच्छसि	गच्छथ:	गच्छथ
उ० ,,	गच्छामि	गच्छाव:	गच्छाम:

लृट्

प्र० पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यत:	गमिष्यन्ति
म० ,,	गमिष्यसि	गमिष्यथ:	गमिष्यथ
उ० ,,	गमिष्यामि	गमिष्याव:	गमिष्याम:

लोट्

प्र० पुरुष	गच्छतु, गच्छतात्	गच्छताम्	गच्छन्तु
म० ,,	गच्छ, गच्छतात्	गच्छतम्	गच्छत
उ० ,,	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

लङ्

प्र० पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
म० ,,	अगच्छ:	अगच्छतम्	अगच्छत
उ० ,,	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयु:
म० ,,	गच्छे:	गच्छेतम्	गच्छेत
उ० ,,	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

'दृश्' (पश्य्)

लट्

प्र० पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
म० ,,	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उ० ,,	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लृट्

प्र० पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
म० ,,	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उ० ,,	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	पश्यतु, पश्यतात्,	पश्यताम्	पश्यन्तु
म० ,,	पश्य, पश्यतात्	पश्यतम्	पश्यत
उ० ,,	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
म० ,,	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उ० ,,	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
म० ,,	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उ० ,,	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

'सद्' (सीद्)—(बैठना, दुःखी होना)

लट्

प्र० पुरुष	सीदति	सीदतः	सीदन्ति
म० ,,	सीदसि	सीदथः	सीदथ
उ० ,,	सीदामि	सीदावः	सीदामः

लृट्

प्र० पुरुष	सत्स्यति	सत्स्यतः	सत्स्यन्ति
म० ,,	सत्स्यसि	सत्स्यथः	सत्स्यथ
उ० ,,	सत्स्यामि	सत्स्यावः	सत्स्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	सीदतु, सीदतात्	सीदताम्	सीदन्तु
म० ,,	सीद, सीदतात्	सीदतम्	सीदत
उ० ,,	सीदानि	सीदाव	सीदाम

लङ्

प्र० पुरुष	असीदत्	असीदताम्	असीदन्
म० ,,	असीदः	असीदतम्	असीदत
उ० ,,	असीदम्	असीदाव	असीदाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	सीदेत्	सीदेताम्	सीदेयुः
म० ,,	सीदेः	सीदेतम्	सीदेत
उ० ,,	सीदेयम्	सीदेव	सीदेम

'स्था' (तिष्ठ्) (ठहरना)

लट्

प्र० पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
म० ,,	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उ० ,,	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लृट्

प्र० पुरुष	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
म० ,,	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उ० ,,	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	तिष्ठतु, तिष्ठतात्	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
म० ,,	तिष्ठ, तिष्ठतात्	तिष्ठम्	तिष्ठत
उ० ,,	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

लङ्

प्र० पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
म० ,,	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उ० ,,	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम	तिष्ठेयुः
म० ,,	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उ० ,,	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

'स्मृ' (याद करना)

लट्

प्र० पुरुष	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
म० ,,	स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ
उ० ,,	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः

लृट्

प्र० पुरुष	स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति
म० ,,	स्मरिष्यसि	स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ
उ० ,,	स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	स्मरतु, स्मरतात्	स्मरताम्	स्मरन्तु
म० ,,	स्मर, स्मरतात्	स्मरतम्	स्मरत
उ० ,,	स्मराणि	स्मराव	स्मराम

लङ्

प्र० पुरुष	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
म० ,,	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
उ० ,,	अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
म० ,,	स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत
उ० ,,	स्मरेयम्	स्मरेव	स्मरेम

'पा' (पिब्) (पीना)

लट्

प्र० पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
म० ,,	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उ० ,,	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लृट्

प्र० पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
म० ,,	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उ० ,,	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	पिबतु, पिबतात्	पिबताम्	पिबन्तु
म० ,,	पिब, पिबतात्	पिबतम्	पिबत
उ० ,,	पिबानि	पिबाव	पिबाम

लङ्

प्र० पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
म० ,,	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उ० ,,	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	पिवेत्	पिवेताम्	पिवेयुः
म० ,,	पिवे	पिवेतम्	पिवेत
उ० ,,	पिवेयम्	पिवेव	पिवेम

'जि' (जीतना)

लट्

प्र० पुरुष	जयति	जयतः	जयन्ति
म० ,,	जयसि	जयथः	जयथ
उ० ,,	जयामि	जयावः	जयामः

लृट्

प्र० पुरुष	जेष्यति	जेष्यतः	जेष्यन्ति
म० ,,	जेष्यसि	जेष्यथः	जेष्यथ
उ० ,,	जेष्यामि	जेष्यावः	जेष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	जयतु, जयतात्	जयताम्	जयथ
म० ,,	जय, जयतात्	जयताम्	जयन्तु
उ० ,,	जयानि	जयाव	जयाम

लङ्

प्र० पुरुष	अजयत	अजयताम्	अजयन्
म० ,,	अजयः	अजयतम्	अजयत
उ० ,,	अजयम्	अजयाव	अजयाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः
म० ,,	जयेः	जयेतम्	जयेत
उ० ,,	जयेयम्	जयेव	जयेम

(ख) आत्मनेपदी धातु

'सेव्' (सेवा करना)

लट्

प्र० पुरुष	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
म० „	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उ० „	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लृट्

प्र० पुरुष	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
म० „	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उ० „	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
म० „	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उ० „	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

लङ्

प्र० पुरुष	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
म० „	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उ० „	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
म० „	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उ० „	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

'लभ्' (पाना)

लट्

प्र० पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
म० „	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ० „	लभे	लभावहे	लभामहे

लृट्

प्र० पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म० ,,	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ० ,,	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म० ,,	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ० ,,	लभै	लभावहै	लभामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
म० ,,	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उ० ,,	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
म० ,,	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ० ,,	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

'वृत्' (होना)

लट्

प्र० पुरुष	वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते
म० ,,	वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे
उ० ,,	वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे

लृट्

प्र० पुरुष	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते	वर्तिष्यन्ते
म० ,,	वर्तिष्यसे	वर्तिष्येथे	वर्तिष्यध्वे
उ० ,,	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे	वर्तिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
म० ,,	वर्तस्व	वर्तेथाम्	वर्तध्वम्
उ० ,,	वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
म० ,,	अवर्तथाः	अवर्तेथाम्	अवर्तध्वम्
उ० ,,	अवर्ते	अवर्तावहि	अवर्तामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
म० ,,	वर्तेथाः	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्
उ० ,,	वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि

'वृन्' (बढ़ना)

लट्

प्र० पुरुष	वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते
म० ,,	वर्धसे	वर्धेथे	वर्धध्वे
उ० ,,	वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे

लृट्

प्र० पुरुष	वर्धिष्यते	वर्धिष्येते	वर्धिष्यन्ते
म० ,,	वर्धिष्यसे	वर्धिष्येथे	वर्धिष्यध्वे
उ० ,,	वर्धिष्ये	वर्धिष्यावहे	वर्धिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	वर्धताम्	वर्धेताम्	वर्धन्ताम्
म० ,,	वर्धस्व	वर्धेथाम्	वर्धध्वम्
उ० ,,	वर्धै	वर्धावहै	वर्धामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्त
म० "	अवर्धथाः	अवर्धेथाम्	अवर्धध्वम्
उ० "	अवर्धे	अवर्धावहि	अवर्धामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
म० "	वर्धेथाः	वर्धेयाथाम्	वर्धेध्वम्
उ० "	वर्धेया:	वर्धेवहि	वर्धेमहि

'मुद्' (प्रसन्न होना)

लट्

प्र० पुरुष	मोदते	मोदेते	मोदन्ते
म० "	मोदसे	मोदेथे	मोदध्वे
उ० "	मोदे	मोदावहे	मोदामहे

लृट्

प्र० पुरुष	मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते
म० "	मोदिष्यसे	मोदिष्येथे	मोदिष्यध्वे
उ० "	मोदिष्ये	मोदिष्यावहे	मोदिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्
म० "	मोदस्व	मोदेथाम्	मोदध्वम्
उ० "	मोदै	मोदावहै	मोदामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त
म० "	अमोदथाः	अमोदेथाम्	अमोदध्वम्
उ० "	अमोदे	अमोदावहि	अमोदामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्
म० "	मोदेथाः	मोदेयाथाम्	मोदेध्वम्
उ० "	मोदेय	मोदेवहि	मोदेमहि

'सह्' (सहन करना)

लट्

प्र० पुरुष	सहते	सहेते	सहन्ते
म० "	सहसे	सहेथे	सहध्वे
उ० "	सहे	सहावहे	सहामहे

लृट्

प्र० पुरुष	सहिष्यते	सहिष्येते	सहिष्यन्ते
म० "	सहिष्यसे	सहिष्येथे	सहिष्यध्वे
उ० "	सहिष्ये	सहिष्यावहे	सहिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	सहताम्	सहेताम्	सहन्ताम्
म० "	सहस्व	सहेथाम्	सहध्वम्
उ० "	सहै	सहावहै	सहामहै

लङ्

प्र० पुरुष	असहत	असहेताम्	असहन्त
म० "	असहथाः	असहेथाम्	असहध्वम्
उ० "	असहे	असहावहि	असहामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	सहेत	सहेयाताम्	सहेरन्
म० "	सहेथाः	सहेयाथाम्	सहेध्वम्
उ० "	सहेय	सहेवहि	सहेमहि

'ईक्ष' (देखना)

लट्

प्र० पुरुष	ईक्षते	ईक्षेते	ईक्षन्ते
म० "	ईक्षसे	ईक्षेथे	ईक्षध्वे
उ० "	ईक्षे	ईक्षावहे	ईक्षामहे

लृट्

प्र० पुरुष	ईक्षिष्यते	ईक्षिष्येते	ईक्षिष्यन्ते
म० "	ईक्षिष्यसे	ईक्षिष्येथे	ईक्षिष्यध्वे
उ० "	ईक्षिष्ये	ईक्षिष्यावहे	ईक्षिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	ईक्षताम्	इक्षेताम्	ईक्षन्ताम्
म० "	ईक्षस्व	ईक्षथाम्	ईक्षध्वम्
उ० "	ईक्षै	ईक्षावहै	ईक्षामहै

लङ्

प्र० पुरुष	ऐक्षत	ऐक्षेताम्	ऐक्षन्त
म० "	ऐक्षथाः	ऐक्षेथाम्	ऐक्षध्वम्
उ० "	ऐक्षे	ऐक्षावहि	ऐक्षामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	ईक्षेत	ईक्षेयाताम्	ईक्षेरन्
म० "	ईक्षेथाः	ईक्षेयाथाम्	ईक्षेध्वम्
उ० "	ईक्षेय	ईक्षेवहि	ईक्षेमहि

(ग) उभयपदी

'याच्' (मांगना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	याचति	याचतः	याचन्ति
म० "	याचसि	याचथः	याचथ
उ० "	याचामि	याचावः	याचामः

लृट्

प्र० पुरुष	याचिष्यति	याचिष्यतः	याचिष्यन्ति
म० "	याचिष्यसि	याचिष्यथः	याचिष्यथ
उ० "	याचिष्यामि	याचिष्यावः	याचिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	याचतु, याचतात्	याचताम्	याचन्तु
म० ,,	याच, याचतात्	याचतम्	याचत
उ० ,,	याचानि	याचाव	याचाम

लङ्

प्र० पुरुष	अयाचत्	अयाचताम्	अयाचन्
म० ,,	अयाचः	अयाचतम्	अयाचत
उ० ,,	अयाचम्	अयाचाव	अयाचाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	याचेत्	याचेताम्	याचेयुः
म० ,,	याचेः	याचेतम्	याचेत
उ० ,,	याचेयम्	याचेव	याचेम

'याच्' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	याचते	याचेते	याचन्ते
म० ,,	याचसे	याचेथे	याचध्वे
उ० ,,	याचे	याचावहे	याचामहे

लृट्

प्र० पुरुष	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
म० ,,	याचिष्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
उ० ,,	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
म० ,,	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
उ० ,,	याचै	याचावहै	याचामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
म० ,,	अयाचथा:	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
उ० ,,	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्
म० ,,	याचेथा:	याचेयाथाम्	याचेध्वम्
उ० ,,	याचेय	याचेवहि	याचेमहि

'नी' (ले जाना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	नयति	नयत:	नयन्ति
म० ,,	नयसि	नयथ:	नयथ
उ० ,,	नयामि	नयाव:	नयाम:

लृट्

प्र० पुरुष	नेष्यति	नेष्यत:	नेष्यन्ति
म० ,,	नेष्यसि	नेष्यथ:	नेष्यथ
उ० ,,	नेष्यामि	नेष्याव:	नेष्याम:

लोट्

प्र० पुरुष	नयतु, नयतात्	नयताम्	नयन्तु
म० ,,	नय,नयतात्	नयतम्	नयत
उ० ,,	नयानि	नयाव	नयाम

लङ्

प्रथम पुरुष	अनयत	अनयताम	अनयन्
म० ,,	अनय:	अनयतम्	अनयत
उ० ,,	अनयम्	अनयाव	अनयाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
म० ,,	नयेः	नयेतम्	नयेत
उ० ,,	नयेयम्	नयेव	नयेम

'नी' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	नयते	नयेते	नयन्ते
म० ,,	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उ० ,,	नये	नयावहे	नयामहे

लृट्

प्र० पुरुष	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
म० ,,	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उ० ,,	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
म० ,,	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उ० ,,	नयै	नयावहै	नयामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
म० ,,	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उ० ,,	अनये	अनयावहि	अनयामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
म० ,,	नयेथाः	नयेयाथान्	नयेध्वम्
उ० ,,	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

'हृ' (चोरी करना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	हरति	हरतः	हरन्ति

म० पुरुष	हरसि	हरथः	हरथ
उ० ,,	हरामि	हरावः	हरामः

लृट्

प्र० पुरुष	हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति
म० ,,	हरिष्यसि	हरिष्यथः	हरिष्यथ
उ० ,,	हरिष्यामि	हरिष्यावः	हरिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	हरतु, हरतात्	हरताम्	हरन्तु
म० ,,	हर, हरतात्	हरतम्	हरत
उ० ,,	हराणि	हराव	हराम

लङ्

प्र० पुरुष	अहरत्	अहरताम्	अहरन्
म० ,,	अहरः	अहरतम्	अहरत
उ० ,,	अहरम्	अहराव	अहराम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	हरेत्	हरेताम्	हरेयुः
म० ,,	हरेः	हरेतम्	हरेत
उ० ,,	हरेयम	हरेव	हरेम

'हृ' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	हरते	हरेते	हरन्ते
म० ,,	हरसे	हरेथे	हरध्वे
उ० ,,	हरे	हरावहे	हरामहे

लृट्

प्र० पुरुष	हरिष्यते	हरिष्येते	हरिष्यन्ते
म० ,,	हरिष्यसे	हरिष्येथे	हरिष्यध्वे
उ० ,,	हरिष्ये	हरिष्यावहे	हरिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्
म० ,,	हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्
उ० ,,	हरै	हरावहै	हरामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अहरत	अहरेताम्	अहरन्त
म० ,,	अहरथाः	अहरेथाम्	अहरध्वम्
उ० ,,	अहरे	अहरावहि	अहरामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	हरेत	हरेयाताम्	हरेरन्
म० ,,	हरेथाः	हरेयाथाम्	हरेध्वम्
उ० ,,	हरेय	हरेवहि	हरेमहि

भ्वादिगण की अन्य धातुएँ
परस्मैपदी

धाव् (दौड़ना)—धावति, धाविष्यति, धावतु, अधावत्, धावेत् ।

खाद् (खाना)—खादति, खादिष्यति, खादतु, अखादत्, खादेत् ।

क्रीड् (खेलना)—क्रीडति, क्रीडिष्यति, क्रीडतु, अक्रीडत्, क्रीडेत् ।

पत् (गिरना)—पतति, पतिष्यति, पततु, अपतत्, पतेत् ।

अर्च् (पूजा करना)—अर्चति, अर्चिष्यति, अर्चतु, आर्चत्, अर्चेत् ।

अर्ज् (कमाना)—अर्जति, अर्जिष्यति, अर्जतु, आर्जत्, अर्जेत् ।

वस् (रहना)—वसति, वत्स्यति, वसतु, अवसत्, वसेत् ।

यच्छ् (देना)—यच्छति, दास्यति, यच्छतु, अयच्छत्, यच्छेत् ।

जप् (जपना)—जपति, जपिष्यति, जपतु, अजपत्, जपेत् ।

चल् (चलना)—चलति, चलिष्यति, चलतु, अचलत्, चलेत् ।

घ्रा (सूँघना)—जिघ्रति, घ्रास्यति, जिघ्रतु, अजिघ्रत्, जिघ्रेत् ।

तॄ (तरना)—तरति, तरिष्यति, तरतु, अतरत्, तरेत् ।

सृ (सरकना)—सरति, सरिष्यति, सरतु, असरत्, सरेत् ।

शुच् (शोक करना)—शोचति, शोचिष्यति, शोचतु, अशोचत्, शोचेत् ।
ज्वल् (जलना)—ज्वलति, ज्वलिष्यति, ज्वलतु, अज्वलत्, ज्वलेत् ।
दह् (जलना)—दहति, धक्ष्यति, दहतु, अदहत्, दहेत् ।
निन्द् (निन्दा करना)—निन्दति, निन्दिष्यति, निन्दतु, अनिन्दत्, निन्देत् ।
भ्रम् (घूमना)—भ्रमति, भ्रमिष्यति, भ्रमतु, अभ्रमत्, भ्रमेत् ।
श्रु (सुनना)—शृणोति, श्रोष्यति, शृणोतु, अशृणोत्, शृणुयात् ।
वाञ्छ् (चाहना)—वाञ्छति, वाञ्छिष्यति, वाञ्छतु, अवाञ्छत्, वांछेत् ।
काङ्क्ष् (चाहना)—काङ्क्षति, काङ्क्षिष्यति, काङ्क्षतु, अकाङ्क्षत्, काङ्क्षेत् ।

आत्मनेपदी

कम्प् (काँपना)—कम्पते, कम्पिष्यते, कम्पताम्, अकम्पत, कम्पेत ।
यत् (यत्न करना)—यतते, यतिष्यते, यतताम्, अयतत, यतेत ।
कल्प् (समर्थ होना)—कल्पते, कल्पिष्यते, कल्पताम्, अकल्पत, कल्पेत ।
शङ्क् (शंका करना)—शङ्कते, शङ्किष्यते, शङ्कताम्, अशङ्कत, शङ्केत ।
ध्वंस् (नष्ट होना)—ध्वंसते, ध्वंसिष्यते, ध्वंसताम्, अध्वंसत, ध्वंसेत ।
क्षम् (क्षमा करना)—क्षमते, क्षंस्यते, क्षमताम्, अक्षमत, क्षमेत ।
भाष् (बोलना)—भाषते, भाषिष्यते, भाषताम्, अभाषत, भाषेत ।
श्लघ् (प्रशंसा करना)—श्लाघते, श्लाघिष्यते, श्लाघताम्, अश्लाघत, श्लाघेत ।
शुभ् (शोभा पाना)—शोभते, शोभिष्यते, शोभताम्, अशोभत, शोभेत ।
स्पर्ध (स्पर्धा करना)—स्पर्धते, स्पर्धिष्यथे, स्पर्धताम्, अस्पर्धत, स्पर्धेत ।
एध् (बढ़ना)—एधते, एधिष्यते, एधताम्, ऐधत, एधेत ।
शिक्ष् (सीखना)—शिक्षते, शिक्षिष्यते, शिक्षताम्, अशिक्षत, शिक्षेत ।
डी (उड़ना)—डयते, डयिष्यते, डयताम्, अडयत, डयेत ।
वदि (वन्द) (नमस्कार करना)—वन्दते, वन्दिष्यते, वन्दताम्, अवन्दत, वन्देत ।
स्रंस् (खिसकना)—स्रंसते, स्रंसिष्यते, स्रंसताम्, अस्रंसत, स्रंसेत ।

भ्राज् (शोभा देना)—भ्राजते, भ्राजिष्यते, भ्राजताम्, अभ्राजत, भ्राजेत।

आरभ् (आरम्भ करना)—आरभते, आरप्स्यते, आरभताम्, आरभत, आरभेत।

उभयपदी

बुध् (जानना) (परस्मैपदी)—बोधति, बोधिष्यति, बोधतु, अबोधत, बोधेत।

बुध् (आत्मनेपदी)—बोधते, बोधिष्यते, बोधताम्, अबोधत, बोधेत।

वह् (ले जाना) (परस्मैपदी)—वहति, वक्ष्यति, वहतु, अवहत, वहेत।

वह् (आत्मनेपदी)—वहते, वक्ष्यते, वहताम्, अवहत, वहेत।

अभ्यास

१. निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखो :—

दृश् (लट्), स्तु (लङ्), ग्रह् (लृट्), लभ् (लट्), दा (लोट्), कथ् (लृट्), भी (लोट्), स्था (लोट्), पा (लङ्), जि (विधिलिङ्), सेव (लङ्), ईक्ष् (लृट्), वृध् (लोट्)।

२. निम्नलिखित क्रिया-रूपों के पुरुष, वचन और लकार बताओ :—

भ्राजताम्, अभवाम, रक्षाणि, नंस्यन्ति, लप्स्यध्वे, वर्तेरन्, वर्तस्व, वर्धै, नेष्यति, हरेः, अलभथाः, वदतात्, पक्ष्यामि, अनमत्, जयानि, सेवेय, द्रक्ष्यामि।

३. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो :—

(१) कल राम अयोध्या के राजा होंगे। (२) तुम्हें आज हँसना चाहिए। (३) विद्यालय में पुस्तकें पढ़ो। (४) राजा प्रजा की रक्षा करते थे। (५) सीता चावल पकायेगी। (६) मैं गुरुजी को नमस्कार करता हूँ। (७) वह घर जा रहा है। (८) रमेश ने जंगल में एक शेर देखा। (९) धूप में मत बैठो। (१०) महेश अपना पाठ याद कर रहा है। (११) नदी के शीतल जल को पीना चाहिए। (१२) युद्ध में भारत के सैनिक जीतेंगे। (१३) मैं वृद्ध पिता की सेवा करूँगा। (१४) वह परीक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त करेगा। (१५) वसंत काल में पौधे बढ़ते हैं। (१६) वह देश के लिये दुःख सह रहा है। (१७) भिखारी भोजन मांगता है। (१८) मधु का पात्र

ले जाओ। (१९) रावण ने सीता का हरण किया था। (२०) भक्ति मन्दिर में भगवान की पूजा कर रहा है।

अदादि गण

परस्मैपदी

'अद्' (खाना)

लट्

प्र० पुरुष	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
म० "	अत्सि	अत्थः	अत्थ
उ० "	अद्मि	अद्वः	अद्मः

लृट्

प्र० पुरुष	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
म० "	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
उ० "	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	अत्तु, अत्तात्	अत्ताम्	अदन्तु
म० "	अद्धि, अत्तात्	अत्तम्	अत्त
उ० "	अदानि	अदाव	अदाम

लङ्

प्र० पुरुष	आदत्	आत्ताम्	आदन्
म० "	आदः	आत्तम	आत्त
उ० "	आदम्	आद्व	आद्म

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
म० "	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
उ० "	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

'अस्' (होना)

लट्

प्र० पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
म० "	असि	स्थः	स्थ
उ० "	अस्मि	स्वः	स्मः

लृट्

प्र० पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० "	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० "	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	अस्तु, स्तात्	स्ताम्	सन्तु
म० "	एधि, स्तात्	स्तम्	स्त
उ० "	असानि	असाव	असाम

लङ्

प्र० पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म० "	आसीः	आस्तम्	आस्त
उ० "	आसम्	आस्व	आस्म

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्युः
म० "	स्याः	स्यातम्	स्यात
उ० "	स्याम	स्याव	स्याम

'स्तु' (स्तुति करना)

लट्

प्र० पुरुष	स्तौति	स्तुतः	स्तुवन्ति
म० "	स्तौषि	स्तुथः	स्तुथ
उ० "	स्तौमि	स्तुवः	स्तुमः

लृट्

प्र० पुरुष	स्तोष्यति	स्तोष्यतः	स्तोष्यन्ति
म० "	स्तोष्यसि	स्तोष्यथः	स्तोष्यथ
उ० "	स्तोष्यामि	स्तोष्यावः	स्तोष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	स्तौतु, स्तुतात्	स्तुताम्	स्तुवन्तु
म० "	स्तुहि, स्तुतात्	स्तुतम्	स्तुत
उ० "	स्तवानि	स्तवाव	स्तवाम

लङ्

प्र० पुरुष	अस्तौत्	अस्तुताम्	अस्तुवन्
म० "	अस्तौः	अस्तुतम्	अस्तुत
उ० "	अस्तवम्	अस्तुव	अस्तुम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	स्तुयात्	स्तुयाताम्	स्तुयुः
म० "	स्तुयाः	स्तुयातम्	स्तुयात
उ० "	स्तुयाम्	स्तुयाव	स्तुयाम

'रुद्' (रोना)

लट्

प्र० पुरुष	रोदति	रुदितः	रुदन्ति
म० "	रोदषि	रुदिथः	रुदिथ
उ० "	रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः

लृट्

प्र० पुरुष	रोदिष्यति	रोदिष्यतः	रोदिष्यन्ति
म० "	रोदिष्यसि	रोदिष्यथः	रोदिष्यथ
उ० "	रोदिष्यामि	रोदिष्यावः	रोदिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	रोदितु, रुदितात्	रुदिताम्	रुदन्तु
म० "	रुदिहि, रुदितात्	रुदितम्	रुदित
उ० "	रोदानि	रोदाव	रोदाम

लङ्

प्र० पुरुष	अरोदत्, अरोदीत्	अरुदिताम्	अरुदन्
म० "	अरोदः, अरोदीः	अरुदितम्	अरुदित
उ० "	अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	रुद्यात्	रुद्याताम्	रुद्युः
म० "	रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात
उ० "	रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम

'दुह' (दुहना)

लट्

प्रथम पुरुष	दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति
म० "	दोक्षि	दुग्धः	दुग्ध
उ० "	दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः

लृट्

प्र० पुरुष	धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति
म० "	धोक्ष्यसि	धोक्ष्यथः	धोक्ष्यथ
उ० "	धोक्ष्यामि	धोक्ष्यावः	धोक्ष्यामः

लोट्

प्रथम पुरुष	दोग्धु, दुग्धात्	दुग्धाम्	दुहन्तु
म० "	दुग्धि, दुग्धात्	दुग्धम्	दुग्ध
उ० "	दोहानि	दोहाव	दोहाम

लङ्

प्रथम पुरुष	अधोक,अधोग्	अदुग्धाम्	अदुहन्
म० ,,	अधोक्,अधोग्	अदुग्धम्	अदुग्ध
उ० ,,	अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः
म० ,,	दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात
उ० ,,	दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम

'जागृ' (जागना)

लट्

प्र० पुरुष	जागर्ति	जागृतः	जाग्रति
म० ,,	जागर्षि	जागृथः	जागृथ
उ० ,,	जागर्मि	जागृवः	जागृमः

लृट्

प्र० पुरुष	जागरिष्यति	जागरिष्यतः	जागरिष्यन्ति
म० ,,	जागरिष्यसि	जागरिष्यथः	जागरिष्यथ
उ० ,,	जागरिष्यामि	जागरिष्यावः	जागरिष्यामः

लोट्

प्रथम पुरुष	जागर्तु,जागृतात्	जागृताम्	जाग्रतु
म० ,,	जागृहि,जागृतात्	जागृतम्	जागृत
उ० ,,	जागराणि	जागराव	जागराम

लङ्

प्र० पुरुष	अजागः	अजागृताम्	अजागरुः
म० ,,	अजागः	अजागृतम्	अजागृत
उ० ,,	अजागरम्	अजागृव	अजागृम

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	जागृयात्	जागृयाताम्	जागृयुः
म० "	जागृयाः	जागृयातम्	जागृयात
उ० "	जागृयाम्	जागृयाव	जागृयाम

'स्वप्' (सोना)

लट्

प्रथम पुरुष	स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति
म० "	स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ
उ० "	स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः

लृट्

प्रथम पुरुष	स्वप्स्यति	स्प्स्यतः	स्वप्स्यन्ति
म० "	स्वप्स्यसि	स्वप्स्यथः	स्वप्स्यथ
उ० "	स्वप्स्यामि	स्वप्स्यावः	स्वप्स्यामः

लोट्

प्रथम पुरुष	स्वपितु, स्वपितात्	स्वपिताम्	स्वपन्तु
म० "	स्वपिहि, स्वपितात्	स्वपितम्	स्वपित
उ० "	स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम

लङ्

प्रथम पुरुष	अस्वपत्, अस्वपीत्	अस्वपिताम्	अस्वपन्
म० "	अस्वपः, अस्वपीः	अस्वपितम्	अस्वपित
उ० "	अस्वपम्	अस्वपिव	अस्वपिम

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः
म० "	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
उ० "	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम

'हन्' (मारना)

लट्

प्रथम पुरुष	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म० "	हंसि	हथः	हथ
उ० "	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लृट्

प्रथम पुरुष	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
म० "	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उ० "	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

लोट्

प्रथम पुरुष	हन्तु, हतात्	हताम्	घ्नन्तु
म० "	जहि, हतात्	हतम्	हत
उ० "	हनानि	हनाव	हनाम

लङ्

प्रथम पुरुष	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
म० "	अहन्	अहतम्	अहत
उ० "	अहनम्	अहन्व	अहन्म

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
म० "	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उ० "	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

'विद्' (जानना)

लट्

प्रथम पुरुष	वेत्ति	वित्तः	विदन्ति
म० "	वेत्सि	वित्थः	वित्थ
उ० "	वेद्मि	विद्वः	विद्मः

अथवा

प्रथम पुरुष	वेद	विदतु:	विदु:
म० „	वेत्थ	विदथु:	विद
उ० „	वेद	विद्व	विद्म

लृट्

प्रथम पुरुष	वेदिष्यति	वेदिष्यतः	वेदिष्यन्ति
म० „	वेदिष्यसि	वेदिष्यथः	वेदिष्यथ
उ० „	वेदिष्यामि	वेदिष्यावः	वेदिस्यामः

लोट्

प्रथम पुरुष	वेत्तु, वित्तात्	वित्ताम्	विदन्तु
म० „	विद्धि, वित्तात्	वित्तम्	वित्त
उ० „	वेदानि	वेदाव	वेदाम

अथवा

प्रथम पुरुष	विदाङ्करोतु, विदाङ्कुरुतात्	विदाङ्कुरुताम्	विदाङ्कुर्वन्तु
म० „	विदाङ्कुरु, विदाङ्कुरुतात्	विदाङ्कुरुतम्	विदाङ्कुरुत
उ० „	विदाङ्करवाणि	विदाङ्करवाव	विदाङ्करवाम

लङ्

प्रथम पुरुष	अवेत्, अवेद्	अवित्ताम्	अविदु:
म० „	अवेत्-द्, अवेः	अवित्तम्	अवित्त
उ० „	अवेदम्	अविद्व	अविद्म

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	विद्यात्	विद्याताम्	विद्यु:
म० „	विद्याः	विद्यातम्	विद्यात
उ० „	विद्याम्	विद्याव	विद्याम

'शास्' (शासन करना)

लट्

प्रथम पुरुष	शास्ति	शिष्टः	शासति
म० „	शास्सि	शिष्ठः	शिष्ठ
उ० „	शास्मि	शिष्वः	शिष्मः

लृट्

प्रथम पुरुष	शासिष्यति	शासिष्यतः	शासिष्यन्ति
म० ”	शासिष्यसि	शासिष्यथः	शासिष्यथ
उ० ”	शासिष्यामि	शासिष्यावः	शासिष्यामः

लोट्

प्रथम पुरुष	शास्तु, शिष्टात्	शिष्टाम्	शासतु
म० ”	शाधि, शिष्टात्	शिष्टम्	शिष्ट
उ० ”	शासानि	शासाव	शासाम

लङ्

प्रथम पुरुष	अशात्-द्	अशिष्टाम्	अशासुः
म० ”	अशात्-द्, अशाः	अशिष्टम्	अशिष्ट
उ० ”	अशासम्	अशिष्व	अशिष्म

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	शिष्यात्	शिष्यास्ताम्	शिष्युः
म० ”	शिष्याः	शिष्यातम्	शिष्यात
उ० ”	शिष्याम्	शिष्याव	शिष्याम

'इ' (जाना)

लट्

प्रथम पुरुष	एति	इतः	यन्ति
म० ”	एषि	इथः	इथ
उ० ”	एमि	इवः	इमः

लृट्

प्रथम पुरुष	एष्यति	एष्यतः	एष्यन्ति
म० ”	एष्यसि	एष्यथः	एष्यथ
उ० ”	एष्यामि	एष्यावः	एष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	एतु, इतात्	इताम्	यन्तु
म० ,,	इहि, इतात्	इतम्	इत
उ० ,,	अयानि	अयाव	अयाम

लङ्

प्र० पुरुष	ऐत्	ऐताम्	आयन्
म० ,,	ऐः	ऐतम्	ऐत
उ० ,,	आयम्	ऐव	ऐम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	इयात्	इयाताम्	इयुः
म० ,,	इयाः	इयातम्	इयात
उ० ,,	इयाम्	इयाव	इयाम

आत्मनेपदी धातुएं

'आस्' (बैठना)

लट्

प्र० पुरुष	आस्ते	आसाते	आसते
म० ,,	आस्से	आसाथे	आध्वे
उ० ,,	आसे	आस्वहे	आस्महे

लृट्

प्र० पुरुष	आसिष्यते	आसिष्येते	आसिष्यन्ते
म० ,,	आसिष्यसे	आसिष्येथे	आसिष्यध्वे
उ० ,,	आसिष्ये	आसिष्यावहे	आसिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्
म० ,,	आस्स्व (आस्व)	आसाथाम्	आध्वम्
उ० ,,	आसै	आसावहै	आसामहै

लङ्

प्र० पुरुष	आस्त	आसाताम्	आसत
म० ,,	आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्
उ० ,,	आसि	आस्वहि	आस्महि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्
म० ,,	आसीथाः	आसीयाथाम्	आसीध्वम्
उ० ,,	आसीय	आसीवहि	आसीमहि

'शी' (सोना)

लट्

प्र० पुरुष	शेते	शयाते	शेरते
म० ,,	शेषे	शयाथे	शेध्वे
उ० ,,	शेये	शेवहे	शेमहे

लृट्

प्र० पुरुष	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
म० ,,	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
उ० ,,	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
म० ,,	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उ० ,,	शयै	शयावहै	शयामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अशेत	अशायाताम्	अशेरत
म० ,,	अशेथाः	अशायाथाम्	अशेध्वम्
उ० ,,	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
म० ,,	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उ० ,,	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

'अधि+इ' (पढ़ना)

लट्

प्र० पुरुष	अधीते	अधीयाते	अधीयते
म० ,,	अधीषे	अधीयाथे	अधीध्वे
उ० ,,	अधीये	अधीवहे	अधीमहे

लृट्

प्र० पुरुष	अध्येष्यते	अध्येष्येते	अध्येष्यन्ते
म० ,,	अध्येष्यसे	अध्येष्येथे	अध्येष्यध्वे
उ० ,,	अध्येष्ये	अध्येष्यावहे	अध्येष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	अधीताम्	अधीयाताम्	अधीयताम्
म० ,,	अधीष्व	अधीयाथाम्	अधीध्वम्
उ० ,,	अध्ययै	अध्ययावहै	अध्ययामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अध्यैत	अध्यैयाताम्	अध्यैयत
म० ,,	अध्यैथाः	अध्यैयाथाम्	अध्यैध्वम्
उ० ,,	अध्यैयि	अध्यैवहि	अध्यैमहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	अधीयीत	अधीयीताम्	अधीयीरन्
म० ,,	अधीयीथाः	अधीयीयाथाम्	अधीयीध्वम्
उ० ,,	अधीयीय	अधीयीवहि	अधीयीमहि

उभयपदी धातुएँ

ब्रू (बोलना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	ब्रवीति, आह	ब्रूतः, आहतु	ब्रुवन्ति, आहुः
म० ,,	ब्रवीषि, आत्थ	ब्रूथः, आहथुः	ब्रूथ
उ० ,,	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः

लृट्

प्र० पुरुष	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
म० ,,	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
उ० ,,	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु
म० ,,	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत
उ० ,,	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम

लङ्

प्र० पुरुष	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्
म० ,,	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
उ० ,,	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
म० ,,	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उ० ,,	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

'ब्रू' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते
म० ,,	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
उ० ,,	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे

लृट्

प्र० पुरुष	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते
म० ,,	वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे
उ० ,,	वक्ष्ये	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्
म० ,,	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
उ० ,,	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
म० ,,	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
उ० ,,	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्
म० ,,	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
उ० ,,	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि

अदादिगण की अन्य धातुएँ

परस्मैपदी

पा—(रक्षा करना)—पाति, पास्यति, पातु, अपात्, पायात् ।

आत्मनेपदी

सू—(उत्पन्न करना)—सूते, सोष्यते-सविष्यते, सुताम्, असूत, सुवीत ।

अभ्यास

१. निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखिये :

स्वप् (लृट्), अद् (लोट्), अस् (लट्), ब्रू (लृट्), स्तु (लोट्), रुद् (लङ्), दुह् (विधिलिङ्), जागृ (लोट्), हन् (लङ्), विद् (लोट्), शास् (विधिलिङ्), इ (लट्), आस् (आत्म०, लृट्), शी (लोट्) ।

२. निम्नलिखित क्रिया-रूपों की धातु, लकार, पुरुष और वचन बताइये : अघोक्, धोक्ष्यामः, वक्ष्यामि, अस्तवम्, अत्स्यति, स्याः, जहि, विदाङ्कुर्वाणि, अयानि, असीथः, अध्यैयि।

३. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :
बन्दर सीताफल खा रहा था। शेर ने हरिण को मारा और खा गया। सैनिकों को असहाय व्यक्तियों की रक्षा करनी चाहिए। राजा दशरथ अयोध्या के राजा थे। उनके चार राजकुमार राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न थे। हनुमान राम के अनन्य भक्त थे। वे सदैव राम की स्तुति करते थे। राम ने स्नेहपूर्वक शासन किया। रावण ने क्रूरतापूर्वक शासन किया। इसी से वह नष्ट हो गया।

जुहोत्यादिगण

परस्मैपदी धातुएँ

'हु' (हवन करना)

लट्

प्र० पुरुष	जुहोति	जुहुतः	जुह्वति
म० ,,	जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ
उ० ,,	जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः

लृट्

प्र० पुरुष	होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति
म० ,,	होष्यसि	होष्यथः	होष्यथ
उ० ,,	होष्यामि	होष्यावः	होष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	जुहोतु, जुहुतात्	जुहुताम्	जुह्वतु
म० ,,	जुहुधि, जुहुतात्	जुहुतम्	जुहुत
उ० ,,	जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम

लङ्

प्र० पुरुष	अजुहोत	अजुहुताम्	अजुहवुः
म० ,,	अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत
उ० ,,	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम्

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
म० ,,	जुहुयाः	जुहुयाताम्	जुहुयात
उ० ,,	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम

'भी' (डरना)

लट्

प्र० पुरुष	बिभेति	बिभितः, बिभीतः	बिभ्यति
म० ,,	बिभेषि	बिभिथः, बिभीथः	बिभिथ, बिभीथ
उ० ,,	बिभेमि	बिभिवः, बिभीवः	बिभिमः,बिभीमः

लृट्

प्र० पुरुष	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
म० ,,	भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यथ
उ० ,,	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	बिभेतु बिभितात्, बिभीतात्	बिभिताम्, बिभीताम्	बिभ्यतु
म० ,,	बिभिहि, बिभितात्, बिभीहि, बिभीतात्	बिभितम्, बिभीतम्	बिभित, बिभीत
उ० ,,	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

लङ्

प्र० पुरुष	अबिभेत्	अबिभिताम्, अबिभीताम्	अबिभयुः
म० ,,	अबिभेः	अबिभितम्, अबिभीतम्	अबिभित, अबिभीत

उत्तम पुरुष	अबिभयम्	अबिभिव, अबिभीव	अबिभिम, अबिभीम

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	बिभियात्, बिभीयात्	बिभियाताम्, बिभीयाताम्	बिभियुः, बिभीयुः
म० ,,	बिभियाः, बिभीयाः	बिभियातम्, बिभीयातम्	बिभियात, बिभीयात
उ० ,,	बिभियाम, बिभीयाम	बिभियाव, बिभीयाव	बिभियाम, बिभीयाम

उभयपदी धातुएँ

'दा' (देना) परस्मैपदी

लट्

प्रथम पुरुष	ददाति	दत्तः	ददति
म० ,,	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ० ,,	ददामि	दद्वः	दद्मः

लृट्

प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म० ,,	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ० ,,	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

लोट्

प्रथम पुरुष	ददातु, दत्तात्	दत्ताम्	ददतु
म० ,,	देहि, दत्तात्	दत्तम्	दत्त
उ० ,,	ददानि	ददाव	ददाम

लङ्

प्र० पुरुष	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
म० ,,	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ० ,,	अददाम्	अदद्व	अदद्म

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
म० ,,	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उ० ,,	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

'दा' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	दत्ते	ददाते	ददते
म० ,,	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उ० ,,	ददे	दद्वहे	दद्महे

लृट्

प्र० पुरुष	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
म० ,,	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उ० ,,	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
म० ,,	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उ० ,,	ददै	ददावहै	ददामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अदत्त	अददाताम्	अददत
म० ,,	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उ० ,,	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

विधिलिङ्

प्र० ,,	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
म० ,,	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उ० ,,	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

'भृ' (भरण करना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	बिभर्ति	बिभृतः	बिभ्रति
म० ,,	बिभर्षि	बिभृथः	बिभृथ
उ० ,,	बिभर्मि	बिभृवः	बिभृमः

लृट्

प्र० पुरुष	भरिष्यति	भरिष्यतः	भरिष्यन्ति
म० ,,	भरिष्यसि	भरिष्यथः	भरिष्यथ
उ० ,,	भरिष्यामि	भरिष्यावः	भरिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	बिभर्तु, बिभृताम्	बिभृताम्	बिभ्रतु
म० ,,	बिभृहि, बिभृतात्	बिभृतम्	बिभृत
उ० ,,	बिभराणि	बिभराव	बिभराम

लङ्

प्र० पुरुष	अबिभः	अबिभृताम्	अबिभरुः
म० ,,	अबिभः	अबिभृतम्	अबिभृत
उ० ,,	अबिभरम्	अबिभृव	अबिभृम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	बिभृयात्	बिभृयाताम्	बिभृयुः
म० ,,	बिभृयाः	बिभृयातम्	बिभृयात
उ० ,,	बिभृयाम्	बिभृयाव	बिभृयाम

'भृ' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	बिभृते	बिभ्राते	बिभ्रते
म० ,,	बिभृषे	बिभ्राथे	बिभृध्वे
उ० ,,	बिभ्रे	बिभृवहे	बिभृमहे

लृट्

प्र० पुरुष	भरिष्यते	भरिष्येते	भरिष्यन्ते
म० "	भरिष्यसे	भरिष्येथे	भरिष्यध्वे
उ० "	भरिष्ये	भरिष्यावहे	भरिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	बिभृताम्	बिभ्राताम्	बिभ्रताम्
म० "	बिभृष्व	बिभ्राथाम्	बिभृध्वम्
उ० "	बिभरै	बिभरावहै	बिभरामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अबिभृत	अबिभ्राताम्	अबिभ्रत
म० "	अबिभृथाः	अबिभ्राथाम्	अबिभृध्वम्
उ० "	अबिभ्रि	अबिभृवहि	अबिभृमहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	बिभ्रीत	बिभ्रीयाताम्	बिभ्रीरन्
म० "	बिभ्रीथाः	बिभ्रीयाथाम्	बिभ्रीध्वम्
उ० "	बिभ्रीय	बिभ्रीवहि	बिभ्रीमहि

जुहोत्यादिगण की अन्य धातुएँ

परस्मैपदी

ह्री (लज्जा करना)—जिह्रेति, ह्रेष्यति, जिह्रेतु, अजिह्रेत्, जिह्रीयात्।

हा (छोड़ना)—जहाति, हास्यति, जहातु, अजहात्, जह्यात्।

उभयपदी

धा (धारण करना) परस्मैपदी—दधाति, धास्यति, दधातु, अदधात्, दध्यात्।

धा (आत्मनेपदी)—धत्ते, धास्यते, धत्ताम्, अधत्त, दधीत।

अभ्यास

१. निम्नलिखित क्रिया-रूपों के धातु, लकार, पुरुष और वचन बताइये: होष्यसि, दद्याः, अबिभिव, दास्ये, अददि जुहुयाः, विभीत, अबिभृम, ह्रेष्यति, दधीत, ददीय।

२. निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखिये :

ह्री (लट्), भृ (लोट्), दा (लृट्), हु (विधिलिङ्), भी (लोट्), धा (लृट्), ह्री (लङ्)।

३. निम्नलिखित का संस्कृत में अनुवाद कीजिये :

रमेश प्रतिदिन हवन करता है और ब्राह्मणों को दान देता है। वह परिश्रम से धन अर्जित करता है और पाप से डरता है। संसार में वह किसी से भी नहीं डरता, लेकिन बुराई से डरता है। वह अपने परिवार का भरण-पोषण करता है। ईश्वर उसे पर्याप्त धन देगा क्योंकि वह निर्धनों को दान देता है और भिक्षुकों को भोजन देता है।

४. दिवादिगण

परस्मैपदी

'दिव्' (जुआ खेलना, चमकना)

लट्

प्र० पुरुष	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
म० "	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
उ० "	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः

लृट्

प्र० पुरुष	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
म० "	देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ
उ० "	देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः

अभ्यास

१. निम्नलिखित क्रिया-रूपों के धातु, लकार, पुरुष और वचन बताइये: होष्यसि, दद्याः, अबिभिव, दास्ये, अददि जुहुयाः, बिभीत, अबिभृम, ह्लेष्यति, दधीत, ददीय ।

२. निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखिये :

हा (लट्), भृ (लोट्), दा (लृट्), हु (विधिलिङ्), भी (लोट्), धा (लृट्), ह्री (लङ्) ।

३. निम्नलिखित का संस्कृत में अनुवाद कीजिये :

रमेश प्रतिदिन हवन करता है और ब्राह्मणों को दान देता है । वह परिश्रम से धन अर्जित करता है और पाप से डरता है । संसार में वह किसी से भी नहीं डरता, लेकिन बुराई से डरता है । वह अपने परिवार का भरण-पोषण करता है । ईश्वर उसे पर्याप्त धन देगा क्योंकि वह निर्धनों को दान देता है और भिक्षुकों को भोजन देता है ।

४. दिवादिगण

परस्मैपदी

'दिव्' (जुआ खेलना, चमकना)

लट्

प्र० पुरुष	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
म० "	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
उ० "	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः

लृट्

प्र० पुरुष	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
म० "	देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ
उ० "	देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः

लृट्

प्र० पुरुष	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते
म० ,,	वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे
उ० ,,	वक्ष्ये	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्
म० ,,	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
उ० ,,	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
म० ,,	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
उ० ,,	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्
म० ,,	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
उ० ,,	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि

अदादिगण की अन्य धातुएँ

परस्मैपदी

पा—(रक्षा करना)—पाति, पास्यति, पातु, अपात्, पायात् ।

आत्मनेपदी

सू—(उत्पन्न करना)—सूते, सोष्यते-सविष्यते, सुताम्, असूत, सुवीत ।

अभ्यास

१. निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखिये :

स्वप् (लृट्), अद् (लोट्), अस् (लट्), ब्रू (लृट्), स्तु (लोट्), रुद् (लङ्), दुह् (विधिलिङ्), जागृ (लोट्), हन् (लङ्), विद् (लोट्), शास् (विधिलिङ्), इ (लट्), आस् (आत्म०, लृट्), शी (लोट्) ।

२. निम्नलिखित क्रिया-रूपों की धातु, लकार, पुरुष और वचन बताइये : अधोक्, धोक्ष्यामः, वक्ष्यामि, अस्तवम्, अत्स्यति, स्याः, जहि, विदाङ्कुर-वाणि, अयानि, असीथः, अध्येथि।

३. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :
बन्दर सीताफल खा रहा था। शेर ने हरिण को मारा और खा गया। सैनिकों को असहाय व्यक्तियों की रक्षा करनी चाहिए। राजा दशरथ अयोध्या के राजा थे। उनके चार राजकुमार राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न थे। हनुमान राम के अनन्य भक्त थे। वे सदैव राम की स्तुति करते थे। राम ने स्नेहपूर्वक शासन किया। रावण ने क्रूरतापूर्वक शासन किया। इसी से वह नष्ट हो गया।

जुहोत्यादिगण

परस्मैपदी धातुएं

'हु' (हवन करना)

लट्

प्र० पुरुष	जुहोति	जुहुतः	जुह्वति
म० ,,	जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ
उ० ,,	जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः

लृट्

प्र० पुरुष	होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति
म० ,,	होष्यसि	होष्यथः	होष्यथ
उ० ,,	होष्यामि	होष्यावः	होष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	जुहोतु, जुहुतात्	जुहुताम्	जुह्वतु
म० ,,	जुहुधि, जुहुतात्	जुहुतम्	जुहुत
उ० ,,	जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम

लङ्

प्र० पुरुष	अजुहोत	अजुहुताम्	अजुहवुः
म० ,,	अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत
उ० ,,	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम्

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
म० ,,	जुहुयाः	जुहुयाताम्	जुहुयात
उ० ,,	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम

'भी' (डरना)

लट्

प्र० पुरुष	बिभेति	बिभितः, बिभीतः	बिभ्यति
म० ,,	बिभेषि	बिभियः, बिभीथः	बिभिथ, बिभीथ
उ० ,,	बिभेमि	बिभिवः, बिभीवः	बिभिमः,बिभीमः

लृट्

प्र० पुरुष	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
म० ,,	भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यथ
उ० ,,	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	बिभेतु बिभितात्, बिभीतात्	बिभिताम्, बिभीताम्	बिभ्यतु
म० ,,	बिभिहि, बिभितात्, बिभीहि, बिभीतात्	बिभितम्, बिभीतम्	बिभित, बिभीत
उ० ,,	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

लङ्

प्र० पुरुष	अबिभेत्	अबिभिताम्, अबिभीताम्	अबिभयुः
म० ,,	अबिभेः	अबिभितम्, अबिभीतम्	अबिभित, अबिभीत

उत्तम पुरुष	अबिभयम्	अबिभिव अबिभीव	अबिभिम अबिभीम

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	बिभियात् बिभीयात्	बिभियाताम् बिभीयाताम्	बिभियुः बिभीयुः
म० ,,	बिभियाः बिभीयाः	बिभियातम् बिभीयातम्	बिभियात बिभीयात
उ० ,,	बिभियाम बिभीयाम	बिभियाव बिभीयाव	बिभियाम बिभीयाम

उभयपदी धातुएँ

'दा' (देना) परस्मैपदी

लट्

प्रथम पुरुष	ददाति	दत्तः	ददति
म० ,,	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ० ,,	ददामि	दद्वः	दद्मः

लृट्

प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म० ,,	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ० ,,	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

लोट्

प्रथम पुरुष	ददातु, दत्तात्	दत्ताम्	ददतु
म० ,,	देहि, दत्तात्	दत्तम्	दत्त
उ० ,,	ददानि	ददाव	ददाम

लङ्

प्र० पुरुष	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
म० ,,	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ० ,,	अददाम्	अदद्व	अदद्म

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
म० ,,	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उ० ,,	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

'दा' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	दत्ते	ददाते	ददते
म० ,,	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उ० ,,	ददे	दद्वहे	दद्महे

लृट्

प्र० पुरुष	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
म० ,,	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उ० ,,	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
म० ,,	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उ० ,,	ददै	ददावहै	ददामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अदत्त	अददाताम्	अददत
म० ,,	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उ० ,,	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

विधिलिङ्

प्र० ,,	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
म० ,,	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उ० ,,	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

'भृ' (भरण करना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	बिभर्ति	बिभृतः	बिभ्रति
म० ,,	बिभर्षि	बिभृथः	बिभृथ
उ० ,,	बिभर्मि	बिभृवः	बिभृमः

लृट्

प्र० पुरुष	भरिष्यति	भरिष्यतः	भरिष्यन्ति
म० ,,	भरिष्यसि	भरिष्यथः	भरिष्यथ
उ० ,,	भरिष्यामि	भरिष्यावः	भरिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	बिभर्तु, बिभृताम्	बिभृताम्	बिभ्रतु
म० ,,	बिभृहि, बिभृतात्	बिभृतम्	बिभृत
उ० ,,	बिभराणि	बिभराव	बिभराम

लङ्

प्र० पुरुष	अबिभः	अबिभृताम्	अबिभरुः
म० ,,	अबिभः	अबिभृतम्	अबिभृत
उ० ,,	अबिभरम्	अबिभृव	अबिभृम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	बिभृयात्	बिभृयाताम्	बिभृयुः
म० ,,	बिभृयाः	बिभृयातम्	बिभृयात
उ० ,,	बिभृयाम्	बिभृयाव	बिभृयाम

'भृ' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	बिभृते	बिभ्राते	बिभ्रते
म० ,,	बिभृषे	बिभ्राथे	बिभृध्वे
उ० ,,	बिभ्रे	बिभृवहे	बिभृमहे

लृट्

प्र० पुरुष	भरिष्यते	भरिष्येते	भरिष्यन्ते
म० "	भरिष्यसे	भरिष्येथे	भरिष्यध्वे
उ० "	भरिष्ये	भरिष्यावहे	भरिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	बिभृताम्	बिभ्राताम्	बिभ्रताम्
म० "	बिभृष्व	बिभ्राथाम्	बिभृध्वम्
उ० "	बिभरै	बिभरावहै	बिभरामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अबिभृत	अबिभ्राताम्	अबिभ्रत
म० "	अबिभृथाः	अबिभ्राथाम्	अबिभृध्वम्
उ० "	अबिभ्रि	अबिभृवहि	अबिभृमहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	बिभ्रीत	बिभ्रीयाताम्	बिभ्रीरन्
म० "	बिभ्रीथाः	बिभ्रीयाथाम्	बिभ्रीध्वम्
उ० "	बिभ्रीय	बिभ्रीवहि	बिभ्रीमहि

जुहोत्यादिगण की अन्य धातुएँ

परस्मैपदी

ह्री (लज्जा करना)—जिह्रेति, ह्रेष्यति, जिह्रेतु, अजिह्रेत्, जिह्रीयात्।

हा (छोड़ना)—जहाति, हास्यति, जहातु, अजहात्, जह्यात्।

उभयपदी

धा (धारण करना) परस्मैपदी—दधाति, धास्यति, दधातु, अदधात्, दध्यात्।

धा (आत्मनेपदी)—धत्ते, धास्यते, धत्ताम्, अधत्त, दधीत।

अभ्यास

१. निम्नलिखित क्रिया-रूपों के धातु, लकार, पुरुष और वचन बताइये: होष्यसि, दद्याः, अबिभिव, दास्ये, अददि जुहुयाः, बिभीत, अबिभृम, ह्रेष्यति, दधीत, ददीय।

२. निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखिये :

हा (लट्), भृ (लोट्), दा (लृट्), हु (विधिलिङ्), भी (लोट्), धा (लृट्), ह्री (लङ्)।

३. निम्नलिखित का संस्कृत में अनुवाद कीजिये :

रमेश प्रतिदिन हवन करता है और ब्राह्मणों को दान देता है। वह परिश्रम से धन अर्जित करता है और पाप से डरता है। संसार में वह किसी से भी नहीं डरता, लेकिन बुराई से डरता है। वह अपने परिवार का भरण-पोषण करता है। ईश्वर उसे पर्याप्त धन देगा क्योंकि वह निर्धनों को दान देता है और भिक्षुकों को भोजन देता है।

४. दिवादिगण

परस्मैपदी

'दिव्' (जुआ खेलना, चमकना)

लट्

प्र० पुरुष	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
म० "	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
उ० "	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः

लृट्

प्र० पुरुष	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
म० "	देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ
उ० "	देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	दीव्यतु, दीव्यतात्	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
म० "	दीव्य, दीव्यतात्	दीव्यतम्	दीव्यत
उ० "	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
म० "	अदीव्य:	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उ० "	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयु
म० "	दीव्ये:	दीव्येतम्	दीव्येत
उ० "	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

'नृत्' (नाचना)

लट्

प्र० पुरुष	नृत्यति	नृत्यत:	नृत्यन्ति
म० "	नृत्यसि	नृत्यथ:	नृत्यथ
उ० "	नृत्याति	नृत्याव:	नृत्याम:

लृट्

प्र० पुरुष	नर्तिष्यति	नर्तिष्यत:	नर्तिष्यन्ति
म० "	नर्ष्यिसि	नर्तिष्यथ:	नर्तिष्यथ:
उ० "	नर्तिष्यामि	नर्तिष्याव:	नर्तिष्याम:

अथवा

प्र० पुरुष	नर्त्स्यंति	नर्त्स्यंत:	नर्त्स्यंन्ति
म० "	नर्त्स्यंसि	नर्त्स्यंथ:	नर्त्स्यंथ
उ० "	नर्त्स्यामि	नर्त्स्याव:	नर्त्स्याम:

लोट्

प्र० पुरुष	नृत्यतु, नृत्यतात्	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
म० ,,	नृत्य, नृत्यतात्	नृत्यतम्	नृत्यत
उ० ,,	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
म० ,,	अनृत्य	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उ० ,,	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
म० ,,	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उ० ,,	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

'कुप' (क्रोध करना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	कुप्यति	कुप्यतः	कुप्यन्ति
म० ,,	कुप्यसि	कुप्यथः	कुप्यथ
उ० ,,	कुप्यामि	कुप्यावः	कुप्यामः

लृट्

प्र० पुरुष	कोपिष्यति	कोपिष्यतः	कोपिष्यन्ति
म० ,,	कोपिष्यसि	कोपिष्यथः	कोपिष्यथ
उ० ,,	कोपिष्यामि	कोपिष्यावः	कोपिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	कुप्यतु, कुप्यतात्	कुप्यताम्	कुप्यन्तु
म० ,,	कुप्य, ,,	कुप्यतम्	कुप्यत
उ० ,,	कुप्यानि	कुप्याव	कुप्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अकुप्यत्	अकुप्यताम्	अकुप्यन्
म० ,,	अकुप्यः	अकुप्तम्	अकुप्यत्
उ० ,,	अकुप्यम्	अकुप्याव	अकुप्याम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	कुप्येत्	कुप्येताम्	कुप्येताम्
म० ,,	कुप्येः	कुप्येतम्	कुप्येत
उ० ,,	कुप्येयम्	कुप्येव	कुप्येम

'शुष्' (सूखना)

लट्

प्र० पुरुष	शुष्यति	शुष्यतः	शुष्यन्ति
म० ,,	शुष्यसि	शुष्यथः	शुष्यथ
उ० ,,	शुष्यामि	शुष्यावः	शुष्यामः

लृट्

प्र० पुरुष	शोक्ष्यति	शोक्ष्यतः	शोक्ष्यन्तिः
म० ,,	शोक्ष्यसि	शोक्ष्यथः	शोक्ष्यथ
उ० ,,	शोक्ष्यामि	शोक्ष्याव	शोक्ष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	शुष्यतु, शुष्यतात्	शुष्यताम्	शुष्यन्तु
म० ,,	शुष्य, ,,	शुष्यतम्	शुष्यत
उ० ,,	शुष्याणि	शुष्याव	शुष्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अशुष्यत्	अशुष्यताम्	अशुष्यन्
म० ,,	अशुष्यः	अशुष्यतम्	अशुष्यत
उ० ,,	अशुष्यम्	अशुष्याव	अशुष्याम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	शुष्येत्	शुष्येताम्	शुष्येयुः
म० ,,	शुष्येः	शुष्येतम्	शुष्येत
उ० ,,	शुष्येतम्	शुष्येव	शुष्येम

'शुध्' (पवित्र होना)

लट्

प्र० पुरुष	शुध्यति	शुध्यतः	शुध्यन्ति
म० ,,	शुध्यसि	शुध्यथः	शुध्यथ
उ० ,,	शुध्यामि	शुध्यावः	शुध्यामः

लृट्

प्र० पुरुष	शोत्स्यति	शोत्स्यतः	शोत्स्यन्ति
म० ,,	शोत्स्यसि	शोत्स्यथः	शोत्स्यथ
उ० ,,	शोत्स्यामि	शोत्स्यावः	शोत्स्याम

लोट्

प्र० पुरुष	शुध्यतु, शुध्तान्	शुध्यतात्	शुध्यन्तु
म० ,,	शुध्य, शुध्यतात्	शुध्यतम्	शुध्यत
उ० ,,	शुध्यानि	शुध्याव	शुध्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अशुध्यत्	अशुध्यताम्	अशुध्यन्
म० ,,	अशुध्यः	अशुध्यतम्	अशुध्यत
उ० ,,	अशुध्यम्	अशुध्याव	अशुध्याम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	शुध्येत	शुध्येताम्	शुध्येयः
म० ,,	शुध्येः	शुध्येतम्	शुध्येत
उ० ,,	शुध्येयम्	शुध्येव	शुध्येम

'नश्' (नष्ट होना)

लट्

प्र० पुरुष	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
म० ,,	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उ० ,,	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

लृट्

प्र० पुरुष	नशिष्यति[1]	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति
म० ,,	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ
उ० ,,	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	नश्यतु,नश्यतात्	नश्यताम्	नश्यन्तु
म० ,,	नश्य, नश्यताय्	नश्यतम्	नश्यत
उ० ,,	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
म० ,,	अनश्य	अनश्यतम्	अनश्यत
उ० ,,	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	नश्येत्	नश्येतांम्	नश्येयुः
म० ,,	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उ० ,,	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

शम् (शान्त होना)

लट्

प्र० पुरुष	शाम्यति	शाम्यतः	शाम्यन्ति
म० ,,	शाम्यसि	शाम्यथः	शाम्यथ
उ० ,,	शाम्यामि	शाम्यावः	शाम्यामः

१. नश् धातु के लृट लकार में 'नंक्ष्यति, नंक्ष्यतः, नंक्ष्यन्ति' आदि रूप भी होते हैं ।

लृट्

प्र० पुरुष	शमिष्यति	शमिष्यतः	शमिष्यन्ति
म० ,,	शमिष्यसि	शमिष्यथः	शमिष्यथ
उ० ,,	शमिष्यामि	शमिष्यावः	शमिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	शाम्यतु,शाम्यतात्	शाम्यताम्	शाम्यन्तु
म० ,,	शाम्य, शाम्यतात्	शाम्यतम्	शाम्यत
उ० ,,	शाम्यानि	शाम्याव	शाम्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अशाम्यत	अशाम्यताम्	अशाम्यन्
म० ,,	अशाम्य	अशाम्यतम्	अशाम्यत
उ० ,,	अशाम्यम्	अशाम्याव	अशाम्याम्

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	शाम्येत्	शाम्येताम्	शाम्येयुः
म० ,,	शाम्येः	शाम्येतम्	शाम्येत
उ० ,,	शाम्येयम्	शाम्येव	शाम्येम

'व्यध्' (बींधना)

लट्

प्र० पुरुष	विध्यति	विध्यतः	विध्यन्ति
म० ,,	विध्यसि	विध्यथः	विध्यथ
उ० ,,	विध्यामि	विध्यावः	विध्यामः

लृट्

प्र० पुरुष	व्यत्स्यति	व्यत्स्यतः	व्यत्स्यन्ति
म० ,,	व्यत्स्यसि	व्यत्स्यथः	व्यत्स्यथ
उ० ,,	व्यत्स्यामि	व्यत्स्यावः	व्यत्स्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	विध्यतु, विध्यतात्	विध्यताम्	विध्यन्तु
म० ,,	विध्य, विध्यतात्	विध्यतम्	विध्यत
उ० ,,	विध्यानि	विध्याव	विध्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अविध्यत्	अविध्यताम्	अविध्याम
म० ,,	अविध्यः	अविध्यतम्	अविध्यन्
उ० ,,	अविध्यम्	अविध्याव	अविध्याम्

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	विध्येत्	विध्येताम्	विध्येयु
म० ,,	विध्येः	विध्येतम्	विध्येत
उ० ,,	विध्ययम्	विध्येव	विध्येम

'भ्रम्' (घूमना)

लट्

प्र० पुरुष	भ्राम्यति	भ्राम्यतः	भ्राम्यन्ति
म० ,,	भ्राम्यसि	भ्राम्यथः	भ्राम्यथ
उ० ,,	भ्राम्यामि	भ्राम्यावः	भ्राम्यामः

लृट्

प्र० पुरुष	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यन्ति
म० ,,	भ्रमिष्यसि	भ्रमिष्यथः	भ्रमिष्यथ
उ० ,,	भ्रमिष्यामि	भ्रमिष्यावः	भ्रमिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	भ्राम्यतु, भ्राम्यतात्	भ्राम्यताम्	भ्राम्यन्तु
म० ,,	भ्राम्य, भ्राम्यतात्	भ्राम्यतम्	भ्राम्यत
उ० ,,	भ्राम्याणि	भ्राम्याव	भ्राम्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अश्राम्यत्	अश्राम्यताम्	अश्राम्यन्
उ० "	अश्राम्यः	अश्राम्यतम्	अश्राम्यत
म० "	अश्राम्यम्	अश्राम्याव	अश्राम्याम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	श्राम्येत्	श्राम्येताम्	श्राम्येयुः
म० "	श्राम्येः	श्राम्येतम्	श्राम्येत
उ० "	श्राम्येयम्	श्राम्येव	श्राम्येम

'विद्' (होना) आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	विद्यते	विद्येते	विद्यन्ते
म० "	विद्यसे	विद्येथे	विद्यध्वे
उ० "	विद्ये	विद्यावहे	विद्यामहे

लृट्

प्र० पुरुष	वेत्स्यते	वेत्स्येते	वेत्स्यन्ते
म० "	वेत्स्यसे	वेत्स्येथे	वेत्स्यध्वे
उ० "	वेत्स्ये	वेत्स्यावहे	वेत्स्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	विद्यताम्	विद्येताम्	विद्यन्ताम्
म० "	विद्यस्व	विद्येथाम्	विद्यध्वम्
उ० "	विद्यै	विद्यावहै	विद्यामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अविद्यत	अविद्येताम्	अविद्यन्त
म० "	अविद्यथाः	अविद्येथाम्	अविद्यध्वम्
उ० "	अविद्ये	अविद्यावहि	अविद्यामहि

लोट्

प्र० पुरुष	दीव्यतु, दीव्यतात्	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
म० "	दीव्य, दीव्यतात्	दीव्यतम्	दीव्यत
उ० "	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
म० "	अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उ० "	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयु
म० "	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
उ० "	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

'नृत्' (नाचना)

लट्

प्र० पुरुष	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
म० "	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उ० "	नृत्याति	नृत्यावः	नृत्यामः

लृट्

प्र० पुरुष	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
म० "	नर्ष्यिसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथः
उ० "	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः

अथवा

प्र० पुरुष	नर्त्स्यति	नर्त्स्यतः	नर्त्स्यन्ति
म० "	नर्त्स्यसि	नर्त्स्यथः	नर्त्स्यथ
उ० "	नर्त्स्यामि	नर्त्स्यावः	नर्त्स्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	नृत्यतु, नृत्यतात्	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
म० ,,	नृत्य, नृत्यतात्	नृत्यतम्	नृत्यत
उ० ,,	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
म० ,,	अनृत्य	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उ० ,,	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
म० ,,	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उ० ,,	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

'कुप' (क्रोध करना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	कुप्यति	कुप्यतः	कुप्यन्ति
म० ,,	कुप्यसि	कुप्यथः	कुप्यथ
उ० ,,	कुप्यामि	कुप्यावः	कुप्यामः

लृट्

प्र० पुरुष	कोपिष्यति	कोपिष्यतः	कोपिष्यन्ति
म० ,,	कोपिष्यसि	कोपिष्यथः	कोपिष्यथ
उ० ,,	कोपिष्यामि	कोपिष्यावः	कोपिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	कुप्यतु, कुप्यतात्	कुप्यताम्	कुप्यन्तु
म० ,,	कुप्य, ,,	कुप्यतम्	कुप्यत
उ० ,,	कुप्यानि	कुप्याव	कुप्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अकुप्यत्	अकुप्यताम्	अकुप्यन्
म० ,,	अकुप्य:	अकुप्तम्	अकुप्यत्
उ० ,,	अकुप्यम्	अकुप्याव	अकुप्याम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	कुप्येत्	कुप्येताम्	कुप्येताम्
म० ,,	कुप्ये:	कुप्येतम्	कुप्येत
उ० ,,	कुप्येयम्	कुप्येव	कुप्येम

'शुष्' (सूखना)

लट्

प्र० पुरुष	शुष्यति	शुष्यत:	शुष्यन्ति
म० ,,	शुष्यसि	शुष्यथ:	शुष्यथ
उ० ,,	शुष्यामि	शुष्याव:	शुष्याम:

लृट्

प्र० पुरुष	शोक्ष्यति	शोक्ष्यत:	शोक्ष्यन्ति:
म० ,,	शोक्ष्यसि	शोक्ष्यथ:	शोक्ष्यथ
उ० ,,	शोक्ष्यामि	शोक्ष्याव	शोक्ष्याम:

लोट्

प्र० पुरुष	शुष्यतु, शुष्यतात्	शुष्यताम्	शुष्यन्तु
म० ,,	शुष्य, ,,	शुष्यतम्	शुष्यत
उ० ,,	शुष्याणि	शुष्याव	शुष्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अशुष्यत्	अशुष्यताम्	अशुष्यन्
म० ,,	अशुष्य:	अशुष्यतम्	अशुष्यत
उ० ,,	अशुष्यम्	अशुष्याव	अशुष्याम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	शुष्येत्	शुष्येताम्	शुष्येयुः
म० ,,	शुष्येः	शुष्येतम्	शुष्येत
उ० ,,	शुष्येतम्	शुष्येव	शुष्येम

'शुध्' (पवित्र होना)

लट्

प्र० पुरुष	शुध्यति	शुध्यतः	शुध्यन्ति
म० ,,	शुध्यसि	शुध्यथः	शुध्यथ
उ० ,,	शुध्यामि	शुध्यावः	शुध्यामः

लृट्

प्र० पुरुष	शोत्स्यति	शोत्स्यतः	शोत्स्यन्ति
म० ,,	शोत्स्यसि	शोत्स्यथः	शोत्स्यथ
उ० ,,	शोत्स्यामि	शोत्स्यावः	शोत्स्याम

लोट्

प्र० पुरुष	शुध्यतु, शुध्यतात्	शुध्यतात्	शुध्यन्तु
म० ,	शुध्य, शुध्यतात्	शुध्यतम्	शुध्यत
उ० ,,	शुध्यानि	शुध्याव	शुध्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अशुध्यत्	अशुध्यताम्	अशुध्यन्
म० ,,	अशुध्यः	अशुध्यतम्	अशुध्यत
उ० ,,	अशुध्यम्	अशुध्याव	अशुध्याम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	शुध्येत	शुध्येताम्	शुध्येयः
म० ,,	शुध्येः	शुध्येतम्	शुध्येत
उ० ,,	शुध्येयम्	शुध्येव	शुध्येम

'नश्' (नष्ट होना)

लट्

प्र० पुरुष	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
म० ,,	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उ० ,,	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

लृट्

प्र० पुरुष	नशिष्यति[1]	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति
म० ,,	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ
उ० ,,	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	नश्यतु, नश्यतात्	नश्यताम्	नश्यन्तु
म० ,,	नश्य, नश्यतात्	नश्यतम्	नश्यत
उ० ,,	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
म० ,,	अनश्य	अनश्यतम्	अनश्यत
उ० ,,	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
म० ,,	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उ० ,,	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

शम् (शान्त होना)

लट्

प्र० पुरुष	शाम्यति	शाम्यतः	शाम्यन्ति
म० ,,	शाम्यसि	शाम्यथः	शाम्यथ
उ० ,,	शाम्यामि	शाम्यावः	शाम्यामः

१. नश् धातु के लृट लकार में 'नंक्ष्यति, नंक्ष्यतः, नंक्ष्यन्ति' आदि रूप भी होते हैं।

लृट्

प्र० पुरुष	शमिष्यति	शमिष्यतः	शमिष्यन्ति
म० ,,	शमिष्यसि	शमिष्यथः	शमिष्यथ
उ० ,,	शमिष्यामि	शमिष्यावः	शमिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	शाम्यतु, शाम्यतात्	शाम्यताम्	शाम्यन्तु
म० ,,	शाम्य, शाम्यतात्	शाम्यतम्	शाम्यत
उ० ,,	शाम्यानि	शाम्याव	शाम्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अशाम्यत	अशाम्यताम्	अशाम्यन्
म० ,,	अशाम्य	अशाम्यतम्	अशाम्यत
उ० ,,	अशाम्यम्	अशाम्याव	अशाम्याम्

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	शाम्येत्	शाम्येताम्	शाम्येयुः
म० ,,	शाम्येः	शाम्येतम्	शाम्येत
उ० ,,	शाम्येयम्	शाम्येव	शाम्येम

'व्यध्' (बींधना)

लट्

प्र० पुरुष	विध्यति	विध्यतः	विध्यन्ति
म० ,,	विध्यसि	विध्यथः	विध्यथ
उ० ,,	विध्यामि	विध्यावः	विध्यामः

लृट्

प्र० पुरुष	व्यत्स्यति	व्यत्स्यतः	व्यत्स्यन्ति
म० ,,	व्यत्स्यसि	व्यत्स्यथः	व्यत्स्यथ
उ० ,,	व्यत्स्यामि	व्यत्स्यावः	व्यत्स्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	विध्यतु, विध्यतात्	विध्यताम्	विध्यन्तु
म० ,,	विध्य, विध्यतात्	विध्यतम्	विध्यत
उ० ,,	विध्यानि	विध्याव	विध्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अविध्यत्	अविध्यताम्	अविध्याम
म० ,,	अविध्य:	अविध्यतम्	अविध्यन्
उ० ,,	अविध्यम्	अविध्याव	अविध्याम्

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	विध्येत्	विध्येताम्	विध्येयु.
म० ,,	विध्ये:	विध्येतम्	विध्येत
उ० ,,	विध्ययम्	विध्येव	विध्येम

'भ्रम्' (घूमना)

लट्

प्र० पुरुष	भ्राम्यति	भ्राम्यत:	भ्राम्यन्ति
म० ,,	भ्राम्यसि	भ्राम्यथ:	भ्राम्यथ
उ० ,,	भ्राम्यामि	भ्राम्याव:	भ्राम्याम:

लृट्

प्र० पुरुष	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यत:	भ्रमिष्यन्ति
म० ,,	भ्रमिष्यसि	भ्रमिष्यथ:	भ्रमिष्यथ
उ० ,,	भ्रमिष्यामि	भ्रमिष्याव:	भ्रमिष्याम:

लोट्

प्र० पुरुष	भ्राम्यतु, भ्राम्यतात्	भ्राम्यताम्	भ्राम्यन्तु
म० ,,	भ्राम्य, भ्राम्यतात्	भ्राम्यतम्	भ्राम्यत
उ० ,,	भ्राम्याणि	भ्राम्याव	भ्राम्याम

लङ्

प्र० पुरुष	अश्राम्यत्	अश्राम्यताम्	अश्राम्यन्
उ० ,,	अश्राम्यः	अश्राम्यतम्	अश्राम्यत
म० ,,	अश्राम्यम्	अश्राम्याव	आश्राम्याम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	श्राम्येत्	श्राम्येताम्	श्राम्येयुः
म० ,,	श्राम्येः	श्राम्येतम्	श्राम्येत
उ० ,,	श्राम्येयम्	श्राम्येव	श्राम्येम

'विद्' (होना) आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	विद्यते	विद्येते	विद्यन्ते
म० ,,	विद्यसे	विद्येथे	विद्यध्वे
उ० ,,	विद्ये	विद्यावहे	विद्यामहे

लृट्

प्र० पुरुष	वेत्स्यते	वेत्स्येते	वेत्स्यन्ते
म० ,,	वेत्स्यसे	वेत्स्येथे	वेत्स्यध्वे
उ० ,,	वेत्स्ये	वेत्स्यावहे	वेत्स्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	विद्यताम्	विद्येताम्	विद्यन्ताम्
म० ,,	विद्यस्व	विद्येथाम्	विद्यध्वम्
उ० ,,	विद्यै	विद्यावहै	विद्यामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अविद्यत	अविद्येताम्	अविद्यन्त
म० ,,	अविद्यथाः	अविद्येथाम्	अविद्यध्वम्
उ० ,,	अविद्ये	अविद्यावहि	अविद्यामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	विद्येत	विद्येयाताम्	विद्येरन्
म० ,,	विद्येथा:	विद्येयाथाम्	विद्येध्वम्
उ० ,,	विद्येय	विद्येवहि	विद्येमहि

'युध्' (युद्ध करना)

लट्

प्र० पुरुष	युध्यते	युध्येते	युध्यन्ते
म० ,,	युध्यसे	युध्येथे	युध्यध्वे
उ० ,,	युध्ये	युध्यावहे	युध्यामहे

लृट्

प्र० पुरुष	योत्स्यते	योत्स्येते	योत्स्यन्ते
म० ,,	योत्स्यसे	योत्स्येथे	योत्स्यध्वे
उ० ,,	योत्स्ये	योत्स्यावहे	योत्स्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	युध्यताम्	युध्येताम्	युध्यन्ताम्
म० ,,	युध्यस्व	युध्येथाम	युध्यध्वम
उ० ,,	युध्यै	युध्यावहै	युध्यामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अयुध्यत	अयुध्येताम्	अयुध्यन्त
म० ,,	अयुध्यथा:	अयुध्येथाम्	अयुध्यध्वम्
उ० ,,	अयुध्ये	अध्यावहि	अयुध्यामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	युध्येत	युध्येयाताम्	युध्येरन्
म० ,,	युध्येथा	युध्येथाम्	युध्येध्वम्
उ० ,,	युध्येय	युध्येवहि	युध्येमहि

जन् (उत्पन्न होना)

लट्

प्र० पुरुष	जायते	जायेते	जायन्ते
म० ,,	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उ० ,,	जाये	जायावहे	जायामहे

लृट्

प्र० पुरुष	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
म० ,,	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उ० ,,	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
म० ,,	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उ० ,,	जायै	जायावहै	जायामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
म० ,,	अजायथा:	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उ० ,,	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
म० ,,	जायेथा:	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उ० ,,	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

मन् (मानना)

लट्

प्र० पुरुष	मन्यते	मन्येते	मन्यन्ते
म० ,,	मन्यसे	मन्येथे	मन्यध्वे
उ० ,,	मन्ये	मन्यावहे	मन्यामहे

लृट्

प्र० पुरुष	मंस्यते	मंस्येते	मंस्यन्ते
म० ,,	मंस्यसे	मंस्येथे	मंस्यध्वे
उ० ,,	मंस्ये	मंस्यावहे	मंस्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	मन्यताम्	मन्येताम्	मन्यन्ताम्
म० ,,	मन्यस्व	मन्येथाम्	मन्यध्वम्
उ० ,,	मन्यै	मन्यावहै	मन्यामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अमन्यत	अमन्येताम्	अमन्यन्त
म० ,,	अमन्यथाः	अमन्येथाम्	अमन्यध्वम्
उ० ,,	अमन्ये	अमन्यावहि	अमन्यामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	मन्येत	मन्येयाताम्	मन्येरन्
म० ,,	मन्येथाः	मन्येयाथाम्	मन्येध्वम्
उ० ,,	मन्येय	मन्येवहि	मन्येमहि

दिवादिगण की अन्य धातुएँ

परस्मैपदी

क्षम् (क्षमा करना —क्षाम्यति, क्षमिष्यति,क्षाम्यतु, अक्षाम्यत्, क्षाम्येत् ।

सिध् (सिद्ध करना) —सिध्यति, सेत्स्यति, सिध्यतु, असिध्यत्,सिध्येत् ।

भ्रंश् (गिरना)—भ्रंश्यति, भ्रंशिष्यति, भ्रंश्यतु, अभ्रंश्यत्, भ्रंश्येत ।

क्षिप् (फेंकना)—क्षिप्यति, क्षेप्स्यति, क्षिप्यतु, अक्षिप्यत्, क्षिप्येत ।

द्रुह् (द्रोह करना)—द्रुह्यति, द्रोहिष्यति, द्रुह्यतु, अद्रुह्यत्, द्रुह्येत् ।

सिव् (सीना)—सीव्यति, सेविष्यति, सीव्यत्, असीव्यत, सीव्येत् ।

तृप् (तृप्त होना)—तृप्यति, तर्पिष्यति, तृप्यतु, अतृप्यत्, तृप्येत् ।

पुष् (पालना)—पुष्यति, पोक्ष्यति, पुष्यतु, अपुष्येत्, पुष्येत् ।

आत्मनेपदी

खिद् (कष्ट उठाना)—खिद्यते, खेत्स्यते, खिद्यताम्, अखिद्यत, खिद्येत।
बुध् (जानना)—बुध्यते, भोत्स्यते, बुध्यताम्, अबुध्यत, बुध्येत।

अभ्यास

१. नीचे लिखे क्रिया-रूपों की धातु, लकार, पुरुष और वचन लिखिये :
विध्य, नङक्ष्यति, अशाम्यः, आम्येः, वेत्स्ये, योत्स्ये, अजायामहि, पोक्ष्यति, नश्यत, शाम्यानि, व्यत्स्यसि, अदीव्यः।

२. नीचे लिखी धातुओं के रूप लिखिये :

परशुराम ने लक्ष्मण के वचन को सुनकर बड़ा क्रोध किया। सभी लोगों ने जाना कि वे युद्ध करेंगे। परशुराम ने कहा—मैं इस युवक को मार डालूंगा। सारा विश्व चक्कर काटने लगा। सभा के लोगों ने मना लिया कि संसार नष्ट हो जायेगा क्योंकि जो परशुराम से द्रोह करता है वह नष्ट हो जाता है। भगवान राम भी वहाँ पर विद्यमान थे। उन्होंने लक्ष्मण को शान्त किया। मधुर वचनों के द्वारा परशुराम को शान्त करने लगे। परशुराम का क्रोध धीरे-धीरे शान्त हो गया।

५. स्वादिगण

परस्मैपदी

'सु' (रस निकालना)

लट्

प्र० पुरुष	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति
म० ,,	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ
उ० ,,	सुनोमि	सुनुवः, सुन्वः	सुनुमः, सुन्मः

लृट्

प्र० पुरुष	सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति
म० ,,	सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ
उ० ,,	सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	सुनोतु, सुनुतात्	सुनुताम्	सुन्वन्तु
म० ,,	सुनु, सुनुतात्	सुनुतम्	सुनुत
उ० ,,	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम

लङ्

प्र० पुरुष	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
म० ,,	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
उ० ,,	असुनवम्	असुनुव,असुन्व	असुनुम,असुन्म

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
म० ,,	सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
उ० ,,	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम

'सु' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
म० ,,	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
उ० ,,	सुन्वे	सुनुवहे,सुन्वहे	सुनुमहे, सुन्महे

लृट्

प्र० पुरुष	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
म० ,,	सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे
उ० ,,	सोष्ये	सोष्यावहे	सोष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
म० ,,	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्
उ० ,,	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै

लङ्

प्र० पुरुष	असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
म० „	असुनुथाः	असुन्वाथाम	असुनुध्वम्
उ० „	असुन्वि	असुनुवहि,असुन्वहि	असुनुमहि,असुन्महि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
म० „	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
उ० „	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

'आप्' (प्राप्त करना)

लट्

प्र० पुरुष	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
म० „	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
उ० „	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः

लृट्

प्र० पुरुष	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
म० „	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ
उ० „	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	आप्नोतु, आप्नुतात्	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
म० „	आप्नुहि,आप्नुतात	आप्नुतम्	आप्नुत
उ० „	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

लङ्

प्र० पुरुष	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
म० „	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
उ० „	आप्नुवम्	आप्नुव	आप्नुम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
म० ,,	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उ० ,,	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

'शक्' (समर्थ होना)

लट्

प्र० पुरुष	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
म० ,,	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उ० ,,	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

लृट्

प्र० पुरुष	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
म० ,,	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ
उ० ,,	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	शक्नोतु,शक्नुतात्	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
म० ,,	शक्नुहि,शक्नुतात्	शक्नुतम्	शक्नुत
उ० ,,	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

लङ्

प्र० पुरुष	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
म० ,,	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उ० ,,	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
म० ,,	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उ० ,,	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम्

स्वादिगरा की अन्य धातुएँ

परस्मैपदी

साध् (सिद्ध करना)—साध्नोति, सात्स्यति, साध्नोतु, असाध्नोत्, साध्नुयात् ।

उभयपदी

चि (चुनना) **परस्मैपदी**—चिनोति, चेष्यति, चिनोतु, अचिनोत्, चिनुयात्
आत्मनेपदी—चिनुते, चेष्यते, चिनुताम्, अचिनुत, चिन्वीत ।

वृ (स्वीकार करना) **परस्मैपदी**—वृणोति, वरिष्यति, वृणोतु, अवृणोत्, वृणुयात् ।

आत्मनेपदी—वृणुते, वरिष्यते, वृणुताम्, अवृणुत, वृण्वीत ।

अभ्यास

१. नीचे लिखे क्रिया-रूपों के धातु, रूप, लकार, पुरुष और वचन बताइये ।

शक्ष्यामि, चिन्वीत, वरिष्यति, आप्स्यामः, असुनुथाः, चेष्यति, सुनोषि ।

२. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिये :

महेश शेर को मार सकता है । मैं नदी में तैर सकता हूं । जो भगवान को स्मरण करेगा, उसकी पूजा करेगा वह मोक्ष प्राप्त करेगा । भक्त को रामायण पढ़ते हुए आनन्द मिलता है । तुम मेरे लिये फूल चुनो । हमें सदा निर्धनों की सहायता करके पुण्य प्राप्त करना चाहिये ।

६. तुदादिगरा

परस्मैपदी

'तुद्' (दुःख होना)

लट्

प्र० पुरुष	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
म० ,,	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उ० ,,	तुदामि	तुदावः	तुदामः

लृट्

प्र० पुरुष	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
म० ,,	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
उ० ,,	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	तुदतु, तुदतात्	तुदताम्	तुदन्तु
म० ,,	तुद, तुदतात्	तुदतम्	तुदत
उ० ,,	तुदानि	तुदाव	तुदाम

लङ्

प्र० पुरुष	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
म० ,,	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उ० ,,	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
म० ,,	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उ० ,,	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम

इष् (इच्छ्)—(इच्छा करना)

लट्

प्र० पुरुष	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
म० ,,	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
उ० ,,	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः

लृट्

प्र० पुरुष	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
..	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उ० ,,		[illegible]	एषिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	इच्छतु, इच्छतात्	इच्छताम्	इच्छन्तु
म० ,,	इच्छ, इच्छतात्	इच्छतम्	इच्छत
उ० ,,	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

लङ्

प्र० पुरुष	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
म० ,,	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उ० ,,	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
म० ,,	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
उ० ,,	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम

'प्रच्छ्' (पृच्छ्)—पूछना

लट्

प्र० पुरुष	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
म० ,,	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
उ० ,,	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लृट्

प्र० पुरुष	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
म० ,,	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उ० ,,	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	पृच्छतु, पृच्छतात्	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
म० ,,	पृच्छ, पृच्छतात्	पृच्छतम्	पृच्छत
उ० ,,	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

लङ्

प्र० पुरुष	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
म० ,,	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उ० ,,	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
म० ,,	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उ० ,,	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

'सृज्' (पैदा करना)

लट्

प्र० पुरुष	सृजति	सृजतः	सृजन्ति
म० ,,	सृजसि	सृजथः	सृजथ
उ० ,,	सृजामि	सृजावः	सृजामः

लृट

प्र० पुरुष	स्रक्ष्यति	स्रक्ष्यतः	स्रक्ष्यन्ति
म० ,,	स्रक्ष्यसि	स्रक्ष्यथः	स्रक्ष्यथ
उ० ,,	स्रक्ष्यामि	स्रक्ष्यावः	स्रक्ष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	सृजतु, सृजतात्	सृजताम्	सृजन्तु
म० ,,	सृज, सृजतात्	सृजतम्	सृजत
उ० ,,	सृजानि	सृजाव	सृजाम

लङ्

प्र० पुरुष	असृजत्	असृजताम	असृजन्
म० ,,	असृजः	असृजतम्	असृजत
उ० ,,	असृजम्	असृजाव	असृजाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	सृजेत्,	सृजेताम्	सृजेयुः
म० "	सृजेः	सृजेतम्	सृजेत
उ० "	सृजेयम्	सृजेव	सृजेम

'स्पृश्' (सोना)

लट्

[illegible] पुरुष	स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति
म० "	स्पृशसि	स्पृशथः	स्पृशथ
उ० "	स्पृशामि	स्पृशावः	स्पृशामः

लृट्

प्र० पुरुष	स्पर्क्ष्यति	स्पर्क्ष्यतः	स्पर्क्ष्यन्ति
म० "	स्नर्क्ष्यसि	स्पर्क्ष्यथः	स्पर्क्ष्यथ
उ० "	[illegible]मि	स्पर्क्ष्यावः	स्पर्क्ष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	[illegible]	[illegible]त् स्पृशताम्	स्पृशन्तु
म० "	स्प[illegible]	[illegible] स्पृ[illegible]	स्पृशत
उ० "	स्पृशानि	स्पृशाव	स्पृशाम

लङ्

प्र० पुरुष	अस्पृशत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्
म० "	अस्पृशः	अस्पृशतम्	अस्पृशत
उ० "	अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुप	स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयुः
म० "	स्पृशेः	स्पृशेतम्	स्पृशेत
उ० "	स्पृशेयम्	स्पृशेव	स्पृशेम

आत्मनेपदी

मृ (मरना)

लट्

प्र० पुरुष	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
म० ,,	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
उ० ,,	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे

लृट्

प्र० पुरुष	मरिष्यति[1]	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति
म० ,,	मरिष्यसि	मरिष्यथः	मरिष्यथ
उ० ,,	मरिष्यामि	मरिष्यावः	मरिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
म० ,,	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
उ० ,,	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त
म० ,,	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
उ० ,,	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्
म० ,,	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
उ० ,,	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि

उभयपदी

मुच् (मुञ्च्) —(छोड़ना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति
म० ,,	मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ
उ० ,,	मुञ्चामि	मुञ्चावः	मुञ्चामः

---

१. मृ धातु लृट् लकार में परस्मैपदी हो जाती है।

लृट्

प्र० पुरुष	मोक्ष्यति	मोक्ष्यतः	मोक्ष्यन्ति
म० ,,	मोक्ष्यसि	मोक्ष्यथः	मोक्ष्यथ
उ० ,,	मोक्ष्यामि	मोक्ष्यावः	मोक्ष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	मुञ्चतु,मुञ्चतात्	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु
म० ,,	मुञ्च,मुञ्चतात्	मुञ्चतम्	मुञ्चत
उ० ,,	मुञ्चानि	मुञ्चाव	मुञ्चाम

लङ्

प्र० पुरुष	अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन
म० ,,	अमुञ्चः	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत
उ० ,,	अमुञ्चम्	अमुञ्चाव	अमुञ्चाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	मुञ्चेत	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयुः
म० ,,	मुञ्चेः	मुञ्चेतम्	मुञ्चेत
उ० ,,	मुञ्चेयम्	मुञ्चेव	मुञ्चेम

'मुच्' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	मुञ्चते	मुञ्चेते	मुञ्चन्ते
म० ,,	मुञ्चसे	मुञ्चेथे	मुञ्चध्वे
उ० ,,	मुञ्चे	मुञ्चावहे	मुञ्चामहे

लृट्

प्र० पुरुष	मोक्ष्येते	मोक्ष्येथे	मोक्ष्यन्ते
म० ,,	मोक्ष्यसे	मोक्ष्येथे	मोक्ष्यध्वे
उ० ,,	मोक्ष्ये	मोक्ष्यावहे	मोक्ष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	मुञ्चताम्	मुञ्चेताम्	मुञ्चन्ताम्
म० ,,	मुञ्चस्व	मुञ्चेथाम्	मुञ्चध्वम्
उ० ,,	मुञ्चै	मुञ्चावहै	मुञ्चामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अमुञ्चत	अमुचेताम्	अमुञ्चन्त
म० ,,	अमुञ्चथाः	अमुञ्चेथाम्	अमुञ्चध्वम्
उ० ,,	अमुञ्चे	अमुञ्चावहि	अमुञ्चामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	मुञ्चेत	मुञ्चेयाताम्	मुञ्चेरन्
म० ,,	मुञ्चेथाः	मुञ्चेयाथाम्	मुञ्चेध्वम्
उ० ,,	मुञ्चेय	मुञ्चेवहि	मुञ्चेमहि

'विन्द्' (पाना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	विन्दति	विन्दतः	विन्दन्ति
म० ,,	विन्दसि	विन्दतः	विन्दथ
उ० ,,	विन्दसि	विन्दथः	विन्दामः

लृट्

प्र० पुरुष	वेदिष्यति, वेत्स्यति	वेदिष्यतः, वेत्स्यतः	वेदिष्यन्ति, वेत्स्यन्ति
म० ,,	वेदिष्यसि, वेत्स्यसि	वेदिष्यथः, वेत्स्यथः	वेदिष्यथ, वेत्स्यथ
उ० ,,	वेदिष्यामि, वेत्स्यामि	वेदिष्यावः, वेत्स्यावः	वेदिष्यामः, वेत्स्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	विन्दतु विन्दतात्	विन्दताम्	विन्दन्तु
म० ,,	विन्द, विन्दतात्	विन्दतम्	विन्दत
उ० ,,	विन्दानि	विन्दाव	विन्दाम

लङ्

प्र० पुरुष	अविन्दत्	अविन्दताम्	अविन्दन्
म० ,,	अविन्दः	अविन्दतम्	अविन्दत
उ० ,,	अविन्दम्	अविन्दाव	अविन्दाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	विन्देत्	विन्देताम्	विन्देयुः
म० ,,	विन्देः	विन्देतम्	विन्देत
उ० ,,	विन्देयम्	विन्देव	विन्देम

'विद्' (आत्मनेपदी)

लट्

प्र० पुरुष	विन्दते	विन्देते	विन्दन्ते
म० ,,	विन्दसे	विन्देथे	विन्दध्वे
उ० ,,	विन्दे	विन्दावहे	विन्दामहे

लृट्

प्र० पुरुष	वेदिष्यते, वेत्स्यते	वेदिष्येते, वेत्स्येते	वेदिष्यन्ते, वेत्स्यन्ते
म० ,,	वेदिष्यसे, वेत्स्यसे	वेदिष्येथे, वेत्स्येथे	वेदिष्यध्वे, वेत्स्यध्वे
उ० ,,	वेदिष्ये, वेत्स्ये	वेदिष्यावहे, वेत्स्यावहे	वेदिष्यामहे, वेत्स्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	विन्दताम्	विन्देताम्	विन्दन्ताम्
म० ,,	विन्दस्व	विन्देथाम्	विन्दध्वम्
उ० ,,	विन्दै	विन्दावहै	विन्दामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अविन्दत	अविन्देताम्	अविन्दन्त
म० ,,	अविन्दथाः	अविन्देथाम्	अविन्दध्वम्
उ० ,,	अविन्दे	अविन्दावहि	अविन्दामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	विन्देत	विन्देयाताम्	विन्देरन्
म० ,,	विन्देथाः	विन्देयाथाम्	विन्देध्वम्
उ० ,,	विन्देय	विन्देवहि	विन्देमहि

'क्षिप्' (फेंकना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	क्षिपति	क्षिपतः	क्षिपन्ति
म० ,,	क्षिपसि	क्षिपथः	क्षिपथ
उ० ,,	क्षिपामि	क्षिपावः	क्षिपामः

लृट्

प्र० पुरुष	क्षेप्स्यति	क्षेप्स्यतः	क्षेप्स्यन्ति
म० ,,	क्षेप्स्यसि	क्षेप्स्यथः	क्षेप्स्यथ
उ० ,,	क्षेप्स्यामि	क्षेप्स्यावः	क्षेप्स्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	क्षिपतु, क्षिपतात्	क्षिपताम्	क्षिपन्तु
म० ,,	क्षिप, क्षिपतात्	क्षिपतम्	क्षिपत
उ० ,,	क्षिपाणि	क्षिपाव	क्षिपाम

लङ्

प्र० पुरुष	अक्षिपत्	अक्षिपताम्	अक्षिपन्
म० ,,	अक्षिपः	अक्षिपतम्	अक्षिपत
उ० ,,	अक्षिपम्	अक्षिपाव	अक्षिपाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	क्षिपेत्	क्षिपेताम्	क्षिपेयुः
म० ,,	क्षिपेः	क्षिपेतम्	क्षिपेत
उ० ,,	क्षिपेयम्	क्षिपेव	क्षिपेम

'क्षिप्' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	क्षिपते	क्षिपेते	क्षिपन्ते
म० ,,	क्षिपसे	क्षिपेथे	क्षिपध्वे
उ० ,,	क्षिपे	क्षिपावहे	क्षिपामहे

लृट्

प्र० पुरुष	क्षेप्स्यते	क्षेप्स्येते	क्षेप्स्यन्ते
म० ,,	क्षेप्स्यसे	क्षेप्स्येथे	क्षेप्स्यध्वे
उ० ,,	क्षेप्स्ये	क्षेप्स्यावहे	क्षेप्स्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	क्षिपताम्	क्षिपेताम्	क्षिपन्ताम्
म० ,,	क्षिपस्व	क्षिपेथाम्	क्षिपध्वम्
उ० ,,	क्षिपै	क्षिपावहै	क्षिपामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अक्षिपत	अक्षिपेताम्	अक्षिपन्त
म० ,,	अक्षिपथाः	अक्षिपेथाम्	अक्षिपध्वम्
उ० ,,	अक्षिपे	अक्षिपावहि	अक्षिपामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	क्षिपेत	क्षिपेयाताम्	क्षिपेरन्
म० ,,	क्षिपेथाः	क्षिपेयाथाम्	क्षिपेध्वम्
उ० ,,	क्षिपेय	क्षिपेवहि	क्षिपेमहि

तुदादिगण की अन्य धातुएँ

परस्मैपदी

विसृज् (छोड़ना, बनाना)—विसृजति, विस्रक्ष्यति, विसृजतु, व्यसृजत्, विसृजेत् ।

स्फुर् (फड़कना)—स्फुरति, स्फुरिष्यति, स्फुरतु, अस्फुरत्, स्फुरेत् ।

स्फुट् (फटना)—स्फुटति, स्फुटिष्यति, स्फुटतु, अस्फुटत्, स्फुटेत् ।

लिख् (लिखना)—लिखति, लेखिष्यति, लिखतु, अलिखत्, लिखेत्।

प्र+विश् (घुसना)—प्रविशति, प्रवेक्ष्यति, प्रविशतु, प्राविशत्, प्रविशेत्।

कृष् (हल जोतना)—कृषति, कर्क्ष्यति, कृषतु, अकृषत्, कृषेत।

आत्मनेपदी

लज्ज् (लज्जा करना)—लज्जते, लज्जिष्यते, लज्जताम्, अलज्जत, लज्जेत।

आ+दृ (आदर करना)—आद्रियते, आदरिष्यते, आद्रियताम्, आद्रियत, आद्रियेत।

उभयपदी

लिप् (लिम्प्) (लीपना) परस्मैपदी—लिम्पति, लेप्स्यति, लिम्पतु, अलिम्पत् लिम्पेत्।

आत्मनेपदी—लिम्पते, लेप्स्यते, लिम्पताम्, अलिम्पत, लिम्पेत।

अभ्यास

१. नीचे लिखे क्रिया-रूपों के धातु, लकार, पुरुष और वचन लिखिये :

प्रवेक्ष्यति, लज्जताम्, विस्रक्ष्यति, मोक्ष्यामि, विन्देमहि, म्रियस्व, वेत्स्ये, प्रक्ष्यति, इच्छेत, स्पर्क्ष्यथ, ऐच्छः, तोत्स्यसि।

२. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिये :

गोपियों को कृष्ण का विरह दुःख देता था। वे जमुना के किनारे जाकर कृष्ण का स्मरण करती थीं। जमुना के पुलिन पर वे कृष्ण का चित्र बनाती थीं, कभी पत्र लिखती थीं और बिगाड़ देती थीं। चन्द्रमा जब उनके शरीर को छूता था तो मानो प्राणान्त हो जाता था। वे पथिकों से कृष्ण के विषय पूछती रहती थीं। उन्हें कृष्ण के दर्शन की कामना हो जाती थी।

७. रुधादिगण

उभयपदी

'रुध्' (रुकना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति
म० ,,	रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध
उ० ,,	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः

लृट्

प्र० पुरुष	रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति
म० ,,	रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ
उ० ,,	रोत्स्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	रुणद्धु, रुन्धात्	रुन्धाम्	रुन्धन्तु
म० ,,	रुन्धि, रुन्धात्	रुन्धम्	रुन्ध
उ० ,,	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम

लङ्

प्र० पुरुष	अरुणत्, अरुणद्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्
म० ,,	अरुणः, अरुणत्, अरुणद्	अरुन्धम्	अरुन्ध
उ० ,,	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः
म० ,,	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
उ० ,,	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम

'रुध्' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धते
म० ,,	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्द्ध्वे
उ० ,,	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे

लृट्

प्र० पुरुष	रोत्स्यते	रोत्स्येते	रोत्स्यन्ते
म० ,,	रोत्स्यसे	रोत्स्येथे	रोत्स्यध्वे
उ० ,,	रोत्स्ये	रोत्स्यावहे	रोत्स्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	रुन्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
म० ,,	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम्
उ० ,,	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अरुन्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
म० ,,	अरुन्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्
उ० ,,	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	रुन्धीत	रुन्धीयाताम	रुन्धीरन्
म० ,	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
उ० ,	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि

'भुज्'[1] (पालना, खाना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	भुनक्ति	भुङ्क्तः	भुञ्जन्ति
म० ,,	भुनक्षि	भुङ्क्थः	भुङ्क्थ
उ० ,,	भुनज्मि	भुञ्ज्वः	भुञ्ज्मः

लृट्

प्र० पुरुष	भोक्ष्यति	भोक्ष्यतः	भोक्ष्यन्ति
म० ,,	भोक्ष्यसि	भोक्ष्यथः	भोक्ष्यथ
उ० ,,	भोक्ष्यामि	भोक्ष्यावः	भोक्ष्यामः

१. भुज् धातु का परस्मैपद में 'पालना' और आत्मनेपद मे 'खाना' अर्थ है।

लोट्

प्र० पुरुष	भुनक्तु, भुङ्क्तात्	भुङक्ताम्	भुञ्जन्तु
म० ,,	भुङग्धि, भुङ्क्तात्	भुङ्क्तम्	भुङ्क्त
उ० ,,	भुनजानि	भुनजाव	भुनजाम

लङ्

प्र० पुरुष	अभुनक्, अभुनग्	अभुङ्क्ताम्	अभुञ्जन्
म० ,,	अभुनक्, अभुनग्	अभुङ्क्तम्	अभुङ्क्त
उ० ,,	अभुजनम्	अभुञ्ज्व	अभुञ्ज्म

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः
म० ,,	भुञ्ज्याः	भुञ्ज्यातम्	भुञ्ज्यात
उ० ,,	भुञ्ज्याम्	भुञ्ज्याव	भुञ्ज्याम

'भुज्' (खाना) आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
म० ,,	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्ध्वे
उ० ,,	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे

लृट्

प्र० पुरुष	भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते
म० ,,	भोक्ष्यसे	भोक्ष्येथे	भोक्ष्यध्वे
उ० ,,	भोक्ष्ये	भोक्ष्यावहे	भोक्ष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	भुङ्क्ताम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्
म० ,,	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङ्ग्ध्वम्
उ० ,,	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अभुङ्क्त	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जत
म० "	अभुङ्क्थाः	अभुञ्जाथाम्	अभुङ्ग्ध्वम्,
उ० "	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्
म० "	भुञ्जीथाः	भुञ्जीयाथाम्	भुञ्जीध्वम्
उ० "	भुञ्जीय	भुञ्जीवहि	भुञ्जीमहि

'युज्' (मिलना, जुड़ना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	युनक्ति	युङ्क्तः	युञ्जन्ति
म० "	युनक्षि	युङ्क्थः	युङ्क्थ
उ० "	युनज्मि	युञ्ज्वः	युञ्ज्मः

लृट्

प्र० पुरुष	योक्ष्यति	योक्ष्यतः	योक्ष्यन्ति
म० "	योक्ष्यसि	योक्ष्यथः	योक्ष्यथ
उ० "	योक्ष्यामि	योक्ष्यावः	योक्ष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	युनक्तु,युङ्क्तात्	युङ्क्ताम्	युञ्जन्तु
म० "	युङ्ग्धि,युङ्क्तात्	युङ्क्तम्	युङ्क्त
उ० "	युनजानि	युनजाव	युनजाम

लङ्

प्र० पुरुष	अयुनक्,अयुनग्	अयुङ्क्ताम्	अयुञ्जन्
म० "	अयुनक्,अयुनग्	अयुङ्क्तम्	अयुङ्क्त
उ० "	अयुनजम्	अयुञ्ज्व	अयुञ्ज्म

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	युञ्ज्यात्	युञ्ज्याताम्	युञ्ज्युः
म० "	युञ्ज्याः	युञ्ज्यातम्	युञ्ज्यात
उ० "	युञ्ज्याम्	युञ्ज्याव	युञ्ज्याम

'युज्' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	युङ्क्ते	युञ्जाते	युञ्जते
म० "	युङ्क्षे	युञ्जाथे	युङ्ग्ध्वे
उ० "	युञ्जे	युञ्ज्वहे	युञ्ज्महे

लृट्

प्र० पुरुष	योक्ष्यते	योक्ष्येते	योक्ष्यन्ते
म० "	योक्ष्यसे	योक्ष्येथे	योक्ष्यध्वे
उ० "	योक्ष्ये	योक्ष्यावहे	योक्ष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	युङ्क्ताम्	युञ्जाताम्	युञ्जताम्
म० "	युङ्क्ष्व	युञ्जाथाम्	युङ्ग्ध्वम्
उ० "	युनजै	युनजावहै	युनजामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अयुङ्क्त	अयुञ्जाताम्	अयुञ्जत
म० "	अयुङ्क्थाः	अयुञ्जाथाम्	अयुङ्ग्ध्वम्
उ० "	अयुञ्जि	अयुञ्ज्वहि	अयुञ्ज्महि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	युञ्जीत	युञ्जीयाताम्	युञ्जीरन्
म० "	युञ्जीथाः	युञ्जीयाथाम्	युञ्जीध्वम्
उ० "	युञ्जीय	युञ्जीवहि	युञ्जीमहि

रुधादिगण की अन्य धातुएँ

छिद् (काटना)—छिनत्ति, छेत्स्यति, छिनत्तु अच्छिनत्, छिन्द्यात् ।

भिद् (तोड़ना)—भिनत्ति, भेत्स्यति, भिनत्तु, अभिनत्, भिन्द्यात् ।

अभ्यास

नीचे लिखे क्रिया-रूपों के धातु, लकार, पुरुष और वचन लिखिए:

अयुञ्ज, भुङ्क्ष्व, रुन्धीथाः, युनक्षि, रोत्स्यथ, भोक्ष्यति, छेत्स्यति, भिन्द्यात् ।

२. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

राजा पर्वतेश्वर ने यवन शत्रुओं को रोका था। तक्षशिला के राजा की सेना यवनों से मिल गई थी। लेकिन पर्वतेश्वर अपनी तलवार से शत्रुओं के सिर काटता रहा। उस समय मगध का कायर राजा नन्द ऐश्वर्य का भोग कर रहा था यदि वह भी पर्वतेश्वर की सेना में मिल जाता तो यवन वहीं रुक जाते और अपने देश को भाग जाते। भारत के वीर क्षत्रिय जीत जाते और आनन्द पूर्वक राज्य का भोग करते। भारत के दुर्ग-द्वार को कभी भी शत्रु नहीं तोड़ पाते और भारत कभी पराधीन न होता।

८. तनादिगण

उभयपदी

'तन्' (विस्तार करना) परस्मैपदी

लट्

प्रथम पुरुष	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
म० ,,	तनोषि	तनुथः	तनथ
उ० ,,	तनोमि	तनुवः, तन्वः	तनुमः, तन्मः

लृट्

प्रथम पुरुष	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति
म० ,,	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ
उ० ,,	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः

लोट्

प्रथम पुरुष	तनोतु, तनुतात्	तनुताम्	तन्वन्तु
म० ,,	तनु, तनुतात्	तनुतम्	तनुत
उ० ,,	तनवानि	तनवाव	तनवाम

लङ्

प्र० पुरुष	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
म० "	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
उ० "	अतनवम्	अतनव, अतन्व	अतनुम, अतन्म

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
म० "	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात
उ० "	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

'तन्' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	तनुते	तन्वाते	तन्वते
म० "	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
उ० "	तन्वे	तनुवहे, तन्वहे	तनुमहे, तन्महे

लृट्

प्र० पुरुष	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
म० "	तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यध्वे
उ० "	तनिष्ये	तनिष्यावहे	तनिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	तनुता	तन्वाताम्	तन्वताम्
म० "	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
उ० "	तनवै	तनवावहै	तनवामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
म० "	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम
उ० "	अतन्वि	अतनुवहि, अतन्वहि	अतनुमहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
म० „	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
उ० „	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि

'कृ' (करना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म० „	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ० „	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लृट्

प्र० पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
म० „	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उ० „	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	करोतु, कुरुताम्	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म० „	कुरु, कुरुतात्	कुरुतम्	कुरुत
उ० „	करवाणि	करवाव	करवाम

लङ्

प्र० पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म० „	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ० „	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
म० „	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उ० „	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

'कृ' आत्मनेपदी

लट्

प्रथम पुरुष	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
म० "	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उ० "	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लृट्

प्रथम पुरुष	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
म० "	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उ "	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

लोट्

प्रथम पुरुष	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
म० "	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उ० "	करवै	करवावहै	करवामहै

लङ्

प्रथम पुरुष	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
म० "	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उ० "	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
म० "	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उ० "	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

अभ्यास

१. नीचे लिखे क्रिया-रूपों के धातु, लकार, पुरुष और वचन लिखिये : करवाणि, तन्वीथाः, कुरुष्व, करिष्यथः, तन्वीय, अकर्वि, तनुयाम् ।

२. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिये :

तुम शुभ कार्य करोगे तो पुण्य प्राप्त करोगे । जो ईश्वर को याद करता है, दान देता है, वह संसार में अपना यश फैलाता है । ईश्वर ने आकाश

को फैलाया है जिसके नीचे सभी निर्धन और धनवान् रहते हैं। ईश्वर सभी पर दया करता है। तुम भी निर्धन व्यक्तियों पर दया करो। किसी के लिए झूठ और धोखे का जाल न फैलाओ। जो कुछ कहो वह करो। जो कुछ नहीं कर सकते वह कभी न कहो।

६. क्र्यादिगण

उभयपदी

'क्री' (खरीदना) परस्मैपदी

लट्

प्रथम पुरुष	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
म० "	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उ० "	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

लृट्

प्रथम पुरुष	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
म० "	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उ० "	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	क्रीणातु, क्रीणातात्	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
म० ,,	क्रीणीहि, क्रीणीतात्	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उ० ,,	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

लङ्

प्र० पुरुष	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
म० ,,	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उ० ,,	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
म० ,,	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उ० ,,	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

'क्री' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
म० ,,	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उ० ,,	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

लृट्

प्र० पुरुष	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
म० ,,	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे
उ० ,,	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	क्रीणाताम्	क्रीणीताम्	क्रीणताम्
म० ,,	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ० ,,	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

लङ्

प्रथम पुरुष	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
म० ,,	अक्रीणीथा:	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उ० ,,	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
म० ,,	क्रीणीथा:	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ० ,,	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

ग्रह् (लेना) परस्मैपदी

लट्

प्रथम पुरुष	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
म० ,,	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उ० ,,	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

लृट्

प्रथम पुरुष	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
म० ”	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
उ० ”	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः

लोट्

प्रथम पुरुष	गृह्णातु, गृह्णातात्	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
म० ”	गृहाण, गृह्णीतात्	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उ० ”	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

लङ्

प्रथम पुरुष	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
म० ”	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उ० ”	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
म० ,,	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उ० ,,	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

'ग्रह्' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते
म० ,,	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
उ० ,,	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे

लृट्

प्र० पुरुष	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते
म० ,,	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यध्वे
उ० ,,	ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णीयाम्
म० ,,	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
उ० ,,	गृह्णै	गृह्णीवहै	गृह्णामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत
म० ,,	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
उ० ,,	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
म० ,,	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
उ० ,,	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि

'ज्ञा' (जानना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	जानाति	जानीतः	जानन्ति
म० ,,	जानासि	जानीथः	जानीथ
उ० ,,	जानामि	जानीवः	जानीमः

लृट्

प्रथम पुरुष	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
म० ,,	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उ० ,,	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

लोट्

प्रथम पुरुष	जानातु, जानीतात्	जानीताम्	जानन्तु
म० ,,	जानीहि, जानीतात्	जानीतम्	जानीत
उ० ,,	जानानि	जानाव	जानाम

लङ्

प्रथम पुरुष	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
म० "	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उ० "	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः
म० "	जानीयाः	जानीयाताम्	जानीयात
उ० "	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाः

'ज्ञा' आत्मनेपदी

लृट्

प्रथम पुरुष	जानीते	जानाते	जानते
म० "	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे
उ० "	जाने	जानीवहे	जानीमहे

लृट्

प्रथम पुरुष	ज्ञास्ये	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते
म० "	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यध्वे
उ० "	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे

लोट्

प्रथम पुरुष	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्
म० "	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
उ० "	जानै	जानावहै	जानामहै

लङ्

प्रथम पुरुष	अजानीत	अजानाताम्	अजानत
म० "	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्
उ० "	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्
म० ,,	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
उ० ,,	जानीय	जानीवहि	जानीमहि

'मुष्' (चुराना) परस्मैपदी

लट्

प्रथम पुरुष	मुष्णाति	मुष्णीतः	मुष्णन्ति
म० ,,	मुष्णासि	मुष्णीथः	मुष्णीथ
उ० ,,	मुष्णामि	मुष्णीवः	मुष्णीमः

लृट्

प्रथम पुरुष	मोषिष्यति	मोषिष्यतः	मोषिष्यन्ति
म० ,,	मोषिष्यसि	मोषिष्यथः	मोषिष्यथ
उ० ,,	मोषिष्यामि	मोषिष्यावः	मोषिष्यामः

लोट्

प्रथम पुरुष	मुष्णातु, मुष्णीतात्	मुष्णीताम्	मुष्णन्तु
म० ,,	मुषाण, मुष्णीतात्	मुष्णीतम्	मुष्णीत
उ० ,,	मुष्णानि	मुष्णाव	मुष्णाम

लङ्

प्रथम पुरुष	अमुष्णात्	अमुष्णीताम्	अमुष्णन्
म० ,,	अमुष्णाः	अमुष्णीतम्	अमुष्णीत
उ० ,,	अमुष्णाम्	अमुष्णीव	अमुष्णीम

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	मुष्णीयात्	मुष्णीयाताम्	मुष्णीयुः
म० ,,	मुष्णीयाः	मुष्णीयातम्	मुष्णीयात
उ० ,,	मुष्णीयाम्	मुष्णीयाव	मुष्णीयाम

१०. चुरादिगण

उभयपदी

'चुर' (चुराना)

लट्

प्र० पुरुष	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
म० ,,	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उ० ,,	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लृट्

प्र० पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
म० ,,	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उ० ,,	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	चोरयतु, चोरयतात्	चोरयताम्	चोरयन्तु
म० ,,	चोरय, चोरयतात्	चोरयतम्	चोरयत
उ० ,,	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

लङ्

प्र० पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
म० ,,	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उ० ,,	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
म० ,,	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उ० ,,	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

'चुर्' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
म० ,,	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उ० ,,	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे

लृट्

प्र० पुरुष	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
म० ,,	चोरयिष्यसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्यध्वे
उ० ,,	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
म० ,,	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
उ० ,,	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त
म० ,,	अचोरयथाः	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
उ० ,,	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	चोरयेत	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्
म० ,,	चोरयेथाः	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
उ० ,,	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि

'चिन्त्' (सोचना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	चिन्तयति	चिन्तयतः	चिन्तयन्ति
म० ,,	चिन्तयसि	चिन्तयथः	चिन्तयथ
उ० ,,	चिन्तयामि	चिन्तयावः	चिन्तयामः

लृट्

प्र० पुरुष	चिन्तयिष्यति	चिन्तयिष्यतः	चिन्तयिष्यन्ति
म० ,,	चिन्तयिष्यसि	चिन्तयिष्यथः	चिन्तयिष्यथ
उ० ,,	चिन्तयिष्यामि	चिन्तयिष्यावः	चिन्तयिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	चिन्तयतु, चिन्तयतात्	चिन्तयताम्	चिन्तयन्तु
म० ,,	चिन्तय, चिन्तयतात्	चिन्तयतम्	चिन्तयत
उ० ,,	चिन्तयानि	चिन्तयाव	चिन्तयाम

लङ्

प्र० पुरुष	अचिन्तयत्	अचिन्तयताम्	अचिन्तयन्
म० ,,	अचिन्तयः	अचिन्तयतम्	अचिन्तयत
उ० ,,	अचिन्तयम्	अचिन्तयाव	अचिन्तयाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	चिन्तयेत्	चिन्तयेताम्	चिन्तयेयुः
म० ,,	चिन्तयेः	चिन्तयेव	चिन्तयेत
उ० ,,	चिन्तयेयम्	चिन्तयेव	चिन्तयेम

'चिन्त्' आत्मनेपदी

लृट्

प्र० पुरुष	चिन्तयते	चिन्तयावहे	चिन्तयन्ते
म० ,,	चिन्तयसे	चिन्तयेथे	चिन्तयध्वे
उ० ,,	चिन्तये	चिन्तयावहे	चिन्तयामहे

लृट्

प्र० पुरुष	चिन्तयिष्यते	चिन्तयिष्येते	चिन्तयिष्यन्ते
म० ,,	चिन्तयिष्यसे	चिन्तयिष्येथे	चिन्तयिष्यध्वे
उ० ,,	चिन्तयिष्ये	चिन्तयिष्यावहे	चिन्तयिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	चिन्तयताम्	चिन्तयेताम्	चिन्तयन्ताम्
म० ,,	चिन्तयस्व	चिन्तयेथाम्	चिन्तयध्वम्
उ० ,,	चिन्तयै	चिन्तयावहै	चिन्तयामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अचिन्तयत	अचिन्तयेताम्	अचिन्तयन्त
म० ,,	अचिन्तयथाः	अचिन्तयेथाम्	अचिन्तयध्वम्
उ० ,,	अचिन्तये	अचिन्तयावहि	अचिन्तयामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	चिन्तयेत	चिन्तयेयाताम्	चिन्तयेरन्
म० ,,	चिन्तयेथाः	चिन्तयेयाथाम्	चिन्तयेध्वम्
उ० ,,	चिन्तयेय	चिन्तयेवहि	चिन्तयेमहि

'तड्' (मारना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	ताडयति	ताडयतः	ताडयन्ति
म० ,,	ताडयसि	ताडयथः	ताडयथ
उ० ,,	ताडयामि	ताडयावः	ताडयामः

लृट्

प्र० पुरुष	ताडयिष्यति	ताडयिष्यतः	ताडयिष्यन्ति
म० ,,	ताडयिष्यसि	ताडयिष्यथः	ताडयिष्यथ
उ० ,,	ताडयिष्यामि	ताडयिष्यावः	ताडयिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	ताडयतु, ताडयतात्	ताडयताम्	ताडयन्तु
म० ,,	ताडय, ताडयतात्	ताडयतम्	ताडयत
उ० ,,	ताडयानि	ताडयाव	ताडयाम

लङ्

प्र० पुरुष	अताडयत्	अताडयताम्	अताडयन्
म० ,,	अताडयः	अताडयतम्	अताडयत
उ० ,,	अताडयम्	अताडयाव	अताडयाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	ताडयेत्	ताडयेताम्	ताडयेयुः
म० ,,	ताडयेः	ताडयेतम्	ताडयेत
उ० ,,	ताडयेयम्	ताडयेव	ताडयेम

'तड्' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	ताडयते	ताडयेते	ताडयन्ते
म० ,,	ताडयसे	ताडयेथे	ताडयध्वे
उ० ,,	ताडये	ताडयावहे	ताडयामहे

लृट्

प्र० पुरुष	ताडयिष्यते	ताडयिष्येते	ताडयिष्यन्ते
म० ,,	ताडयिष्यसे	ताडयिष्येथे	ताडयिष्यध्वे
उ० ,,	ताडयिष्ये	ताडयिष्यावहे	ताडयिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	ताडयताम्	ताडयेताम्	ताडयन्ताम्
म० ,,	ताडयस्व	ताडयेथाम्	ताडयध्वम्
उ० ,,	ताडयै	ताडयावहै	ताडयामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अताडयत	अताडयेताम्	अताडयन्त
म० ,,	अताडयथाः	अताडयेथाम्	अताडयध्वम्
उ० ,,	अताडये	अताडयावहि	अताडयामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	ताडयेत	ताडयेयाताम्	ताडयेरन्
म० ,,	ताडयेथाः	ताडयेयाथाम्	ताडयेध्वम्
उ० ,,	ताडयेय	ताडयेवहि	ताडयेमहि

'कथ्' (कहना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
म० "	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उ० "	कथयामि	कथयावः	कथयामः

लृट्

प्र० पुरुष	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
म० "	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
उ० "	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	कथयतु,कथततात्	कथयताम्	कथयन्तु
म० "	कथय, कथयतात्	कथयतम्	कथयत
उ० "	कथयानि	कथयाव	कथयाम

लङ्

प्र० पुरुष	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
म० "	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
उ० "	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः
म० "	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत
उ० "	कथयेयम्	कथयेव	कययेम

'कथ्' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	कथयते	कथयेते	कथयन्ते
म० "	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे
उ० "	कथये	कथयावहे	कथयामहे

लृट्

प्र० पुरुष	कथयिष्यते	कथयिष्येते	कथयिष्यन्ते
म० ,,	कथयिष्यसे	कथयिष्येथे	कथयिष्यध्वे
उ० ,,	कथयिष्ये	कथयिष्यावहे	कथयिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम्
म० ,,	कथयस्व	कथयेथम्	कथयध्वम्
उ० ,,	कथयै	कथयावहै	कथयामहै

लङ्

प्र० पुरुष	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त
म० ,,	अकथयथाः	अकथयेथाम्	अकथयध्वम्
उ० ,,	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	कथयेत	कथयेयाताम्	कथयेरन्
म० ,,	कथयेथाः	कथयेयाथाम्	कथयेध्वम्
उ० ,,	कथयेय	कथयेवहि	कथयेमहि

'भक्ष्' (खाना) परस्मैपदी

लट्

प्र० पुरुष	भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति
म० ,,	भक्षयसि	भक्षयथः	भक्षयथ
उ० ,,	भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः

लृट्

प्र० पुरुष	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यः	भक्षयिष्यन्ति
म० ,,	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथः	भक्षयिष्यथ
उ० ,,	भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्यावः	भक्षयिष्यामः

लोट्

प्र० पुरुष	भक्षयतु, भक्षयतात्	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
म० ,,	भक्षय, भक्षयतात्	भक्षयतम्	भक्षयत
उ० ,,	भक्षयाणि	भक्षयाव	भक्षयाम

लङ्

प्र० पुरुष	अभक्षयम्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
म० ,,	अभक्षयः	अभक्षयतम्	अभक्षयत
उ० ,,	अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम।

विधिलिङ्

प्र० पुरुष	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयुः
म० ,,	भक्षयेः	भक्षयेतम्	भक्षयेत
उ० ,,	भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयम

'भक्ष्' आत्मनेपदी

लट्

प्र० पुरुष	भक्षयते	भक्षयेते	भक्षयन्ते
म० ,,	भक्षयसे	भक्षयेथे	भक्षयध्वे
उ० ,,	भक्षये	भक्षयावहे	भक्षयामहे

लृट्

प्र० पुरुष	भक्षयिष्यते	भक्षयिष्येते	भक्षयिष्यन्ते
म० ,,	भक्षयिष्यसे	भक्षयिष्येथे	भक्षयिष्यध्वे
उ० ,,	भक्षयिष्ये	भक्षयिष्यावहे	भक्षयिष्यामहे

लोट्

प्र० पुरुष	भक्षयताम्	भक्षयेताम्	भक्षयन्ताम्
म० ,,	भक्षयस्व	भक्षयेथाम्	भक्षयध्वम्
उ० ,,	भक्षयै	भक्षयावहै	भक्षयामहै

लङ्

प्रथम पुरुष	अभक्षयत	अभक्षयेताम्	अभक्षयन्त
म० ,,	अभक्षयथाः	अभक्षयेथाम्	अभक्षयध्वम्
उ० ,,	अभक्षये	अभक्षयावहि	अभक्षयामहि

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	भक्षयेत	भक्षयेयाताम्	भक्षयेरन्
म० ,,	भक्षयेथाः	भक्षयेयाथाम्	भक्षयेध्वम्
उ० ,,	भक्षयेय	भक्षयेवहि	भक्षयेमहि

चुरादिगण की अन्य धातुएँ

उभयपदी

क्षप् (बिताना)—क्षपयति, क्षपयिष्यति, क्षपयतु, अक्षपयत्, क्षपयेत ।
क्षपयते, क्षपयिष्यते, क्षपयताम्, अक्षपयत, क्षपयेत ।

क्षल् (धोना)—क्षालयति, क्षालयिष्यति, क्षालयतु, अक्षालयत्, क्षालयेत् ।
क्षालयते, क्षालयिष्यते, क्षालयताम्, अक्षायलत, क्षालयेत ।

लल् (लाल्—प्यार करना)—लालयति, लालयिष्यति, लालयतु, अलालयत्, लालयेत् ।
लालयते, लालयिष्यते, लालयताम्, अलालयत, लालयेत ।

वर्ण् (वर्णन करना)—वर्णयति, वर्णयिष्यति, वर्णयतु, अवर्णयत्, वर्णयेत् ।
वर्णयते, वर्णयिष्यते, वर्णयताम्, अवर्णयत, वर्णयेत ।

सुख् (सुख पाना)—सुखयति, सुखयिष्यति, सुखयतु, असुखयत्, सुखयेत् ।
सुखयते, सुखयिष्यते, सुखयताम्, असुखयत, सुखयेत ।

रच् (बनाना)—रचयति, रचयिष्यति, रचयतु, अरचयत्, रचयेत् ।
रचयते, रचयिष्यते, रचयताम्, अरचयत, रचयेत ।

तुल् (तोलना)—तोलयति, तोलयिष्यति, तोलयतु, अतोलयत्, तोलयेत् ।
तोलयते, तोलयियष्ते, तोलयताम्, अतोलयत, तोलयेत ।

चूर्ण् (पीसना)—चूर्णयति, चूर्णयिष्यति चूर्णयतु, अचूर्णयत् चूर्णयेत ।
चूर्णयते, चूर्णयिष्यते, चूर्णयताम्, अचूर्णयत, चूर्णयेत ।

गण् (गिनना)—गणयति, गणयिष्यति, गणयतु, अगणयत्, गणयेत् ।
गणयते, गणयिष्यते, गणयताम्, अगणयत, गणयेत ।

पाल् (पालना)—पालयति, पालयिष्यति, पालयतु, अपालयत्, पालयेत ।
पालयते, पालयिष्यते, पालयताम्, अपालयत, पालयेत ।

सूच् (सूचना देना)—सूचयति, सूचयिष्यति, सूचयतु, असूचयत्, सूचयेत ।
सूचयते, सूचयिष्यते, सूचयताम्, असूचयत, सूचयेत ।

वृ (चुनना)—वरयति, वरयिष्यति, वरयतु, अवरयत्, वरयेत ।
वरयते, वरयिष्यते, वरयताम्, अवरयत, वरयेत ।

पूज् (पूजा करना)—पूजयति, पूजयिष्यति, पूजयतु, अपूजयत्, पूजयेत् ।
पूजयते, पूजयिष्यते, पूजयताम्, अपूजयत, पूजयेत ।

अभ्यास

१. निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखिए :

भक्ष् (लङ्), क्री (लृट), ग्रह् (लोट्), ज्ञा (लृट्), कथ् (लोट्), चिन्त् (विधिलिङ्), ताड् (लट्) ।

२. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

क्या तुम बहुत से फल खरीदोगे ? रमेश फलों को कभी भी खरीदता नहीं। वह बाग से फलों को चुराता है। वह नहीं जानता कि यह पाप है। वह सोचता है कि यह कला है। उसके पिता जब सुनते हैं तो बहुत मारते हैं। उसके पिता उससे कहते हैं कि अब फिर फलों को चुरा कर खाओगे तो बहुत मारूँगा। जो व्यक्ति चोरी करता है, भगवान उसे दंड देते हैं। राजा हरिश्चन्द्र ने जीवन भर सत्य बोला, दान को जीवन का उद्देश्य जाना और अपने व्रत का पालन करते रहे। वे ईश्वर का चिन्तन करते थे। तुम भी इन आदर्शों का पालन करो।

एकादश अध्याय

णिजन्त रूप

णिजन्त अथवा प्रेरणार्थक क्रिया उसे कहते हैं जो किसी की प्रेरणा से की जाती है। इसे णिजन्त इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसकी रचना धातु के आगे 'णिच्' प्रत्यय लगने से होती है। 'णिच्' के 'ण्' और 'च्' का लोप होकर 'इ' का 'अय' रुप बन जाता है।

प्रेरणार्थक रूप बनाने की विधि

(१) चुरादिगण की तरह धातुओं के पीछे 'णिच्' को लगाते हैं। 'णिच्' के 'ण' तथा 'च' का लोप होकर 'इ' का 'अय' हो जाता है। जैसे—रच्+णिच्+ति=रच्+अय्+ति=रचयति।

(२) जिन धातुओं के अन्त में स्वर हो, उनके अन्तिम स्वम को अय् परे होने पर वृद्धि होती है। जैसे—कृ+णिच्+ति=कार्+अय्+ति=कारयति।

(३) अकारान्त धातुओं के बाद 'अय्' से पहले प्रायः 'प' का आगम होता है। जैसे—स्थापयति (रखवाता है) स्था+प्+णिच्+ति=स्थापयति।

(४) हलन्त धातुओं के अन्य हल् से पूर्व के ह्रस्व या दीर्घ इ, उ या ऋ क्रमशः ए, ओ और अर् हो जाते हैं। जैसे—दिव+णिच्+ति=देवयति; मुद्+णिच्+ति=मोदयति; स्पर्श+णिच+ति=स्पर्शयति।

(५) हलन्त धातुओं के अन्त्य हल से पूर्व का 'अ' दीर्घ 'आ' हो जाता है। जैसे—पठ्+णिच्+ति=पाठयति।

(६) यदि क्रिया का फल कर्ता को मिलता है तो आत्मनेपदी के प्रत्यय लगते हैं, अन्यथा परस्मैपद के प्रत्यय लगते हैं।

परस्मैपदी के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	ति	तः	
म० "	सि	थः	थ
उ० "	मि	वः	मः

आत्मनेपदी के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	ते	इते	न्ते
म० "	से	इथे	ध्वे
उ० "	इ	वहे	महे

कुछ धातुओं के प्रेरणार्थक रूप

धातु	परस्मैपदी	आत्मनेपदी	
भू	भावयति	भावयते	(होना कराता है)
हस्	हासयति	हासयते	(हंसाता है)
रक्ष्	रक्षयति	रक्षयते	(रखवाता है)
वद्	वादयति	वादयते	(बुलवाता है)
पच्	पाचयति	पाचयते	(पकवाता है)
नम्	नमयति	नमयते	(झुकाता है)
गम्	गमयति	गमयते	(ले जाता है)
दृश्	दर्शयति	दर्शयते	(दिखाता है)
सद्	सीदयति	सीदयते	(बिठाता है)
स्था	स्थापयति	स्थापयते	(ठहराता है)
स्मृ	स्मारयति	स्मारयते	(याद दिलाता है)
पा (पिब्)	पाययति	पाययते	(पिलाता है)
जि	जाययति	जाययते	(जिताता है)
सेव्	सेवयति	सेवयते	(सेवा करता है)
लभ्	लम्भयति	लम्भयथे	(प्राप्त कराता है)
वृध्	वर्धयति	वर्धयते	(बढ़ाता है)

मुद्	मोदयति	मोदयते	(प्रसन्न करता है)
ईक्ष्	ईक्षयति	ईक्षयते	(दिखाता है)
याच्	याचयति	याचयते	(मँगवाता है)
नी	नाययति	नाययते	(पहुँचवाता है)
हृ	हारयति	हारयते	(चोरी कराता है)
अद्	आदयति	आदयते	(खिलाता है)
स्तु	स्तावयति	स्तावयते	(स्तुति कराता है)
ब्रू	वाचयति	वाचयते	(बुलवाता है)
रुद्	रोदयति	रोदयते	(रुलाता है)
दुह्	दोहयति	दोहयते	(दुहाता है)
जागृ	जागरयति	जागरयते	(जगाता है)
स्वप्	स्वापयति	स्वापयते	(सुलाता है)
हन्	घातयति	घातयते	(वध कराता है)
विद्	वेदयति	वेदयते	(ज्ञान कराता है)
शास्	शासयति	शासयते	(शासन कराता है)
इ	गमयति	गमयते	(ले जाता है)
आस्	आसयति	आसयते	(बिठाता है)
शी	शाययति	शाययते	(सुलाता है)
अधि+इ	अध्यापयति	अध्यापयते	(पढ़ाता है)
हु	हावयति	हावयते	(हवन कराता है)
भी	भापयति	भापयते	(डराता है)
दा	दापयति	दापयते	(दिलाता है)
दिव्	देवयति	देवयते	(चमकाता है; जुआ खिलाता है)
नृत्	नर्तयति	नर्तयते	(नचाता है)
व्यध्	व्याधयति	व्याधयते	(वध कराता है)
नश्	नाशयति	नाशयते	(नष्ट कराता है)

शम्	शमयति	शमयते	(शांत कराता है)
भ्रम्	भ्रमयति	भ्रमयते	(घुमाता है)
युध्	योधयति	योधयते	(युद्ध कराता है)
जन्	जनयति	जनयते	(उत्पन्न कराता है)
सु	सावयति	सावयते	(रस निकलवाता है)
आप्	आपयति	आपयते	(प्राप्त कराता है)
शक्	शाकयति	शाकयते	(समर्थ कराता है)
तुद्	तोदयति	तोदयते	(दुःख दिलाता है)
इष्	एषयति	एषयते	(इच्छा करता है)
स्पृश्	स्पर्शयति	स्पर्शयते	(स्पर्श कराता है)
प्रच्छ्	प्रच्छयति	प्रच्छयते	(पुछवाता है)
मृ	मारयति	मारयते	(वध कराता है)
विद् (विन्द्)	वेदयति	वेदयते	(प्राप्त कराता है)
मुच्	मोचयति	मोचयते	(छुड़वाता है)
रुध्	रोधयति	रोधयते	(रुकवाता है)
भुज्	भोजयति	भोजयते	(भोग कराता है)
युज्	योजयसि	योजयते	(मिलाता है)
तन्	तानयति	तानयते	(फैलवाता है)
कृ	कारयति	कारयते	(करवाता है)
क्री	क्रापयति	क्रापयते	(खरीदवाता है)
ग्रह्	ग्राहयति	ग्राहयते	(दिलाता है)
ज्ञा	ज्ञापयति	ज्ञापयते	(ज्ञान दिलाता है)
मुष्	मोषयति	मोषयते	(चुरवाता है)
चुर्	चोरयति	चोरयते	(चोरी कराता है)
चिन्त्	चिन्तयति	चिन्तयते	(विचार कराता है)
तड्	ताडयति	ताडयते	(पिटवाता है)
कथ्	कथयति	कथयते	(कहलवाता है)
भक्ष्	भक्षयति	भक्षयते	(खिलाता है)

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो :

राजा दशरथ ने चारों पुत्रों को गुरु के पास पढ़ने के लिए भिजवाया। गुरु उन्हें पढ़ाते थे। वे इन चारों राजकुमारों से आश्रमवासियों की रक्षा भी कराते थे। सन्ध्या-समय भगवान के विराट करते और कराते थे। भगवान राम भी गुरु जी को वचनामृत पिलाते थे। मुनि ने उन्हें चारों वेद याद कराये थे। मुनिवर गुरु ने राम के बहुत-से राक्षस मरवाये थे। राम सभी वनवासियों को सुख प्राप्त कराते थे। लेकिन राक्षस फिर भी नहीं मानते थे। उनकी बुद्धि पाप करवाती थी। राम ने उन सब को मारा और भवसागर से पार कराया। इस प्रकार राम ने राक्षसों को भी मोक्ष दिलाया।

२. निम्नलिखित णिजन्त रूप की धातु, लकार, पुरुष और वचन बताओ :

नर्तयन्ति, निपातयेत्, परिशोषयति, मारयावहै, ज्ञापयिष्यति, कारयेः, अतानयः, योजयति।

३. नीचे लिखी धातुओं के णिजन्त रूप बनाओ :

दह् (लृट्), भुज् (लट्), गण् (लङ्), क्री (लट्), मुच् (विधिलिङ्), स्पृश् (लोट्), लिख् (लङ्), प्रच्छ् (लट्), पठ् (लृट्), गम् (लोट्)।

द्वादश अध्याय

विशेषण

जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताए उसे विशेषण कहते हैं। यथा—

सुन्दरः बालकः आगच्छति।

विशेषता बताने के अनुसार विशेषण के ६ प्रकार हैं :

१. व्यक्तिवाचक
२. गुणवाचक
३. परिमाणवाचक
४. संख्यावाचक
५. संकेतवाचक
६. प्रश्नवाचक

१. **व्यक्तिवाचक विशेषण**—व्यक्तिवाचक संज्ञा से बना हुआ रूप यदि किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम को विशेषित करे, उसे व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं। यथा—

(क) भारतीय-कृषकाः विकास-पथम् अनुसरन्ति।

(ख) नारदीय-सूत्रे पारंगतोऽस्मि

२. **गुणवाचक विशेषण**—जिसके द्वारा किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण अथवा अवस्था का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। यथा—

(क) कृष्णः अश्वः धावति।

(ख) वृक्षे मनोहरानि फलानि सन्ति।

३. **परिमाणवाचक विशेषण**—जिसके द्वारा संज्ञा अथवा सर्वनाम के

परिमाण का बोध हो, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। यथा—

(क) राजा प्रभूतं धनं धर्मार्थाय ददाति।

(ख) सरोवरे अधिकं जलं नास्ति।

४. **संख्यावाचक विशेषण**—जो विशेषण संख्या का बोध कराये, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। यथा—

(क) त्रिचतुराः बालकः क्रीडन्ति।

(ख) सप्तसु अध्यायेषु रामस्य वृत्तान्तं अस्ति।

(ग) एकस्मिन् वने व्याघ्रः वसति स्म।

५. **संकेतवाचक विशेषण**—जिस विशेषण से संकेत का बोध हो, उसे संकेतवाचक विशेषण कहते हैं। यथा—

(क) इयं नदी तीव्रं प्रवहति।

(ख) अयं पुरुषः कुत्र गच्छति ?

६. **प्रश्नवाचक विशेषण**—जिस विशेषण से संज्ञा अथवा सर्वनाम के प्रति प्रश्न का बोध हो, उसे प्रश्नवाचक विशेषण कहते हैं। यथा—

(क) कस्मिन् वने अयं मुनिः वसति ?

(ख) कस्य पुरुषस्य अश्वः धावति ?

तुलनात्मक विशेषण

विशेषण शब्दों के लिङ्ग, विभक्ति और वचन विशेष्य से लिङ्ग, विभक्ति और वचन के अनुसार होते है। विशेषण शब्दों से तुलना या तारतम्य (Degrees of comparison) का भी बोध होता है। वस्तुओं के परस्पर गुण-दोष के मिलान को तुलना कहते हैं। तुलना के लिए 'तर', 'तम' प्रत्ययों का प्रयोग होता है।

तुलना के विचार से विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं :

१. **मूलावस्था** (Positive Degree)

२. **उत्तरावस्था** (Comparative Degree)

३. **उत्तमावस्था** (Superlative Degree)

कुछ उदाहरण देखिए :—

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
सुन्दर	सुन्दरतर	सुन्दरतम
योग्य	योग्यतर	योग्यतम
लघु	लघुतर	लघुतम
गुरु	गुरुतर	गुरुतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
महत्	महत्तर	महत्तम

कहीं-कहीं इसी अर्थ में ईयस् और इष्ठ प्रत्ययों का भी प्रयोग होता है। यथा—

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
प्रिय	प्रेयस्	प्रेष्ठ
श्रिय	श्रेयस्	श्रेष्ठ
लघु	लघीयस्	लघिष्ठ
गुरु	गरीयस्	गरिष्ठ
पटु	पटीयस्	पटिष्ठ
दृढ	द्रढीयस्	द्रढिष्ठ
अल्प	अल्पीयस्, कनीयस्	अल्पिष्ठ, कनिष्ठ
पृथु	प्रथीयस्	प्रथिष्ठ
कृश	क्रशीयस्	क्रशिष्ठ
युवन्	यवीयस्, कनीयस्	यविष्ठ, कनिष्ठ
वृद्ध	ज्यागस्	ज्येष्ठ

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
महत्	महीयस्	महिष्ठ
बलिन्	बलीयस्	बलिष्ठ
स्थूल	स्थवीयस्	स्थविष्ठ
क्षिप्र	क्षेपीयस्	क्षेपिष्ठ
क्षुद्र	क्षोदीयस्	क्षोदिष्ठ
उरु (विशाल)	वरीयस्	वरिष्ठ

सभी ईयस्-प्रत्ययान्त शब्दों के रूप इस प्रकार बनते हैं—

'श्रेयस्' (अधिक शुभ) पुंल्लिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रेयान्	श्रेयांसौ	श्रेयांस
द्वितीया	श्रेयांसम्	,,	श्रेयसः
तृतीया	श्रेयसा	श्रेयोभ्याम्	श्रेयोभिः
चतुर्थी	श्रेयसे	,,	श्रेयोभ्यः
पंचमी	श्रेयसः	,,	,,
षष्ठी	,,	श्रेयसोः	श्रेयसाम्
सप्तमी	श्रेयसि	,,	श्रेयस्सु
सम्बोधन	हे श्रेयन् !	हे श्रेयांसौ !	हे श्रेयांसः !

'श्रेयस्' स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रेयसी	श्रेयस्यौ	श्रेयस्यः
द्वितीया	श्रेयसीम्	,,	श्रेयसीः
तृतीया	श्रेयस्या	श्रेयसीभ्याम्	श्रेयसीभिः
चतुर्थी	श्रेयस्यै	,,	,,

पंचमी	श्रेयस्याः	श्रेयसीभ्याम्	श्रेयसीभ्यः
षष्ठी	"	श्रेयस्योः	श्रेयसीनाम्
सप्तमी	श्रेयस्याम्	"	श्रेयसीषु
सम्बोधन	हे श्रेयसि !	हे श्रेयस्यौ !	हे श्रेयस्यः !

नपुंसकलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रेयः	श्रेयसी	श्रेयांसि
द्वितीया	श्रेयः	"	"
सम्बोधन	हे श्रेयः !	हे श्रेयसी !	हे श्रेयांसि !

शेष रूप पुल्लिंग की भाँति बनते हैं।

इष्ठ-प्रत्ययान्त शब्दों के रूप राम, रमा और फल की भाँति बन सकते हैं। यथा—

पुल्लिंग—	लघिष्ठः	लघिष्ठौ	लघिष्ठाः
स्त्रीलिंग—	लघिष्ठा	लघिष्ठे	लघिष्ठाः
नपुंसकलिंग—	लघिष्ठम्	लघिष्ठे	लघिष्ठानि

अभ्यास

१. विशेषण किसे कहते हैं एवं कितने प्रकार के होते हैं ? सोदाहरण उल्लेख कीजिये।

२. तुलना अथवा तारतम्य किसे कहते हैं ? तुलना की दृष्टि से विशेषण की अवस्थाओं को सोदाहरण बताइये।

३. ईयस् और तम प्रत्यय किन अर्थों में प्रयोग किए जाते हैं ? उदाहरण देकर समझाइये।

४. नीचे लिखे शब्दों के ईयस् और इष्ठ-प्रत्ययान्त रूप लिखो :
दीर्घ, वृद्ध, मृदु, स्थिर, लघु, गुरु, महत्, पटु, प्रिय।

५. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो :

तुम्हारे पुत्रों में से रमेश सबसे सुन्दर है। इन फलों में से जो सबसे बड़ा है वह मेरा है। नीले आकाश में सबसे छोटा तारा चमक रहा है। कैलाश की चोटी सबसे ऊँची है। मैं सबसे छोटा बेटा हूँ इसलिए पिता का सबसे प्यारा हूँ। भारत में एक महान् पुरुष पं० जवाहर लाल नेहरू थे। वह बालक बड़ा कमजोर है।

त्रयोदश अध्याय

अव्यय

जो शब्द तीनों लिंगों में, सभी विभक्तियों में तथा सभी वचनों में एकसमान रहते हैं, वे 'अव्यय' कहलाते हैं। यही अव्यय क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयोग किये जाते हैं। कुछ अव्यय यहाँ पर दिए जाते हैं :

यदा = जब
सदा = सदैव
सर्वदा = हमेशा
प्रायः = बहुधा
कदा = कब
इदानीम् = अब
अधुना = अब
तदानीम् = तब
अत्र = यहाँ
कुत्र = कहाँ
यत्र = जहां
तत्र = वहाँ
सर्वत्र = सभी जगह
यतः = क्योंकि
अतः = इसलिए
ततः = उसके बाद
पश्चात् = पीछे
यावत् = जब तक, ज्यों
तावत् = तब तक, त्यों

सर्वथा = सब तरह
अद्य = आज
श्वः = कल (आने वाला)
ह्यः = कल (बीता हुआ)
पुरः = आगे
पुरा = प्राचीन काल में
वृथा = व्यर्थ
सम्यक् = अच्छी तरह
खलु = निश्चय से
किल = निश्चय से
ध्रुवम् = निश्चय से
नूनम् = निश्चय से
सहसा = एकदम
उच्चैः = ऊँचे, ऊपर
नीचैः = नीचे
शीघ्रम् = जल्दी से
शनैः = धीरे-धीरे
प्रातः = प्रातःकाल
सायम् = संध्याकाल

कथम्=किस तरह	अलम्=बस, पर्याप्त
इत्थम्=इस तरह	विना=विना
यथा=जिस तरह, जैसे	अथवा=या
तथा=उस तरह, वैसे	इति=यह, समाप्त
अथ=तब, आरम्भ	इह=यहाँ
अपि=भी	उपरि=ऊपर
इव=समान	धिक्=धिक्कार
ऋते=बिना	वा=अथवा
च=और	वत्=समान
न=नहीं	हन्त=खेदबोधक
पृथक्=अलग	बहिः=बाहर
साक्षात्=साक्षात्	पुनः=फिर

अभ्यास

१. अव्यय किसे कहते हैं ? उदाहरण दीजिये।

२. संस्कृत में अनुवाद करो :

जब-जब युद्ध होता है, तब-तब नया समाज उत्पन्न होता है। वह सदैव मेरा मित्र रहेगा। मोहन के पिता कल आ रहे हैं। वह किस तरह शीघ्र दौड़ता है ? प्रायः तुम्हारे पास वह भिक्षुक आया करता है। वह अच्छी तरह कार्य करता है। निश्चय ही तुम चोर हो, तुम्हें धिक्कार है ! वह साक्षात् देवी है। प्राचीन काल में देवदत्त नाम का राजा था। वह धीरे-धीरे आ रहा है। वह कल प्रातःकाल विदेश चला गया।

चतुर्दश अध्याय

उपसर्ग

जो शब्दांश क्रिया तथा अन्य शब्दों के आदि में लगते हैं और उनके अर्थ में विशिष्टता लाकर परिवर्तन करते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं। यहाँ प्रसिद्ध उपसर्गों के नाम दिए जाते हैं :

अ=नहीं;, जैसे—अभाव, अधर्म, असफल, अटूट, अटल, अनीति, अज्ञान।

अति=अधिक, जैसे—अतिदीन, अतिरिक्त, अतिशय, अत्यन्त, अत्याचार।

अधि=ऊपर, श्रेष्ठ, स्थान; जैसे—अधिपति, अधिष्ठान, अधिकार, अधिराज, अधिष्ठाता, अध्यात्म।

अनु=पीछे, समान; जैसे—अनुज, अनुचर, अनुरुप, अनुकरण, अनुशासन अनुगमन।

अप=परे, दूर, बुरा, हीन, विरुद्ध, अभाव, जैसे—अपनयन, अपमान, अपशब्द, अपकीर्ति, अपभ्रंश।

अपि=निकट, ऊपर, जैसे—अपिधान, अपिहित।

अभि=ओर, निकट, जैसे—अभ्यागत, अभिमुख।

अव=हीन, नीचे, जैसे—अवनति, अवगुण, अवतार।

आ (आङ)=तक, ओर, समेत, जैसे—आजीवन, आकर्ण, आगमन, आबालवृद्ध।

इति=ऐसा, यह, जैसे—इतिवृत, इतिहास।

उत्=ऊपर श्रेष्ठ, जैसे—उन्नति, उत्पत्ति, उत्कर्ष।

उप=समीप, गौण, सदृश, जैसे—उपकार, उपकूल, उपगङ्गा, उपवन, उपदेश, उपनाम, उपवेद।

कु=बुरा, जैसे—कुकर्म, कुरूप, कुविचार, कुमति।

दुर=बुरा, कठिन, जैसे—दुर्गुण, दुराचार, दुर्जन, दुर्गम ।

दुस्=कठिन, जैसे—दुस्तर, दुष्कर ।

नि=नीचे, बहुत, जैसे—निरोध, निपात, निधान ।

निर्=बाहर, निषेध, जैसे—निर्मम, निःशंक, निर्दोष, निरपराध ।

परा=पीछे, विरुद्ध, जैसे—पराजय, पराभव, परामर्श ।

परि=आस-पास, सब तरफ, पूर्ण, जैसे—परिक्रमा, परिजन, परितोष ।

प्र=प्रकर्ष, जैसे—प्रभाव, प्रबल, प्रहार, प्रवाह ।

प्रति=सामने, विपरीत, जैसे—प्रत्यक्ष, प्रतिवादी प्रतिदिन ।

वि=भिन्न, विशेष, जैसे—विदेश, विख्यात, विज्ञान ।

सह=साथ, जैसे—सहकारी, सहज, सहचर, सहानुभूति ।

सु=अच्छा, सहज, अधिक, जैसे—सुपुत्र, सुगम, सुकर्म, सुशिक्षित ।

अभ्यास

१. उपसर्ग किसे कहते हैं ? उदाहरण दीजिए ।

२. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

लक्ष्मण राम के पीछे वन जाते हैं । सीता अनुसरण करती है । गोमती स्वर्ग से उतरती है । राजा प्रजा की उन्नति करता है । राम रावण की सेना का संहार करते हैं और रावण को हरा देते हैं ।

पञ्चदश अध्याय

वाच्य

संस्कृत में तीन वाच्य हैं : कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

कर्तृवाच्य—इसके वाक्य में कर्त्ता प्रथमा का होता है; क्रिया के पुरुष और वचन कर्त्ता के अनुसार होते हैं, अर्थात कर्त्ता प्रथमा विभक्ति में, कर्म द्वितीया विभक्ति में और क्रिया कर्त्ता की अनुगामिनी होती है। कर्त्ता के लिंग या कर्म के पुरुष, वचन या लिंग का क्रिया पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जैसे—

देवः ग्रामं रक्षति।
रामः अश्वं नयति।
बालकौ पठतः पुस्तकम्।
रमेशः मोहनं पश्यति।
ते फलानि खादन्ति।
बालकाः दुग्धं पिबन्ति।
वाल्मीकिः रामायणं लिखति।
माता पुत्रान् पालयति।

जब क्रिया लकारों में न होकर क्तवतु-प्रत्ययान्त होती है तो वह कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार होती है। कर्ता के पुरुष का प्रभाव ऐसी दशा में क्रिया पर नहीं होता है। जैसे—

सः रामायणं पठितवान्।
सीता रामायणं पठितवती।
अहं रामायणं पठितवान्।
तौ रामायणं पठितवन्तौ।

कर्मवाच्य—कर्मवाच्य का कर्ता तृतीयान्त होता है और वचन तथा पुरुष कर्म के अनुसार होते हैं। कर्म प्रथमा विभक्ति रहता है। जैसे—

रामेण नीयते अश्वः (राम से घोड़ा लिया जाता है)।

बालकाभ्यां पुस्तकं पठयते (दो बालकों से पुस्तक पढ़ी जाती है)।

रमेशेन मोहनः दृश्यते (रमेश से मोहन देखा जाता है)।

कर्मवाच्य क्रियाओं के रूप दिवादिगण की आत्मनेपदी धातुओं की तरह होते हैं। जैसे=पठ्यते, गम्यते, पीयते नीयते आदि।

लङ् लकार के स्थान पर कर्मवाच्य में क्त प्रत्यय का भी प्रयोग किया जाता है। जैसे—

'रमेशेन मोहनः अदृश्यत' के स्थान पर 'रमेशेन मोहनः दृष्टः'।

क्त—प्रत्ययान्त क्रिया का कर्म के पुरुष के अनुसार परिवर्तन नहीं होता, बल्कि लिंग और वचन के अनुसार परिवर्तन होता है। जैसे—

रामेण सीता दृष्टा।

रामेग वानरः दृष्टः।

रामेण त्वं दृष्टः।

कर्मवाच्य में लोट् लकार से स्थान में तव्य और अनीयर् का भी प्रयोग होता है। यहां भी कर्म के अनुसार क्रिया के लिंग और वचन में परिवर्तन होता है। जैसे—

रामेण सीता द्रष्टव्या या दर्शनीया।

रामेण पुस्तकं पठितव्यम् या पठनीयम्।

भाववाच्व—इसमें अकर्मक क्रिया होती है। सभी नियम कर्मवाच्य जैसे होते हैं। यहाँ भी कर्ता तृतीया में होता है क्रिया के रूप कर्मवाच्य की तरह दिवादिगणी आत्मनेपदी धातुओं के रूपों के समान होते हैं। क्रिया सदैव प्रथम पुरुष एकवचन में प्रयुक्त होती है। जैसे—

मया सुप्यते।

युष्माभिः सुप्यते।

मया स्थीयते।

भाववाच्य लङ् लकार के स्थान पर क्त प्रत्यय का भी प्रयोग होता है। जैसे—तेन सुप्तम्, तेन स्थितम्। क्त-प्रत्ययान्त क्रिया सदा एकवचन और नपुंसकलिंग में होती है। कर्ता के पुरुष, लिंग या वचन के अनुसार उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे—

मया सुप्तम्।

सीतया स्थितम्।

त्वया स्थितम्।

वाच्य परिवर्तन

कर्तवाच्य से कर्मवाच्य—कर्ता को, जो प्रथमा विभक्ति में होता है, तृतीया विभक्ति में बदल दिया जाता है। कर्म, जो द्वितिया विभक्ति में होता है, प्रथमा विभक्ति में बदल दिया जाता है क्रिया के रूप कर्म के वचन और पुरुष के अनुसार बनते हैं। लेकिन क्रिया का लकार नहीं बदला जाता। जैसे—

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
रामः ग्रामं रक्षति।	रामेण ग्रामः रक्ष्यते।

कर्तृवाच्य से भाव वाच्य=अकर्मक क्रियाएँ कर्तवाच्य से भाववाच्य में बदली जा सकती हैं। भाववाच्य क्रिया बनाने के नियम कर्मवाच्द के समान हैं। भाववाच्य क्रिया के रूप सदा प्रथम पुरुष और एकवचन में होते हैं। जैसे—

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
अहं तिष्ठामि।	मया स्थीयते।

कर्मवाच्य तथा भाववाच्य से कर्तृवाच्य—कर्ता को, जो तृतीयान्त है, प्रथमा विभक्ति में लाना चाहिए। कर्ता के पुरुष और वचन के अनुसार कर्तृ-वाच्य क्रिया बनानी चाहिए। कर्मवाच्य के कर्म को द्वितीया विभक्ति में बदलना चाहिए। जैसे—

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
मया अश्वः नीयते।	अहं अश्वं नयामि।
तेन गम्यते।	स गच्छति।

कुछ धातुओं के कर्मवाच्य रूप

धातु	लट्	लृट्	लोट्	लङ्	विधिलिङ्
भू	भूयते	भविष्यते	भूयताम्	अभूयत	भूयेत
हस्	हस्यते	हसिष्यते	हस्यताम्	अहस्यत	हस्येत
पठ्	पठ्यते	पठिष्यते	पठ्यताम्	अपठ्यत	पठ्येत
रक्ष्	रक्ष्यते	रक्षिष्यते	रक्ष्यताम्	अरक्ष्यत्	रक्ष्येत
वद्	उद्यते	वदिष्यते	उद्यताम्	औद्यत	उद्येत
पच्	पच्यते	पक्ष्यते	पच्यताम्	अपच्यत	पच्येत
नम्	नम्यते	नंस्यते	नम्यताम्	अनम्यत	नम्येत
गम्	गम्यते	गंस्यते	गम्यताम्	अगम्यत	गम्येत
दृश्	दृश्यते	द्रक्ष्यते	दृश्यताम्	अदृश्यत	दृश्येत
सद्	सद्यते	सत्स्यते	सद्यताम्	असद्यत	सद्येत
स्था	स्थीयते	स्थास्यते	स्थीयताम्	अस्थीयत	स्थीयेत
स्मृ	स्मर्यते	स्मरिष्यते	स्मर्यताम्	अस्मर्यत	स्मर्येत
पा	पीयते	पास्यते	पीयताम्	अपीयत	पीयेत
जि	जीयते	जेष्यते	जीयताम्	अजीयत	जीयेत
सेव्	सेव्यते	सेविष्यते	सेव्यताम्	असेव्यत	सेव्येत
लभ्	लभ्यते	लप्स्यते	लभ्यताम्	अलभ्यत	लभ्येत
वृत्	वृत्यते	वर्तिष्यते	वृत्यताम्	अवृत्यत	वृत्येत
वृध्	वृध्यते	वर्धिष्यते	वृध्यताम्	अवर्ध्यत	वृध्येत
मुद्	मुद्यते	मोदिष्यते	मुद्यताम्	अमुद्यत	मुद्येत
सह्	सह्यते	सहिष्यते	सह्यताम्	असह्यत	सह्येत
ईक्ष्	ईक्ष्यते	ईक्षिष्यते	ईक्ष्यताम्	ऐक्ष्यत	ईक्ष्येत
याच्	याच्यते	याचिष्यते	याच्यताम्	अयाच्यत	याच्येत
नी	नीयते	नेष्यते	नीयताम्	अनीयत	नीयेत
हृ	ह्रियते	हरिष्यते	ह्रियताम्	अह्रियत	ह्रियेत
अद्	अद्यते	अत्स्यते	आद्यताम्	आद्यत	अद्येत

अस्	भूयते	भविष्यते	भूयताम्	अभूयत	भूयेत
स्तु	स्तूयते	स्तोष्यते	स्तूयताम्	अस्तूयत	स्तूयेत
ब्रू	उच्यते	वक्ष्यते	उच्यताम्	औच्यत	उच्येत
रुद्	रुद्यते	रोदिष्यते	रुद्यताम्	अरुद्यत	रुद्येत
दुह्	दुह्यते	धोक्ष्यते	दुह्यताम्	अदुह्यत	दुह्येत
जागृ	जागर्यते	जागरिष्यते	जागर्यताम्	अजागर्यत	जागर्येत
स्वप्	सुप्यते	स्वप्स्यते	सुप्यताम्	असुप्यत	सुप्येत
हन्	हन्यते	हनिष्यते	हन्यताम्	अहन्यत	हन्येत
विद्	विद्यते	वेदिष्यते	विद्यताम्	अविद्यत	विद्येत
शास्	शास्यते	शासिष्यते	शास्यताम्	अशास्यत	शास्येत
इ	ईयते	एष्यते	ईयताम्	ऐयत	ईयेत
आस्	आस्यते	आसिष्यते	आस्यताम्	आस्यत	आस्येत
शी	शय्यते	शयिष्यते	शय्यताम्	अशय्यत	शय्येत
अधि+इ	अधीयते	अध्येष्यते	अधीयताम्	अध्यैयत	अधीयेत
हु	हूयते	होष्यते	हूयताम्	अहूयत	हूयेत
भी	भीयते	भेष्यते	भीयताम्	अभीय	भीयेत
दा	दीयते	दास्यते	दीयताम्	अदीयत	दीयेत
भृ	भ्रियते	भरिष्यते	भ्रियताम्	अभ्रियत	भ्रियेत
दिव्	दीव्यते	देविष्यते	दीव्यताम्	अदीव्यत	दीव्येत
नृत्	नृत्यते	नर्तिष्यते	नृत्यताम्	अनृत्यत	नृत्येत
व्यध	विध्यते	व्यत्स्यते	विध्यताम्	अविध्यत	विध्येत
नश्	नश्यते	नक्ष्यते	नश्यताम्	अनश्यत	नश्येत
शम्	शाम्यते	शमिष्यते	शाम्यताम्	अशाम्यत	शाम्येत
भ्रम्	भ्राम्यते	भ्रमिष्यते	भ्राम्यताम्	अभ्राम्यत	भ्राम्येत
विद्	विद्यते	वेत्स्यते	विद्यताम्	अविद्यत	विद्येत
युध्	युध्यते	योत्स्यते	युध्यताम्	अयुध्यत	युध्येत
जन्	जन्यते	जनिष्यते	जायताम्	अजायत	जायेत

सु	सूयते	सोष्यते	सूयताम्	असूयत	सूयेत
आप्	आप्यते	आप्स्यते	आप्यताम्	आप्यत	आप्येत
शक्	शक्यते	शक्ष्यते	शक्यताम्	अशक्यत	शक्येत
तुद्	तुद्यते	तोत्स्यते	तुद्यताम्	अतुद्यत	तुद्येत
ईष्	इष्यते	ऐषिष्यते	इष्यताम्	ऐष्यत	इष्येत
स्पृश्	स्पृश्यते	स्पर्क्ष्यते	स्पृश्यताम्	अस्पृश्यत	स्पृश्यत
पृच्छ्	पृच्छयते	प्रक्ष्यते	पृच्छयताम्	अपृच्छयत	पृच्छ्येत
मृ	म्रियते	मरिष्यते	म्रियताम्	अम्रियत	म्रियेत
विद् (विन्द्)	विद्यते	वेदिष्यते,वेत्स्यते	विद्यताम्	अविद्यत	विद्येत
मुच् (मुञ्च्)	मुच्यते	मोक्ष्यते	मुच्यताम्	अमुच्यत	मुच्येत
रुध्	रुध्यते	रोत्स्यते	रुध्यताम्	अरुध्यत	रुध्येत
भुज्	भुज्यते	भोक्ष्यते	भुज्यताम्	अभुज्यत	भुज्येत
युज्	युज्यते	योक्ष्यते	युज्यताम्	अयुज्यत	युज्येत
तन्	तन्यते(तायते)	तनिष्यते	तन्यताम्	अतन्यत	तन्येत
कृ	क्रियते	करिष्यते	क्रियताम्	अक्रियत	क्रियेत
क्री	क्रीयते	क्रेष्यते	क्रीयताम्	अक्रीयत	क्रीयेत
ग्रह्	गृह्यते	ग्रहीष्यते	गृह्यताम्	अगृह्यत	गृह्येत
ज्ञा	ज्ञायते	ज्ञास्यते	ज्ञायताम्	अज्ञायत	ज्ञायेत
मुष्	मुष्यते	मोषिष्यते	मुष्यताम्	अमुष्यत	मुष्येत
चुर्	चोर्यते	चोरयिष्यते	चोर्यताम्	अचोर्यत	चोर्येत
चिन्त्	चिन्त्यते	चिन्तयिष्यते	चिन्त्यताम्	अचिन्त्यत	चिन्त्येत
तड्	ताड्यते	ताडयिष्यते	ताड्यताम्	अताड्यत	ताड्येत
कथ्	कथ्यते	कथयिष्यते	कथ्यताम्	अकथ्यत	कथ्येत
भक्ष्	भक्ष्यते	भक्षयिष्यते	भक्ष्यताम्	अभक्ष्यत	भक्ष्येत

अभ्यास

१. नीचे लिखे कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में परिवर्तित करो :

अहं शीतलं जलं पिबामि । चौरः धनम् अचोरयत् । वानरः फलानि

भष्यति । सा स्वप्रियम् अस्मरत् । रामः राक्षसम् पहन् । तौ पुस्तकं पठताम् । भूपतिः स्वराज्यं ददाति । त्वं पाठं स्मरसि । तौ मधुवनम् अपश्यताम् ।

२. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो :

राम गाड़ी से गांव जाता है । दो बैल वन में भाग गये । पक्षी आकाश में उड़ रहे हैं । विद्यार्थियों ने अपना पाठ याद कर लिया । तुमने अपना घर ढूंढ़ लिया होगा । मैंने एक सुन्दर हरिण देखा । महात्मा गांधी ने संसार में यश प्राप्त किया । तुम्हें सदैव सत्य बोलना चाहिए । किसी जीव को दुखाओ मत । राम ने तीर से रावण को मार डाला । मैं प्रातः काल नित्य स्नान करता हूं, फिर उपवन में घूमता हूँ, फूलों का चयन करता हूँ, तब ईश्वर की पूजा करता हूँ ।

षोडश अध्याय

अनुवाद-पद्धति-प्रकरण

संस्कृत-अनुवाद

हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने के लिए तीन बातों का ध्यान रखना चाहिए : प्रथम शब्द-रूप, द्वितीय धातु-रूप और तृतीय कुछ शब्द और धातुएँ जिनके लिए विशेष विभक्तियों का प्रयोग होता है। सम्पूर्ण शब्द तीन कोटियों में विभक्त किये जा सकते हैं : उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा प्रथम पुरुष। उत्तम पुरुष में अस्मद् शब्द की सभी विभक्तियों के रूप भी मध्यम पुरुष में युष्मद् शब्द की सभी विभक्तियों के रूप तथा प्रथम पुरुष में अस्मद् और युष्मद् शब्दों को छोड़ शेष सभी शब्द आते हैं। प्रत्येक शब्द के आठ विभक्तियों में एक वचन, द्विवचन और बहुवचन में कुल २४ रूप होते हैं। सर्वनाम शब्दों में २१ रूप ही होते हैं क्योंकि उसमें सम्बोधन विभक्ति नहीं होती है। प्रत्येक विभक्ति के लिए हिन्दी शब्दों के कारक-चिह्नों का ज्ञान होना चाहिए।

प्रथमा विभक्ति का चिन्ह		ने
द्वितिया	"	को
तृतीया	"	से, के द्वारा
चतुर्थी	"	के लिए
पंचमी	"	से (पृथक्ता के अर्थ में)
षष्टी	"	का, की, के, रा, री, रे
सप्तमी	"	में, पे, पर
सम्बोधन	"	हे, हो, रे, अरे

'राम ने रामायण को पढ़ा' इस वाक्य का संस्कृत में अनुवाद करने के लिए विभक्ति-चिन्हों को ध्यान में रखना होगा। 'राम' के आगे 'ने' चिन्ह आने

से उस शब्द का प्रथमा विभक्ति के एकवचन का रूप बनाना होगा 'रामः'। फिर 'रामायण' शब्द के आगे 'को' द्वितीया विभक्ति का चिन्ह होने से रामायण शब्द का द्वितीया विभक्ति का एकवचन का रूप 'रामायण्' बना। 'पढ़ा' क्रिया का भूतकाल का रूप है, अतः पठ् धातु का रूप कर्ता के अनुसार बनाना पड़ेगा। कर्ता एकवचन, प्रथम पुरुष का शब्द है। अतः पठ् धातु का प्रथम पुरुष एकवचन का रूप भूतकाल (लङ्) में बनाना होगा। लङ् लकार में यह रूप 'अपठत्' बनता है। इस प्रकार पूरा वाक्य रामः रामायणम् अपठत्' बना। इस प्रकार (२) कृष्ण चक्र से शिशुपाल को मारते हैं।

कृष्ण—कर्ता एकवचन होने से प्रथमा विभक्ति एकवचन में आयेगा—कृष्णः।

शिशुपाल—इस शब्द के आगे 'को' द्वितीया विभक्ति एकवचन का चिन्ह आने से शिशुपाल शब्द की द्वितीया विभक्ति का एकवचन का रूप होगा—शिशुपालम्।

चक्र—इस शब्द के आगे 'से' चिन्ह तृतीया विभक्ति का है। अतः चक्र शब्द का तृतीया विभक्ति का एकवचन का रूप बनेगा—चक्रेण।

मारते हैं—यह वर्तमान काल का रूप है। अतः कर्ता के अनुसार प्रथमः पुरुष वर्तमान काल का एकवचन का रूप हन् धातु से 'हन्ति' बना।

इस प्रकार पूर्ण वाक्य बना—कृष्णः शिशुपाल चक्रेण हन्ति।

3. राम कल्याण के लिये प्रयत्न करता है।

राम—कर्ता है प्रथम पुरुष एकवचन का अतः रुप बना'रामः'।

कल्याण के लिये—कल्याण शब्द के आगे 'के लिये' चिन्ह चतुर्थी विभक्ति का है। अतः कल्याण शब्द के एकवचन का रुप चतुर्थी विभक्ति में हुआ—कल्याणाय।

प्रयत्न—उस शब्द की विभक्ति द्वितीया है, अतः रुप हुआ—प्रयत्नम्।

करता है—वर्तमान काल का रूप है। कर्ता के अनुसार प्रथम पुरुष एक वचन है। अतः करोति' रूप बना।

अतः सम्पूर्ण वाक्य बना —रामः कल्याणाय प्रयत्नं करोति।

(४) देव स्वर्ग से फूल बरसा रहे हैं।

देव—शब्द बहुवचन और प्रथमा विभक्ति में है, अतः 'देवाः' रूप बना।

स्वर्ग से—यहाँ स्वर्ग शब्द के बाद 'से' पंचमी विभक्ति का चिन्ह पृथकता के अर्थ में आया है, अतः स्वर्ग शब्द के एकवचन का पंचमी विभक्ति में रूप होगा—स्वार्गात्।

फूल—द्वितीया विभक्ति के बहुवचन में है अतः 'पुष्पाणी' रूप बना।

बरसा रहे हैं—कर्ता के अनुसार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप है। यहां णिजन्त रूप होगा—वर्षयन्ति।

अतः पूरा वाक्य बना—देवाः स्वर्गात् पुष्पाणि वर्षयन्ति।

(५) इस नगर में मोहन का घर है।

मोहन का घर—मोहन के बाद 'का' चिन्ह षष्ठी विभक्ति का है, अतः रूप बना—मोहनस्य।।

इस नगर में—यहाँ इस नगर के बाद 'में' चिन्ह सप्तमी का है, अतः रूप बना—अस्मिन् नगरे।

है—अस्ति (वर्तमान काल)।

अतः पूरा वाक्य बना—मोहनस्य गृहं अस्मिन् नगरे अस्ति।

अभ्यास १

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिये :

भक्त ईश्वर की पूजा करता है। ईश्वर ने संसार बनाया है। बालक उपवन में खेलते हैं। वृक्ष से फूल गिरते हैं। बन्दरों ने वृक्षों से फल गिराये और खाये। महेश के पिता का नाम दिनेश है। माता पुत्र का चिन्तन करती है। राजेन्द्र ने डण्डे से सेवक को मारा। मेरे लिए सुन्दर चित्र लाओ। वह स्वभाव से विनम्र है। मैं परिश्रम से धन कमाता हूं। हरि बालक के लिए फल लाता है। गंगा हिमालय पर्वत से निकलती है। राम का विद्यालय नगर से बाहर है। वह गांव से शहर को आया। सीता उपवन से आती है। मेघों से पानी गिरता है। गुरुजी ने खिड़की से बाहर देखा। परिश्रम का फल मीठा

होता है। पाप का फल देखो। वन में शेर रहते हैं। तालाब में मछलियाँ खेलती हैं और कमल खिलते हैं। भारत में सुखी कृषक रहते हैं।

२. नीचे लिखे वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो:

घटे शीतलं जलं अस्ति। विद्यालये उत्सवः भवति। गंगायाः जलम् अति पवित्रम् अस्ति। वृक्षाणां फलानि पतन्ति। वायुः मलयपर्वतात् वहति। सीता पत्ये दुखं सहति। सः रामाय फलं दास्यति। सः नाम्ना रावणः। बालकाः हर्षेण गृहं गमिष्यन्ति। सः मत्या न चिन्तयति। सीता मनसा स्मरति। चौरः धनं चोरयति। केशवः शकटेन ग्रामं गच्छति। अहं इदानीं गृहात् मन्दिरं गच्छामि।

जिन शब्दों और धातुओं के लिए विशेष कारकों का प्रयोग होता है वे ये हैं—

१. बिना शब्द के साथ द्वितीया, तृतीया और पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे—

(क) रामं विना कोऽपि न रावणं हन्तुं समर्थः।
(ख) रामात् विना न दशरथस्य जीवनम्।
(ग) धनेन विना कार्यं न सिध्यति।

२. सह शब्द के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे—

(क) रामेण सह लक्ष्मणः गमिष्यति।
(ख) किं त्वं मया साकं नगरं न गमिष्यसि ?
(ग) युष्माभिः सार्धं कः विद्यालयम् अगच्छत् ?
(घ) रामेण समं सीता वनम् अगच्छत्।

३. भय, घृणा, प्रमाद के अर्थ वाले शब्दों के साथ पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है जैसे—

(क) बालकः सिंहात् न बिभेति।
(ख) सा श्वशुरात् लज्जते।
(ग) हरिः पापात् जुगुप्सते।

४. नमः, स्वस्ति, स्वाहा, अलम् शब्दों के साथ चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है जैसे—

(क) नमो ब्राह्मणाय ।

(ख) भूतेभ्यः स्वस्ति अस्तु ।

(ग) अर्जुनः जयद्रथाय अलम् ।

(घ) अग्नये स्वाहा ।

५. दुह, याच्, पच् प्रच्छ, दण्ड आदि के साथ दो कर्म कारक आते हैं। जैसे—

(क) स: गां पय: दोग्धि (वह गाय से दूध दुहता है) ।

(ख) स: रामं धनं याचते (वह राम से धन माँगता है) ।

(ग) स: दाण्डुलान् ओदनं पचति (वह चावलों से भात पकाता है) ।

(घ) स: बालं पन्थानं पृच्छति (वह बालक से मार्ग पूछता है) ।

(ङ) राजा चोरं शतं दण्डयति (राजा चोर को सौ रुपये का दण्ड देता है) ।

६. देने का अर्थ देने वाली तथा रुच् (आत्मनेपदी) धातुओं के योग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। जिसको दी जाती है वह चतुर्थी में और जो चीज दी जाती है वह द्वितीया विभक्ति में आती है। जैसे—

स: रामाय धेनुं ददाति (वह राम को गाय देता है) । यहाँ राम को गाय दी जाती है, अत: 'राम' शब्द चतुर्थी में और गाय दी जाती है अतः 'गाय' शब्द द्वितीया विभक्ति मे प्रयुक्त हुआ है।

७. जिस विकृत अंग से देह का विकार लक्षित होता है, उन शब्दों के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है जैसे—

(क) अयं भिक्षुक: पृष्ठेन कुब्ज: ।

(ख) बालक: अक्ष्णा काण: ।

(ग) राम: पादेन खञ्ज: ।

८. प्रभृति, आरम्य, बहि:, अनन्तरम्, ऊर्ध्वम्, पृथक्, विना, ऋते के योग में पंचमी का प्रयोग होता है। जैसे—

(क) जन्मन: प्रभृति (आरम्य) मया सत्यम् उक्तम्।

(ख) नगरात् बहि: सैनिका: तिष्ठन्ति।

(ग) अध्ययनादनन्तरं स: ग्रामं गमिष्यति।

(घ) ज्ञानात् विना (ऋते) न मुक्ति:।

(ङ) गृहात् पृथक् मे अश्वशाला वर्तते।

९. चुनाव के अर्थ में सप्तमी या षष्ठी का प्रयोग होता है। स्निह, अनुरञ्ज् और रम् धातुओं के साथ सप्तमी विभक्ति का ही प्रयोग होता है। जैसे—

(क) नृणां (नृषु) ब्राह्मण: श्रेष्ठ: (मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है)।

(ख) गवां (गोषु) कृष्णा चंचला (गायों मे काली गाय चंचल है)।

(ग) विद्यालयेऽस्मिन् स्निह्यति अध्यापकस्य मन: (अध्यापक का मन इस विद्यालय से प्रेम करता है)।

(घ) राजनि प्रजा अनुरज्यति (राजा से प्रजा प्रेम करती है)।

(ङ) ब्रह्माणि रमते मन: (ब्राह्मण मन में रमण करता है)।

१०. प्रकृति, स्वभाव आदि के योग में तृतीया आती है। जैसे—
राम: प्रकृत्या चारु: (राम प्रकृति से सुन्दर हैं)।

अभ्यास २

१. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिये :

देवदत्त ! रमया सह आवां गच्छाव:। वयम् गोपालादिभि: सह तडागे न गच्छाम:। जन्मत: प्रभृति मया असत्यं न कथितम्। सीता रामात् विना अयोध्यायां न अवसत्। कृष्ण: राक्षसाय अलम्। मह्य ओदनं रोचते। दुहिता गां पय: दोग्धि। भिक्षुक: गृहस्थं भोजनं याचते। राम: देवं स्वर्गस्य पन्थानं पृच्छति। पुत्रेण सह पिता गमिष्यति। नदी स्वभावेन चंचला। स जटाभि: तापस: प्रतीयते। गणेशाय नम:। दुर्जन: धर्मात् प्रमाद्यति। देवदत्त: चोराद् बिभेति। कृष्णात् विना क: धर्मं रक्षति। हरि पादेन पंगु:। विष्णवे स्वाहा।

२. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो :

पिता की आज्ञा के बिना मैं शहर को नहीं जाऊँगा। परिश्रम के बिना तुम उन्नति नहीं कर सकते। क्या तुम मेरे साथ विद्यालय चलोगे ? सीता राम के साथ वन को गई। राम रावण के लिए पर्याप्त है। वह तुमसे द्रोह करता है। बिना भक्ति के जीव की मुक्ति नहीं। उसने बचपन से लेकर मेरा आदर किया है। पिता राम से स्नेह करते हैं। तुम सबमें हरि छोटा है। दशरथ के पुत्रों में राम सबसे बड़े थे। मातृभूमि को नमस्कार। विद्यार्थियों में राजीव प्रवीण है। अध्यापक छात्र पर कुपित होता है। वह प्रकृति से ही कायर है। राम स्वभाव से ही विनम्र है। सीता पढ़ने के बाद खेलती है।

प्रत्ययों का प्रयोग

१. पूर्वकालिक क्रिया जैसे खाकर, पीकर लेकर, देकर आदि का रूप बनाने के लिए मूल धातु में त्वा प्रत्यय जोड़ दिया जाता है जैसे—

(क) सः विद्यालयं गत्वा पठिष्यति (वह विद्यालय जाकर पढ़ेगा)।

(ख) मयूरः मेघं दृष्ट्वा नृत्यति (मोर बादल को देखकर नाचता है)।

(ग) पथिकः शीतलं जलं पीत्वा विरमति (पथिक शीतल जल पीकर विश्राम करता है)।

२. Infinitive जैसे लाने के लिए जाने के लिए, पीने के लिए के रूप बनाने के लिए तुम् प्रत्यय मूल धातु में लगा दिया जाता है। जैसे—

(क) मोहनः अश्वं नेतुम् आगच्छति। (मोहन घोड़ा ले जाने के लिये आता है)।

(ख) रामः जलं पातुम् अगच्छत् (राम पानी पीने के लिये गया)।

(ग) हरिः ग्रामं गन्तुं यत्नं करोति (हरि गाँव जाने के लिए यत्न करता है)।

३. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िये :—

(१) रामः शत्रून् स्वर्गम् अगमयत्।

राम ने शत्रुओं को स्वर्ग में पहुँचा दिया।

(२) गुरः छात्रान् वेदार्थं वेदयति ।
गुरु जी छात्रों को वेद का अर्थ समझाते हैं ।

(३) कृष्णः त्रीन् कोशान् धावति ।
कृष्णः तीन कोस तक दौड़ते हैं ।

(४) इन्द्रः स्वर्गम् अधितिष्ठति ।
इन्द्र स्वर्ग में रहते हैं ।

(५) स वृक्षं फलानि अवचिनोति ।
वह वृक्ष से फलों को चुनता है ।

(६) कृष्णः अर्जुनं धर्मं शास्ति ।
कृष्ण अर्जुन को धर्म का उपदेश देते हैं ।

(७) स अजां ग्रामम् नयति ।
वह बकरी को गांव को ले जाता है ।

(८) उभयतः नदी वृक्षाः वर्तन्ते ।
नदी के दोनों ओर वृक्ष हैं ।

(९) सर्वतः मन्दिरं भिक्षुकाः तिष्ठन्ति ।
मन्दिर के चारों ओर भिक्षुक खड़े है ।

(१०) धिक्तान पुरुषान् ये ईश्वरं निन्दन्ति ।
उन पुरुषों को धिक्कार है जो ईश्वर की निन्दा करते हैं ।

(११) स पाठशालां प्रति गतः ।
वह पाठशाला के लिए गया ।

(१२) क्रोशं गिरिः वर्तते ।
कोस तक पहाड़ है ।

(१३) देवदत्तः दण्डेन कुक्कुरं ताडयति ।
देवदत्त डंडे से कुत्ते को मारता है ।

(१४) पुत्रेण सह पिता आगतः ।
पुत्र के साथ पिता आ गये ।

(१५) रामः प्रकृत्या चारुः अस्ति ।
राम प्रकृति से सुन्दर है ।

(१६) विप्राः प्रायेण सहृदयाः सन्ति ।
ब्राह्मण प्रायः सहृदय होते हैं ।

(१७) मोहनः अक्ष्णा काणः पादेन च खञ्जः अस्ति ।
मोहन आँख से काना और पैर से लंगड़ा है ।

(१८) स वर्षेण व्याकरणं पठितवान् ।
वह साल से व्याकरण पढ़ रहा है ।

(१९) मोहनः विप्राय धनं यच्छति ।
मोहन विप्र को धन देता है ।

(२०) भृत्यः स्वामिने दुष्करं कार्यं करोति ।
सेवक स्वामी के लिए दुष्कर कार्य करता है ।

(२१) माता बालकाय मोदक खादयति ।
माता बालक को लड्डू खिलाती है ।

(२२) बालकाय मोदकं रोचते ।
बालकों को लड्डू अच्छे लगते हैं ।

(२३) रावणः रामाय सदा क्रुध्यतिस्म ईर्ष्यति च ।
रावण राम पर सदा क्रोध करता था तथा ईर्ष्या करता था ।

(२४) गणेशाय नमः ।
गणेश को नमस्कार है ।

(२५) प्रजाभ्यः स्वस्ति ।
प्रजा के लिए कल्याण हो, या प्रजा का कल्याण हो ।

(२६) मोहनः धावतः अश्वात् पतति ।
मोहन दौड़ते हुए घोड़ते हुए अश्व से गिरता है ।

(२७) सज्जनः पापाद् जुगुप्सते ।
सज्जन पाप से घृणा करता है ।

(२८) दुर्जनः धर्मात् प्रमाद्यति ।
दुर्जन धर्म से प्रमाद करता है ।

(२९) रमेशः चोराद् बिभेति ।
रमेश चोर से डरता है ।

(३०) देवः पुरुषं दुःखात् त्रायते ।
देव पुरुष को दुःख से बचाता है ।

(३१) छात्रः अध्यापकात् निलीयते ।
छात्र अध्यापक से छिपता है ।

(३२) छात्रः आचार्यद् अधीते ।
छात्र आचार्य से पढ़ते हैं ।

(३३) हिमवतः गंगा प्रभवति ।
हिमालय से गंगा निकलती है ।

(३४) कृष्णाद् अन्यः कः धर्म रक्षति ?
कृष्ण के अतिरिक्त कौन धर्म की रक्षा करता है ?

(३५) परिश्रमाद् विना कार्यं न सिध्यति ।
परिश्रम के बिना कार्य सिद्ध नहीं होता है ।

(३६) जगतः कर्ता कृष्णः ।
जगत् का कर्ता कृष्ण है ।

(३७) निकटं ग्रामस्य तडागम् अस्ति ।
गाँव के निकट तालाब है ।

(३८) दूरं नगरस्य वनम् अस्ति ।
नगर से दूर वन है ।

(३९) नृणां ब्राह्मणः श्रेष्ठः ।
मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं ।

(४०) गवां कृष्ण गौः बहुक्षीरा ।
गायों में काली गाय बहुत दूध देती है ।

(४१) तिलेषु तैलं विद्यते ।
तिलों में तेल होता है ।

(४२) वनस्य दूरे कः तिष्ठति ।
वन में दूर कौन खड़ा है ।

अभ्यास ४

निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो :

तूष्णीं भूत्वा सर्वे प्राविशन् । आवां सभायां जवाहरलालं द्रष्टुम् अगच्छाव । सा कथां श्रुत्वा अभुनक् । सः स्वशत्रून् नाशयित्वा हर्षेण शासनं अकरोत् । पापं नाशयितुं सः तीर्थयात्राम् अकरोत् । छात्राः अध्येतुं विद्यालयम् आगच्छन्ति । सः दण्डेन ताडियतुम अधावत् । सा रुदित्वा स्वपतिम् अचिन्यत् ! रामः राक्षसं हन्तुम् अगच्छत् ।

२. निम्नलिखित हिन्दी के वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो :

शेर ने मृग को मारकर भोजन किया । बन्दर फलों को खाने के लिए वन में घुस गया । लड़की ने सोने के लिए कमरे में प्रवेश किया । वह पढ़ने के लिए विश्वविद्यालय जा रहा है । भिक्षुक चावल माँगने के लिए हाथ फैला रहा है । हम दुःख सहने के लिए तैयार हैं । कथा सुनकर सभी अपने-अपने घर गये । वह कहानी सुनने के लिए उत्सुक था । भारत शत्रुओं को हराकर ही विश्राम लेगा । राजा ने बैठकर आदेश दिया ।

अभ्यास ५

४. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(१) बालकाः कमलपुष्पाणि गृहीत्वा गच्छन्ति ।
(२) भारतस्य प्रायः सर्वेषु नगरेषु रामलीलायाः अभिनयः भवति ।
(३) वृक्षात् पत्राणि पतन्ति ।
(४) यथा स परिश्रमेण विद्यामपठत् तथा सफलमापि अलभत् ।
(५) भक्तः मनसा हरिं स्मरेत् ।
(६) यत्नेनः मनुष्यः सिकताभ्योऽपि तैलं लभेत् ।
(७) वयं स्नानाय गंगानदीं गच्छाम ।
(८) नरा रथेन श्रीनगरं गच्छन्तु ।
(९) पाचकाः स्वामिने तण्डुलान् पचन्तु ।

(१०) यूयं स्वरेण मन्त्रान् पठत ।

(११) यत्र बालकाः सन्ति तत्र कलरवः भविष्यति ।

(१२) ईश्वर ! अहं तत्र गच्छेयम यत्र भगवतश्चरणयोः सेवां लभेय ।

(१३) मोहनः श्वः रामायणं न पठिष्यति ।

(१४) यदा रामो वनम् अगच्छत् तदा भरतोऽपि अयोध्याया निरगच्छत् ।

(१५) रामोऽवदत् यत पिता हसति ।

(१६) यावदहम् अत्र तिष्ठामि तावद त्वं पठ ।

(१७) पिता पुत्राय पुस्तकम् आनयति ।

(१८) भिक्षुकः गृहस्थं भोजनं याचते ।

(१९) अर्जुनः तण्डुलान् ओदनं पचति ।

(२०) सर्वतः मन्दिरं भिक्षुका तिष्ठान्ति ।

अव्यय या क्रिया-विशेषण बनाने वाले प्रत्यय

१. तसिल् (तः)—यह प्रत्यय पंचमी विभक्ति के अर्थ में प्रयुक्त होता होता है जैसे—

(क) सः कुतः आगच्छति ? (वह कहाँ से आ रहा है ?)

(ख) बालकः ततः आगच्छति । (बालक वहाँ से आ रहा है) ।

(ग) सः नगरतः आगच्छति । (वह नगर से आ रहा है) ।

२. त्रल्—यह प्रत्यय सप्तमी विभक्ति के अर्थ में जोड़ा जाता है । जैसे—अत्र (यहाँ), तत्र (वहाँ), कुत्र (कहाँ) ।

३. वत्—यह प्रत्यय समानता प्रकट करने के अर्थ में जोड़ा जाता है । जैसे—मातृवत्, पितृवत्, भ्रातृवत् ।

४. मतुप् (मत)—यह प्रत्यय 'रखने वाला' अर्थ में जोड़ा जाता है । जैसे—गोमत (गाय रखने वाला) । लेकिन जब शब्द के अन्त में अ, आ, या म् हो तो मत् के स्थान पर वत् हो जाता है । जैसे रूप+अ+मत्=रूपवत्, रस+मत्=आदि । इनके रूप इस प्रकार चलेंगे—

प्रथमा विभक्ति	रूपवान्	रूपवन्तौ	रूपवन्तः
द्वितीया "	रूपवन्तम्	रूपवन्तौ	रूपवतः
तृतीया "	रूपवता	रूपवद्भ्याम्	रूपवद्भि
चतुर्थी "	रूपवते	"	रूपवद्भ्य
पंचमी "	रूपवतः	"	रूपवद्भ्यः
षष्ठी "	रूपवतः	रूपवतोः	रूपताम्
सप्तमी "	रूपवति	"	रूपवत्सु
सम्बोधन "	हे रूपवाम् !	हे रूपवन्तौ !	हे रूपवन्तः !

५. विन्—यह प्रयत्न सकारांत तथा माया, मेधा और स्रज् शब्दों के आगे 'रखने वाले' अर्थ में जोड़ा जाता है। जैसे—मायाविन्, मेधाविन्, स्रग्विन् (माला वाला), यशस्विन् आदि इनके रूप इस तरह बनेंगे :

प्रथमा विभक्ति	मायावी	मायाविनौ	मायाविनः
द्वितीया "	मायाविनम्	"	"
तृतीया "	मायाविना	मायाविभ्याम्	मायाविभिः
चतुर्थी "	मायाविने	"	मायाविभ्यः
पंचमी "	मायाविनः	"	"
षष्ठी "	मायाविनः	मायाविनोः	मायाविनाम्
सप्तमी "	मायाविनि	"	मायाविषु
सम्बोधन "	हे मायाविन !	हे मायाविनौ !	हे मायाविनः !

अभ्यास ६

१. हिन्दी में अनुवाद करो :

राजा दशरथः पुत्रं कुत्र गमयति ? तत्र श्रीकृष्णः स्वविराट्रूपं यशोदाम् अदर्शयत् । सा मातृवत् मां लालयति । अत्र प्रासादे मातरः शिशून् दोलायां स्वापयन्ति । वने मयूरः कुत्र नृत्यति ? कृष्णः अतिरूपवान् बालकः । अत्र हुत्वा अहं रसवन्तं काव्यं पठिष्यामि । रमेशः अद्य मायाविनं पुरुषम् उद्याने अपश्यत् । रामः मेधावी अस्ति । मेधाविनः मित्रं त्वमसि । श्वः अहं नगरतः ग्रामं गमिष्यामि । भक्तवत् भवन्तं नत्वा मम हृदय प्रसीदति ।

२. संस्कृत में अनुवाद करो :

धन पाकर मनुष्य अभिमानी हो जाता है। तुम मित्र से बात करके वहाँ आ जाओ। राम का बड़ा भाई यशस्वी है। जीव शरीर के बन्धन से मुक्त होकर कहाँ जाता है ? यहाँ रावण ने सीता का हरण किया था। रामायण एक रस वाला ग्रन्थ है। कर्मों का भोग करके प्रत्येक मनुष्य विश्व से चला जाता है। सोमरस का पान करके वह मेधावी हो गया। मालावाले पुरुष का वैभव देखो।

१. भाववाचक संज्ञा बनाने वाले प्रत्यय

तल् (ता)—यह प्रत्यय भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञा बनाने के लिए जोड़ा जाता है। जैसे—लघु+तल्=लघुता; सुन्दर+तल्=सुन्दरता।

१. **त्व**—यह भाववाचक नपुंसकलिंग संज्ञा बनाने के लिये जोड़ा जाता है। जैसे—मनुष्य+त्व=मनुष्यत्वम्, बन्धुत्वम्।

२. **मात्रच्** (**मात्र**)—यह प्रत्यय नाप बताने के लिए जोड़ा जाता है। जसे—जानुमात्रं जलम्=घुटनों तक पानी।

३. **मयट्** (**मय**)—विकार अर्थ में यह प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे—काष्ठमयः, घृतमयः।

२. विशेषण बनाने वाले कृत्-प्रत्यय

कृत्-प्रत्यय, धातुओं में कर्मवाच्य या भाववाच्य अर्थ प्रकट करने के लिए जोड़े जाते हैं। इनके योग में तृतीया विभक्ति या षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे—तत् मया कर्त्तव्यम् अथवा तत् मम कर्तव्यम् (अर्थात् वह मेरे द्वारा किया जाना चाहिए और वह मेरा कर्त्तव्य है)

१. तव्यत् (तव्य)—दातव्यम् (देने योग्य), गन्तव्यम् (जाने योग्य), बोधितव्यम् (जानने योग्य) आदि।

२. अनीयर (अनीय)—दानीयम्, बोधनीयम्, करणीयम्।

३. यत् (य)—यह प्रत्यय लगाते समय आकारान्त धातुओं का 'आ' 'ए' में बदल जाता है। जैसे—दा+य=देयम्; गै+य=गेयम्; नी+य =नेयम्।

३. वर्तमान कृदन्त

शतृ—इसके रूप गच्छत् की तरह चलते हैं। ये विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं। जैसे—रामः उपवनं पश्यन् गृहं गच्छति।

शतृ और शानच के विविध प्रयोग

मुख्य क्रिया के पीछे जहाँ गौण क्रिया का प्रयोग होता है वहाँ भी गौण क्रिया वाचक धातु से शतृ, शानच (अत, मान) प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं लेकिन ये भविष्य दर्शक कहलाते हैं और इनके पूर्व 'स्य' लगाया जाता है। जैसे—

१. यास्यन् रामो वस्त्राणि सज्जीकरोति।
जाता हुआ राम वस्त्रों को सजाता है।

२. वनं गमिष्यतं रामं दशरथः करुणाभावेत ददर्श।
वन जाते हुए राम को दशरथ ने करुणाभाव से देखा।

३. सेविष्यमानः सेवकः वेतनं प्राप्स्यति।
सेवा करता हुआ सेवक वेतन प्राप्त करेगा।

अभ्यास १

हिन्दी में अनुवाद करो :	संस्कृत में अनुवाद करो :
सः पुस्तकम् पठति।	वे दोनों पुस्तक पढ़ते हैं।
सा वृक्षात् पतति।	हम पशु को देखते हैं।
आवाम् पश्यावः।	वह लड़का घर को आता है।
ते रामाय नमन्ति।	तुम विष्णु को नमस्ते करते हो।
सीता जलं पिबति।	तुम सब जल पीते हो।
अश्वः वने धावति।	सिंह दण्डकारण्य में दौड़ता है।
रामः ग्रामं गच्छति।	राम गांव को जाता है।
श्यामः लेखिन्या लिखति।	तुम हाथ से खाते हो।
उद्याने पिकः कूजति।	प्रभात में पक्षी चहचहाते है।
वानरः वृक्षे क्रीडति।	बालक बाग में खेल रहे हैं।
गंगा नदी शीघ्रं वहति।	शीतल वायु बह रही है।
कथावाचकः मधुरं पठति।	सीता एकाग्र होकर सुनती है।

अभ्यास २

हिन्दी में अनुवाद करो :

अद्य मेघः वर्षिष्यति ।

वृक्षात् फलानि पतिष्यन्ति ।

तौ राजमार्गे धाविष्यति ।

आवां रामायणं पठिष्यावः ।

अहं गृहात् गमिष्यामि ।

वानरः वृक्षे फलानि खादिष्यन्ति ।

सैनिकाः भारतं रक्षिष्यन्ति ।

पथिकः ओदनं पक्ष्यति ।

स भिक्षुकाय दानं दास्यति ।

प्रभातकाले मीरा जागरिष्यति ।

रामः रावणं हनिष्यति ।

अहं भारतवर्षे शासिष्यामि ।

संस्कृत में अनुवाद करो :

स्वर्ग में अमृत बरसेगा ।

बालक घोड़े से गिर जायेगा ।

वन में मृग दौड़ेंगे ।

तुम धर्म ग्रंथों को पढ़ोगे ।

वह विद्यालय से आयेगा ।

राम भोजन करेगा ।

हमारे युवक राष्ट्र की रक्षा करेंगे ।

तुम भोजन पकाओगे ।

राजा विद्वान् को धन देगा ।

अब भारतवासी जाग जायेंगे ।

देवदत्त कथा कहेगा ।

शत्रु हमारे देश पर शासन नहीं करेगा ।

अभ्यास ३

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

विहगाः उद्याने हृष्यन्तु ।

आकाशे सूर्यः उदयतु ।

उद्याने बालकः क्रीडन्तु ।

भक्तः रामयणं पठतु ।

त्वं अधुना जागृहि ।

यूयं पश्यत ।

अन्धकारः नश्यतु ।

यूयं पाठशालां गच्छत ।

देवदत्त ! रमया सह आवां गच्छाव ।

ते जनाः तव गृहात् अद्यैव गच्छन्तु ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

मनुष्य अपने घरों में प्रसन्न हों ।

तुम्हारा भाग्य उदय हो ।

वन में हिरण विचरण करें ।

तुम सभी नाचो ।

वह अब जाग जाएँ ।

वे यह देखें ।

अज्ञान नष्ट हो ।

हे बालको ! तुम घर आओ ।

राम ! हम सीता के साथ वन को चलें ।

मोहन ! त्वं गुरुन् अभिवाद्य परीक्षार्थं गच्छ ।
सीता-रामौ वनं गच्छताम् ।

चलो अपने देश को चलें ।
पिता से आज्ञा लेकर खेलने चलो ।
कैकेयी ने कहा—राम वन को जाये ।

अभ्यास ४

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

ते भ्राता प्रातः पाठशालाम् अगच्छत् ।
युवां किं विद्वत्सभायाम् अगच्छतम् ।
हे बालकः ! यूयं अगच्छत पाठशालाम् ।
श्याम ! त्वं प्रभातकाले कुत्र अगच्छः ?
आवां विश्वविद्यालये प्रदर्शनीं द्रष्टुं आगच्छाव ।
सीता अशोकवाटिकायां रामं प्रति अचिन्तयत् ।
पितरौ मध्याह्ने देवालयम् अगच्छताम् ।
आवां प्रातरेव अगच्छाव ।
अस्माकं विद्यालये सः बालकः अपठत् ।
लक्ष्मणः रामात् विना अयोध्यां न अवसत् ।
मे पिता प्रतिदिनम् ईश्वरम् अस्मरत ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

मेरे पिता वाराणसी गये थे ।
क्या वह कवि-सम्मेलन में आया था ?
हे राम ! तुम वहां क्यों गये थे ?
वसन्त में वृक्षों पर फूल खिले थे ।
तुम दोनों राष्ट्रपिता को देखने गये थे ।
भाई-बहिन प्रांगण में खेल रहे थे ।
तुम रामायण का पाठ करते थे ।
राम १४ वर्ष तक वन में रहे थे ।
अशोक ने सुखपूर्वक राज्य किया ।
राजा दशरथ अयोध्या में राज्य करते थे ।
तुम किसके साथ रहते थे ?
हम धर्मशाला में ठहरे थे ।

अभ्यास ५

हिन्दी में अनुवाद कीजिये :

कृष्णः यदि सत्यमार्गमनुसरेत् तर्हि विद्यां लभेत ।
पुरुषः शत्रून् विजेतुं प्रयतेत ।
वने मयूरः नृत्येत् ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

क्या यदि वह वृक्ष से गिरे तो तुम्हें भी गिरना चाहिए ?
यदि यह नमस्ते करे तो मैं प्रसन्न हो जाऊँ ।

नृपतौ यदि युद्धस्थले गच्छेताम् तर्हि विजयिनौ भवेताम् ।

तौ ग्रामं गच्छेताम् ।

छात्राः गुरोः समीपे गच्छेयुः तर्हि स प्रसन्नो भवेत् ।

यदि त्वं पठे. तर्हि अहं प्रसन्नो भवेयम् ।

सः सत्यं वदेत् ।

यदि यूयं ग्रामं गच्छेत तर्हि वयमपि तत्र गच्छेम ।

भो बालक ! आवां स्मराव ईश्वरम् ।

किं स: शीतलं जलं पिवेत ?

किं ते फलानि खादेयुः ?

यदि वह ईश्वर का स्मरण करे तो सफल हो जाये ।

मैं आशीर्वाद देता हूँ कि तुम पढ़ो ।

बच्चे सुखपूर्वक मैदान में खेलें ।

सभी सुखी हों और कल्याण के मार्ग पर चलें ।

प्रजा के कष्ट दूर हों और सभी प्रसन्न हों ।

मेघ वर्षा करें और अन्न पैदा हो ।

यदि वे सब जायें तो मैं भी जाऊँ ।

उससे कहो कि रामायण पढ़ें ।

हम ईश्वर का स्मरण करें ।

तुमको झूठ नहीं बोलना चाहिए ।

अभ्यास ६

हिन्दी में अनुवाद करो :

रामः बाणेन रावणं हन्ति ।

बालकः हस्तेन मोदकं खादति ।

श्यामः स्वभावेन भीरु पुरुषः अस्ति ।

भक्तः हृदयेन ईश्वरं स्मरति ।

सः नाम्ना अर्जुनः ।

बालकाः हर्षेण विद्यालयं गच्छन्ति ।

रामेण सह अहं गमिष्यामि वने ।

देवदत्तः मनसा भजति ।

राजा पृष्ठेन कुब्जः अस्ति ।

लक्ष्मी प्रकृत्या चंचला अस्ति ।

संस्कृत में अनुवाद करो :

नट सूत्र से पुतली को नचाता है ।

राम मुख से भोजन खाता है ।

यह बालक स्वभाव से नम्र है ।

राजा अपनी प्रजा को हृदय से चाहता है ।

वह कर्म से शूद्र है ।

बालिकायें हर्ष के साथ खेल रही हैं ।

राम के साथ मैं भी पढूंगा ।

विद्वान् बुद्धि से सोचता है ।

उसका पुत्र आँख से काणा है ।

केशवः शकटेन नगरं गच्छति ।	सरस्वती प्रकृति से गम्भीर है ।
अलं विवादेन ।	वह वायुयान से श्रीनगर जायेगा ।
	तर्क से क्या, कार्य करो ।

अभ्यास ७

हिन्दी में अनुवाद करो :	संस्कृत में अनुवाद करो :
गुरवे शिष्यः शीतलं जलम् आनयति ।	वह बालक के लिए दूध लाता है ।
राधा पत्ये सदा दुःखं सहते ।	वे पत्नी के लिये दुःख सहते हैं ।
राजा विदुषे धनं ददाति ।	राजा ब्राह्मण को दान देता है ।
किं त्वं कल्याणाय यत्नं करिष्यसि ?	अपने सुख के लिए यत्न करो ।
नमो ब्राह्मणाय ।	भगवान् विष्णु को नमस्कार है ।
सः भिक्षुकाय धेनुं ददाति ।	वह शांति के लिए लड़ रहा है ।
कृष्णः शिशुपालाय अलम् ।	राम रावण के लिए पर्याप्त हैं ।
मह्यं दुग्धं रोचते ।	तुम्हें फल अच्छे लगते हैं ।
नगरात् बहवः मनुष्याः ग्रामं प्रति गच्छन्ति ।	आकाश से देवता पुष्पवर्षा कर रहे हैं ।
उद्याने वृक्षात् पत्राणि फलानि च पतन्ति ।	विद्यालय की छत से बालक गिर पड़ा ।
बालकाः विद्यालयात् आगच्छन्ति ।	वन में पुरुष सिंह से डर रहा है ।
मृग शावकः सिंहात् बिभेति ।	धन के बिना सुख नहीं ।
धर्मात् विना न मुक्तिः ।	राम श्याम से सुन्दर है ।
रावणात् रामः प्रियतरः ।	

अभ्यास ८

हिन्दी में अनुवाद करो :	संस्कृत में अनुवाद करो :
दशरथस्य पुत्रः वनम् अगच्छत् ।	श्याम का भाई मोहन है ।
अस्मिन् नगरे रमेशस्य गृहम् ।	इस विद्यालय में चार अध्यापक हैं ।

उद्याने वृक्षाणां फलानि पतन्ति ।
अस्मिन् संसारे दीनस्य रक्षकः ईश्वरः ।
नगरे छात्राणां उत्सवः भवति ।
वने व्याघ्राः वसन्ति ।
वाल्मीके: काव्ये रामस्य जीवन-चरित्रम् ।
भारतवर्षे गङ्गायाः जलं शीतलम् पवित्रम् च ।

नदी का जल धीरे-धीरे बहता है ।
इस ग्राम में राजा का रथ आया है ।
पर्वत पर देवदार के वृक्ष हैं ।
गाँव के तालाब मे मछलियाँ रहती हैं ।
उपवन में हरिण विचर रहे हैं ।
वन में पशु रहते हैं ।

अभ्यास ९

नीचे लिखे वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो :

चत्वारि पुस्तकानि कुत्र नयसि ? अहं लघुताम् अनुभवामि । सरिति जानुमात्रं जलम। रामः पठन् गृहं गच्छति। पुरुषः कार्यं कुर्वन् प्रसीदति । मोहनः गृहं गच्छन् अतिष्ठत् । बालकः नृत्यन् हर्षति । नृत्यन् मयूरः मे हृदयं हरति । गच्छन् पुरुषः पतितानि पुष्पाणि आप्नोत् । दुग्धं पिबन् बालको बलवान् भवति । स्वप्रियं रामं स्मरन् सीता रोदिति। वर्धमानं पुत्रं पश्यन् पिता मोदितः भवति । स्वदेशावस्थां पश्यन् को न विषीदति । किं त्वया अद्य पुस्तकं न पठितव्यम् ? वृद्धपुरुषाः सर्वत्र नन्तव्याः । मया सुकर्म एव कर्तव्यम् । अहर्निशं भगवान् स्मर्तव्यः । कदापि कस्यापि अशुभं न चिन्तनीयम् । पितृभिः पुत्राः पालयितव्याः । दुर्गुणाः कदापि न ग्रहीतव्यः ।

अभ्यास १०

संस्कृत में अनुवाद करो :

मैं उपवन को देखता हुआ घर आऊँगा । पानी पीता हुआ मृग नदी में घुस गया । दशरथ राम को याद करते हुए रो पड़े और मर गए । कूजते हुए पक्षी किसके मन को नहीं हर लेते । सुन्दरता नारी का विशेष गुण है । तुम बन्धुता के बन्धन में बंध गए हो। तालाब में जांघ तक पानी है। घृतभरे

दीपक को देखो। प्रातःकाल उठकर भगवान का स्मरण करना चाहिए। तुम्हें रामायण पढ़नी चाहिए। प्रत्येक सैनिक को देश की रक्षा करनी चाहिए। गुरु से आज्ञा लेकर हर काम करना चाहिए। मनुष्य को किसी का धन नहीं चुराना चाहिए। राम ! तुम्हें प्रातःकाल उठना चाहिए और स्नान करना चाहिए। निरीह पशुओं की हत्या नहीं करनी चाहिए।

अभ्यास ११

संस्कृत में अनुवाद करो :

एक गीदड़ प्रतिदिन केकड़े खाने के लिए एक नदी के किनारे जाया करता था। एक दिन ज्योंही वह नदी के पानी में उतरा, त्योंही एक मगर ने उसका पैर अपने मुख में पकड़ लिया। शृगाल बड़ा दुःखी हुआ। उसी समय उसने एक तैरते हुए बांस के टुकड़े को देखा। बांस के टुकड़े को पकड़कर गीदड़ ने मगर से कहा: 'अरे मामा ! मेरा पैर तो यह है, तुमने अपने मुख में इस काष्ठ को क्यों पकड़ रखा है ?' ऐसा कहकर वह बांस का टुकड़ा उसके मुख के आगे कर दिया। मूर्ख मगर ने शृगाल का पैर छोड़कर बांस का टुकड़ा अपने मुख में ले लिया। गीदड़ अवसर प्राप्त करके भाग गया।

शब्द-कोष — गीदड़=शृगालः, केंकड़ा=कर्कः, ज्योंही=यावत्, त्योंही=तावत्, बाँस का टुकड़ा=वंश-खंडम्, तैरता हुआ=तरन्, पकड़कर=गृहीत्वा।

अभ्यास १२

संस्कृत में अनुवाद करो :

प्रह्लाद हिरण्यकश्यप का पुत्र था। लोग हिरण्यकश्यप को ही ईश्वर समझते थे। वे उसके नाम का जप करते थे। लेकिन प्रह्लाद उसको एक मनुष्य समझता था। वह अपने पिता की पूजा ईश्वर मानकर नहीं करता था। यह सुनकर उसका पिता क्रुद्ध हुआ। हिरण्यकश्यप ने उसे अग्नि में डाला लेकिन ईश्वर का स्मरण करते हुए प्रह्लाद को अग्नि शीतल जल के समान हो गई। हिरण्यकश्यप ने बहुत-से प्रयत्न किए लेकिन ईश्वर ने प्रह्लाद की रक्षा

की। भगवान ने नृसिंहावतार धारण करके हिरण्यकश्यप का वध किया। भगवान अपने सच्चे भक्त की प्रार्थना अवश्य सुनते हैं।

शब्द-कोष—सुनकर=श्रुत्वा, स्मरण करते हुए=स्मरन्तनम्, समझता था=अजानात्, मानकर=ज्ञात्वा।

अभ्यास १३

संस्कृत में अनुवाद करो :

अयोध्या के राजा का नाम दशरथ था। राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न उनके पुत्र थे। एक बार राजा दशरथ वन में शिकार खेल रहे थे। वहां नदी के किनारे श्रवण नाम का एक युवक खड़ा था। वह घड़े में पानी भर रहा था। उसके माता-पिता तीर्थ यात्रा कर रहे थे। वह उनके लिए पानी लेने आया था। राजा दशरथ ने श्रवण को हरिण समझकर मार डाला। शोक में मरते हुए माता पिता ने दशरथ को शाप दिया—'तू भी हमारी तरह पुत्र शोक में मरेगा।' हुआ भी ऐसा ही। राम को वनवास हुआ और पुत्र शोक में दशरथ की मृत्यु हुई। राम, सीता और लक्ष्मण के साथ जंगल में रह रहे थे। लंका का राजा सीता को हर ले गया। तब हनुमान की सहायता से राम ने लंका पर आक्रमण किया और रावण को मारकर सीता को पुनः प्राप्त किया। वनवास की अवधि समाप्त होने पर राम अयोध्या वापस आ गये तथा सुखपूर्वक राज्य किया।

शब्द कोष—एक बार=एकदा, घड़ा=कुम्भः, सबसे बड़ा =ज्येष्ठतमः, सहायता=साहाय्यम, अवधि समाप्त होने पर=अवधौ समाप्ते, वापस आ गए=प्रत्यागच्छत्।

अभ्यास १४

संस्कृत में अनुवाद करो :

एक बार वन में जाते हुए शेर को प्यास लगी। वह पानी पीने नदी के किनारे गया। वहाँ एक भेड़ का बच्चा पानी पी रहा था। शेर उसे देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ।

शेर बोला—अरे भेड़ के बच्चे, तुझे मैं मारकर खा जाऊंगा।

भेड़ के बच्चे ने पूछा—मैंने आपका क्या अनिष्ट किया है जिससे आप मुझे दण्ड दे रहे हैं ?

शेर ने कहा—तुमने पानी गन्दा किया है।

भेड़ के बच्चे ने उत्तर दिया—मैं तो प्रवाह के बाद पानी पी रहा हूं। आपका छोड़ा हुआ पानी पी रहा हूं।

शेर ने कहा—तब तेरे बाप ने गन्दा किया होगा।

भेड़ के बच्चे ने कहा—वे तो इस नदी में पानी नहीं पीते।

शेर ने कहा—तो तेरे पूर्वजों ने पिया होगा। यह कहते वह शेर भेड़ के बच्चे को खा गया।

शब्द-कोष—एक बार=एकदा, जाते हुए=गच्छन्, मारकर=हत्वा, दण्ड दे रहे हैं=दण्डयसि।

अभ्यास १५

संस्कृत में अनुवाद करो :

एक प्यासे कौए ने दूर से एक जल का घड़ा देखा। उसे देखकर जल की आशा से वह उसके पास गया। वह भरा हुआ घड़ा न था। अतएव वह अपनी चोंच से जल न पी सका। तब वह सोचने लगा—'मुझे अब क्या करना चाहिए ?' उसने सोचा कि यदि मैं पत्थर के टुकड़ों से घड़े को भर दूं तो पानी ऊपर आ जाएगा। पत्थर के टुकड़ों से उसने घड़े को भर दिया। जल घड़े के मुख तक आ गया। तब उसने इच्छानुसार जल पिया। यत्न से हर कार्य सिद्ध होता है।

शब्दकोष—प्यासा=तृषितः, कौवा=काकः, दूर से=दूरात, थोड़ा—अल्पम्, चोंच=चंचुपुटम्, पत्थर के टुकड़े=पाषाणखण्डानि, ऊपर=उपरि, सोचा=अचिन्तयत्, भर दिया=अपूरयत्, इच्छानुसार=यथेच्छम्, कार्यसिद्ध होता है=कार्यं सिध्यति।

अभ्यास १६

भारत एक महान देश है। उसकी दिव्य विभूतियों में से पंडित जवाहरलाल एक अनमोल रत्न हैं। उनका जन्म वैभव-सम्पन्न परिवार में हुआ। उनके पिता पंडित मोती लाल नेहरु राष्ट्र के बड़े नेता हुए हैं। लेकिन उनके पुत्र तो जगत नेता की पदवी से विभूषित हैं। पंडित जी ने सदा बापू महात्मा गांधी के आदर्शों को माना। पंड़ित जी हिन्दू और मुसलमानों को एक-समान समझते हैं। उनके भगीरथ प्रयत्नों और बापू के परिश्रम और त्याग से भारत ने दासता की वेड़ी काटकर स्वतन्त्रता प्राप्त की है। इस समय शत्रु दश को रोकने के लिए पंडित जी आदेश दे रहें हैं। भारत का प्रत्येक व्यक्ति आज योद्धा है। भगवान हमारे इस नेता को चिरायु करे।

शब्दकोष—पदवी से विभूषित हैं=पदेन विभूषित:, माना=अमन्यत, मुसलमानों को=यवनान्, वेड़ी=निगड़:, काटकर=छित्वा, रोकने के लिए=रोद्धुम्, योद्धा=योध:।

अभ्यास १७

नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

१. आचार्य के वचन सुनकर कर्ण ने अभिमन्यु के धनुष को काट दिया।

२. राजा प्रजा की भलाई के लिए बलि लेता है।

३. राजा जनक आसक्तिरहित होकर सुख का भोग करते थे।

४. रमेश साहस और परिश्रम से कार्य करता है।

५. प्राचीन काल में वाराणासी में ब्रह्मदत्तकुमार धर्मपूर्वक राज्य करते थे।

६. जो व्यक्ति बुरे उपाय से धन चाहता है वह विनष्ट हो जाता है।

७. जो व्यक्ति क्रोध को शान्ति से, दुर्जन को सज्जनता से और कंजूस दान से जीतता है, वह उत्तम पुरुष है।

८. सूर्य का जब उदय होता है तो अन्धकार समाप्त हो जाता है।

९. प्रभात काल में तालाब का जल सुशोभित होता है, कमल खिलते हैं और क्रीड़ायुक्त पवन बहता है।

१०. संध्या के समय वृक्षों की चोटी पर सूर्य की अन्तिम अरुणाभा खेलती है।

शब्दकोष—काट दिया=अच्छिनत्, प्रजा की भलाई के लिए=भूत्यर्थम् आसक्तिरहित होकर=असक्तः, साहस और परिश्रम से=साहसेन श्र‌ ‌र, बुरे उपाय से=अनुपायेन, सूर्य का उदत होता है=सूर्यः उदययि, सुशो. होता है=विलसति, खिलते हैं=विकसन्ति, क्रीड़ायुक्त=सलीलम्, चोटी पर=शिरसि।

अभ्यास १८

संस्कृत में अनुवाद करो :

किसी वन के एक भाग में एक शमी वृक्ष था। उसकी शाखा पर चटक का जोड़ा रहता था। इसके बाद सुख पूर्वक रहते हुए शीत ऋतु में एक दिन बादल ने बरसना शुरू कर दिया। एक बन्दर दाँतों को बजाता और काँपता आया। उसको देखकर चटका बोली—'हे बन्दर ! तुम हाथ और पैरों से युक्त मनुष्यों की आकृति जैसे दिखाई देते हो। तुम मुर्ख हो, व्यर्थ ही दुखी होते हो। घर क्यों नहीं बना लेते ?' यह सुनकर क्रोधपूर्वक बंदर ने उससे कहा—हे नीच ! तुम चुप क्यों नहीं हो जाती हो ? इसकी धृष्टता देखो कि मेरी हसी उडाती है। ऐसा कहकर उसने घोंसले के सैंकड़ों टुकड़े कर दिए। इसलिए उपदेश मूर्खों को क्रुद्ध करता है।

शब्दकोष—चटक का जोड़ा=चटक-दम्पती, बरसना शुरू किया=वर्षितुम् आरब्धः, बजाता हुआ=वादयन्, हाथ-पैरों से युक्त=हस्त-पाद-समायुक्तः, पुरुष जैसे दिखाई देते हो=दृश्य से पुरुषाकृतिः, इसकी धृष्टता=अस्याः धृष्टता, सैंकड़ों टुकड़े=शतधा खण्डशः।

अभ्यास १९

संस्कृत में अनुवाद करो :

प्राचीन काल में तीन आदमी जंगल के किनारे हल चला रहे थे। चोर समझकर राजा ने तीनों आदमियों को बन्दी बनाया। एक स्त्री रोती हुई आई। राजा ने पूछा—"तुम तीनों आदमियों में से किसे चाहती हो?" उसने कहा—'देव तीनों को नहीं दे सकते?" "हाँ नहीं दे सकता हूँ।" "यदि तीनों को नहीं दे सकते तो तो मेरे भाई को दें।" "पुत्र या पति को लो, भाई से तुम्हें क्या मतलब?" उसने राजा से कहा—"देव! पुत्र मेरी गोद में है। मार्ग दौड़ते हुए पति मिलते हैं। लेकिन भाई दुर्लभ है।" राजा ने ऐसा सुनकर प्रसन्न होते हुए तीनों को मुक्त कर दिया।

शब्दकोष—तीनों आदमियों में से=त्रिषु जनेषु, नहीं दे सकते=दातुं न शक्नुथ, यदि=चेत्, हां नहीं=आम न।

अभ्यास २०

संस्कृत में अनुवाद करो :

एक बन्दर और मगर की बड़ी गहरी मित्रता थी। एक बार मगर की स्त्री ने बन्दर के कलेजे को खाने की इच्छा की। मगर ने उसे बहुत समझाया लेकिन उसकी स्त्री ने कहा—"यदि कलेजा नहीं पाऊँगी तो मर जाऊँगी।" अन्त में मगर ने अपनी पत्नी को आश्वासन देकर बन्दर से कहा—"हे मित्र! इस प्रदेश में स्वादहीन फलों को खाते हुए तुम अभ्यस्त हो गये हो। गंगा के उस पार आम आदि के मीठे फलों का अन्त नहीं है।" बन्दर ने कहा—"हे मित्र! गंगा बहुत जल वाली है, वहाँ कैसे जाऊँगा?" "यदि चलो तो मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बिठा कर ले चलूँगा।" बन्दर उसी पीठ पर चढ़ गया। लेकिन मगर ने बीच जल-धार में जाकर कहा—"मेरी स्त्री को तेरा कलेजा खाने की इच्छा उत्पन्न हुई है। उसे मैं तेरा कलेजा खिलाऊँगा।" बन्दर ने उत्तर दिया—"हे मित्र! तुमने कहकर बड़ा अच्छा किया। मैं चलते समय अपना कलेजा उस गूलर के पेड़ पर रख आया हूँ। तुम वहाँ मुझे ले चलो।"

मगर उसे लेकर वहाँ गया। बन्दर ने उसकी पीठ से उछलकर गूलर के वृक्ष पर बैठकर कहा—"हे मूर्ख मगर! प्राणियों का कलेजा वृक्ष पर नहीं होता। तेरा शरीर ही बड़ा है किन्तु बुद्धि नहीं है।"

शब्दकोष=कलेजा=हृदयमांसम्, यदि=चेत्, नहीं पाऊँगी=न लप्स्ये, आश्वासन देकर=समाश्वास्य, गंगा के पार=पारेगंगम्, बहुत जल वाली=महोदका, पीठ पर रखकर=पृष्ठस् आरोप्य, अच्छा किया=सुन्दरं कृतम्। गूलर के पेड़ पर=उदुम्बरवृक्षे, पीठ से उछलकर=पृष्ठतः उत्पत्य।

अभ्यास २१

नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—

१. भोजन पकाने वाले लोगों को आना है।
२. पढ़ने वाला ब्राह्मण व्यापार करता है।
३. नाचने वाली औरत सुन्दर है।
४. खाना खाने वालों को बुलाओ।
५. खेलने वाले लड़के जाते हैं।
६. दौड़ने वाला लड़का मेरा मित्र है।
७. रक्षा करने वाला सैनिक खड़ा है।
८. सोने वाली लड़की मेरी बहन है।
९. पेड़ से गिरने वाले मनुष्य को देखो।
१०. लज्जा करने वाली नारी आदर्श पत्नी है।

जहाँ मुख्य क्रिया के समकालीन दूसरी गौण क्रिया का प्रयोग होता है वहाँ गौण क्रिया से वर्तमानार्थक अत् (शतृ) और आन (शानच्) लगाये जाते हैं। परस्मैपदी धातुओं के कर्तृवाच्य 'अत्' लगता है और आत्मनेपदी धातुओं के कर्तृवाच्य में 'आन'। उभयपदी धातुओं में दोनों लगते हैं। कर्मवाच्य प्रयोग में सब धातुओं के 'आन' ही लगाया जायेगा।

'अत' और 'आन' प्रत्ययान्त पद विशेषण होकर ही आते हैं और वहाँ दूसरी प्रधान क्रिया अवश्य रहती है। यदि और कोई प्रधान क्रिया न हो तो

'अस्ति' या 'भवति' को ही लगा दिया जाता है। जैसे :—

१. सा केसरिणी गर्जन्ती शत्रून् अभक्षयत्।
वह शेरनी गर्जती हुई शत्रुओं को खा गई।

२. धावतोऽश्वाद पतत्स बालः।
दौड़ते हुए अश्व से बालक गिरा।

३. माम् पठन्तम् दृष्टवा स प्रश्नं हसन् अपृच्छत्।
मुझे पढ़ते हुए देखकर उसने हँसते हुए प्रश्न पूछा।

४. रमेशः रामायणं पठन् माम् उपदिशति।
रमेश रामायण पढ़ता हुआ मुझे उपदेश देता है।

५. श्वशुरस्य समक्षे लज्जामाना सावित्री तूष्णीं स्थिता।
श्वशुर के समक्ष लज्जावती सावित्री चुप रही।

अभ्यास २२

नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

१. वन में चलते हुए राम सीता को देखते हैं।
२. रक्षा करते हुए सैनिक मर जाता है।
३. यत्न करता हुआ मनुष्य सफल हो जाता है।
४. रोते हुए राम हनुमान से संजीवनी लाने को कहते हैं।
५. रसोई पकाता हुआ रसोईया आग जलाता है।
६. गाड़ी से गिरती हुई सीता का हाथ राम ने पकड़ लिया।
७. वह रात में सोता हुआ डर कर जाग पड़ता है।
८. श्याम दौड़ता हुआ इधर आ रहा है।

विधि कृदन्त के प्रयोग
(Usage of Potential Passive Participle)

तव्यत्, अनीयर, य प्रत्यय सकर्मक धातुओं के साथ कर्मवाच्य प्रयोग में और अकर्मक धातुओं के साथ भाववाच्य प्रयोग में लगते हैं। इनका कर्ता

तृतीयान्त या षष्ठयन्त होता है। कर्म यदि हो तो वह प्रथमान्त रहता है। 'त्वया गन्तव्यम्' का अनुवाद 'तुम जाओ' तुम्हें जाना चाहिए या तुम जा सकते हो' के रूप में होता है। तव्य आदि प्रत्ययों से बने हुए शब्द वाक्यों में क्रिया की तरह भी प्रयुक्त होते हैं, संज्ञा की तरह भी और विशेषण की तरह भी। जहाँ कोई दूसरी क्रिया न हो वहाँ ये ही क्रिया पद मान लिए जाते है और दूसरी क्रिया रहने पर विशेषण या कारक का काम देते हैं। जैसे :—

१. मया वृथा न भाषितव्यम्।
मुझे व्यर्थ न बोलना चाहिए।

२. बालिकाभि: आतये न चलितव्यम्।
बालिकाओं को धूप में नहीं चलना चाहिए।

३. दरिद्रेभ्यो धनं दातव्यम्।
दरिद्रों को धन देना चाहिए।

४. यावदहं न आगच्छेयम् तावत् त्वया अत्रैव स्थातव्यम्।
जब तक मैं नहीं आ जाता तब तुम्हें यहाँ ही स्थित रहना चाहिए।

५. प्रातरुत्थाय स्थानीयं पश्चाच्च संध्यामुपास्य भ्रमणार्थं बहिः गमनीयम्।
सवेरे उठकर स्नान करना चाहिए और बाद में संध्या करके घूमने के लिए बाहर जाना चाहिए।

अभ्यास २३

संस्कृत में अनुवाद करो :

प्राचीन काल में एक साधु बुढ़ापे में धर्मात्मा हो गया। वह किसी के धन को बिना दिये हुए ग्रहण नहीं करता था। एक दिन नगर से बाहर घूमता हुआ एक ईख (गन्ने) के खेत में रस वाले गन्नों को देखकर पूछने के लिए खेत से इस प्रकार बोला—हे खेत! तीन चार गन्ने ले लूं।" फिर वह स्वयं ही उत्तर देता है—"अरे! पाँच छः ले लो।" इस प्रकार खुद ही अनुमति लेकर पाँच-छः गन्ने लेकर चला जाता। इस प्रकार हमेशा करते हुए स्वामी ने सोचा—"कौन पापी मेरे खेत से गन्ने लेकर जाता है। इसलिए आज छिप-

कर देखता हूँ।" ऐसा सोचकर छिपकर बैठ गया। उसके बाद साधु को ऐसा करते हुए पाकर स्वामी ने धमकाया। साधु ने उत्तर दिया—'क्रोध न करो। मैं हमेशा आज्ञा लेकर ही गन्नों को लेता था।" खेत के स्वामी ने कहा—"किस प्रकार?" साधु ने वह प्रकार बतला दिया। स्वामी ने साधु को कंडा बांधकर कुएँ के पास लाकर कहा—"हे कुएँ! बताओ! साधु को तीन-चार डुबकियां दूं? पांच छः दे दो।" ऐसा कहकर अनेक बार लज्जित कर उसे छोड़ दिया। साधु को शिक्षा दी—"आज से आगे कभी ऐसा न करना।

शब्दकोष — वृद्धावस्थाम् में—वृद्धावस्थायाम्, बिना दिये—अदत्तम्, नगर से बाहर—पुराद् बहिः, घूमता हुआ—भ्रमन्, ईख—इक्षु, गन्नों को—इक्षुदण्डात्, उत्तर देता है —उत्तरयति, अरे—भोः, पांच छः—पञ्चषान्, अनुमति लेकर—अनुमति नीत्वा, हमेशा करने पर—सर्वदा क्रियमाणे, छिपकर—प्रच्छन्नीभूय, ऐसा करते हुए—तथा कुर्वंतम्, फटकारा—अतर्जयत्, कड़ा बांधकर—दृढ़ बध्वा, तीन चार डुबकियाँ—त्रिचतुराः मज्जयः, पांच छः—पञ्च षा, लज्जित करके—विडम्ब्य।

अभ्यास २४

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करके लिखो:

१. धर्मस्य बिना शांति नास्ति। २. कृष्णं नमः। ३. रामः श्यामं पुस्तकं ददाति। ४. रामस्य सह सीता वनं गमिष्यति। ५. सिंहस्य भीतो बालकः। ६. रामेण रावणः वीरवरः। ७. स कर्णस्य बधिरः। ८. भक्तः अधितिष्ठति मन्दिरे। ९. माता वणिककुताराय अकथयत्। १०. गोपालैः सिद्धसेनं प्रशंसितः।

अभ्यास २५

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करके लिखो:

१. रमेशः पादस्य खञ्जः। २. राजा हरिश्चन्द्रः याचकं धनं ददाति। ३. नगरस्य बहिः सैनिकाः सन्ति। ४. नमो ब्राह्मणम्। ५. रामः सिंहेन बिभेति। ६. रामस्य समं सीता वनं अगच्छत। ७. सः रामात् धनं याचते। ८. भिक्षुकः बालं पन्थानः पृच्छति। ९. इदानीं बालकः पृष्ठेन कुब्जः। १०. मां ओदनं रोचते।

अभ्यास २६

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करके लिखो :

१. इदं मासिकं पत्र अस्ति । २. नगरेण विद्यालयः क्रोशे अस्ति । ३. सः दीनस्य प्रति सदा दयां करोति । ४. कविभ्यः कालीदासः श्रेष्ठः । ५. बालकः गोः दुग्धं पिबति । ६. राजा सिंहासने अधितिष्ठति । ७. कामेन क्रोधो सम्भवति । ८. यज्ञेन भवति पर्जन्यः । ६. सर्वेषु बालकेषु सुरेन्द्रो विद्वतरः । १०. पिता पुत्रं स्कन्धे वहति ।

अभ्यास २७

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करके लिखो :

१. रामस्य ऋते कः रक्षकः । २. पुत्रस्य सह पुत्री गच्छति । ३. उभयतो ग्रामस्य निर्जनप्रदेशो वर्तते । ४. रमणीयो वनम् एष मह्यं रोचते । ५. धर्मात्मा वैकुण्ठे अधितिष्ठति । ६. त्वां प्रतिदिनं नमः । ७. धर्मेण हीनाः पशूनां समानाः । ८. रामः रावणं क्रुध्यति । ६. वयं तं पुस्तकं पठितवान् । १०. मौनं सर्वार्थसाधकेन भूयते ।

अभ्यास २८

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करके लिखो :

१. दीनस्य प्रति दया कर्त्तव्या । २. धिक् रावणाय । ३. भिक्षुकः चक्षुषोः अन्धः । ४. मेघस्य सह तडित् प्रलीयते । ५. रामस्य विना न कोऽपि समर्थः । ६. अलं विवादम् । ७. नदिषु गंगा श्रेष्ठतमा । ८. अध्यापकः छात्रस्य वदति । ६. शिष्यः गुरुं वन्दति । १०. स विप्रं दानं ददाति ।

अभ्यास २६

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करके लिखो :

१. कृष्णं अश्वे रामः आरोहति । २. नगरस्य परितः विस्तीर्णा नदी । ३. अहं तव साकं गमिष्यामि । ४. रामः रावणं अलम् । ५. नमो भगवन्तम्

अभ्यास ३०

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करके लिखो :

१. गोपाः गां दुहन्ति । २. पिता पुत्रं क्रुध्यति । ३. पिता रामं स्निह्यति । ४. रामस्य विना कोऽपि रावणं हन्तुं न समर्थः । ५. माधवपुरे नाम नगरे महाविद्यालयः अस्ति ।

जम्मू-कश्मीर यूनीवर्सिटी की मैट्रिकुलेशन की परीक्षा के प्रश्न-पत्र

१९६०

१. (क) नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं पाँच का संधिविच्छेद कीजिए :
शिलोच्चये, नवोढा, ईश्वरेच्छा, इतीव, वधूपरि, नरेशः, राज्ञावागतः, तट्टीका ।

(ख) नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं पाँच की सन्धि कीजिये :
तत्+लयः, एतद्+मुरारिः, ऋतौ+अन्नम्, दधि+आनय, मधु+अरि, विशाल+उदरम्, पुत्र+इष्टि, श्री+ईशः ।

२. नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं पाँच के तीनों वचनों में रूप लिखिये :
(क) कवि—प्रथमा, सखि—द्वितीया, भानु—तृतीया, पितृ—चतुर्थी ।

(ख) निम्नांकित धातुओं में से किन्हीं पाँच के तीनों वचनों में रूप दीजिये :
हस्—लोट् प्र० पु०, स्वप्—लट् उ० पु०, दा—लट् म० पु०, स्पृश्—लृट् अन्य पुरुष, चर्—विधिलिङ् म० पु०, कथ्—लट् उ० पु०, ग्रह्—लोट प्र० पु० ।

(ग) निम्नांकित वाक्यों में से किन्हीं तीन को शुद्ध कीजिये और कारण दीजिये :
स चक्षुषः पश्यति । रामं नमः । मोहनः नेत्रयोः काणः । राजा सिंहासने अधितिष्ठति । वयं भवन्तम् राजा मन्यामहे । गोपालः गोः दुग्धं पिबति ।

३. (क) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो के लकार, पुरुष और वचन बतलाइये :
भवाव, हसेम, अपठत्, चलिष्यति ।

(ख) किन्हीं दो शब्दों के समास बतलाकर विग्रह कीजिए :

नखभिन्नः, वाग्युद्ध, सभापंडितः, पञ्चवटी, प्रत्यक्षः ।

(ग) किन्हीं दो शब्दों में धातु और कृत्प्रत्यय बतलाइये :

अधिकृत्य, हित्वा, जेतुम्, दातव्यम् ।

४. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

(अ) सवेरे उठकर पढ़ने बैठ जाओ। परीक्षा के बाद छुट्टियों में भ्रमण अच्छा होता है। अच्छे विद्यार्थी ईश्वर पर भरोसा करते हैं। पढ़ने के समय वे अन्यत्र-ध्यान नहीं देते और उत्तीर्ण होकर यश प्राप्त करते हैं।

(आ) प्रतिवर्ष रामलीला होती है। राम का चरित लोग देखते हैं। उसमें उनको बड़ा आनन्द आता है। रामलीला का प्रभाव मनुष्यों पर अच्छा पड़ता है।

(इ) देश-प्रेम महापुरुषों का लक्षण है। जो अपने देश से प्रेम करते हैं, उनका आदर सर्वत्र होता है। वह देश महान् होता है जहाँ के निवासी देश-भक्त होते हैं।

(ई) मैंने आज पढ़ा नहीं। इसलिए मेरे पिता आज मुझ से रुष्ट थे। अब मैं खेल में समय नष्ट नहीं करूँगा। तुम घर जाओ और अब मैं पढ़ूँगा।

हायर सैकेण्डरी इलेक्टिव

१९६२

१. Decline any two of the following in all cases and numbers.

बुद्धि, आत्मन्, पुंस्, पितृ, देवी।

२. Conjugate any two of the following in all persons and numbers.

पा (लट्—Present tense), हन् (लृट्—Future tense), तुष् (विधिलिङ्—Potential Mood), कृ (लङ्—Imperfect).

३. Name and expound any two of the following Samasas :
पाण्डुनन्दनः, प्रतिग्रामम्. नेत्रकमलम्, चतुर्मजः ।

४. Write grammatical notes on any three of the following :
चिकीर्षितम्, विषीदन्तम्, शैक्षम्, उपयेमे, दुर्मरेण ।

५. Correct any three of the following :

(क) दुर्जनस्य सह मैत्री मा कुरु ।

(ख) मां पुस्तकं किं न ददासि ?

(ग) मया सर्वं विश्वं पश्यते ।

(घ) रामः अध्यापकं वन्दति।

(ङ) कृष्णं नमः ।

मट्रिकुलेशन परीक्षा

१६६१

१. (क) किन्हीं चार की परस्पर सन्धि कीजिए :
शिवः+तत्र, रामः+उवाच, जगत्+चक्रम्, सन्+असौ, यदि+अपि, तद्+मयम् असुर+अरिः, यती+इमौ ।

(ख) किन्हीं चार में सन्धिविच्छेद कीजिए :
तदैव, देवर्षिः, सिन्वावनि, तल्लाभः, जगन्नाथः, कविश्चकार, कुर्वंस्तदा, बालोऽवदत् ।

२. (क) किन्हीं तीन शब्दों के रूप तीनों वचनों में लिखियेः
सखि के प्रथमा में, स्त्री के द्वितिया में, मधु के तृतीया में, विद्वस् के चतुर्थी में और युष्मद् के पञ्चमी में ।

(ख) किन्हीं तीन शब्दों की विभक्ति और वचन बताइये :
अस्मै, यतेः, चतसृभिः, मारुति, नदीः ।

३. (क) किन्हीं तीन धातुओं के रूप तीनों वचनों में लिखिये :
वन्द् के लट् प्रथम पुरुष में, अस् के लङ् प्रथम पुरुष में, क्रुध् के लोट् मध्यम पुरुष में, चल् के विधिलिङ् उत्तम पुरुष में और पा के लृट् प्रथम पुरुष में।

(ख) किन्हीं तीन पदों के लकार और पुरुष बताइये :
वदेयुः, वर्धसे, कुप्याम, अपश्यः, पूजयिष्यसि, ऊचुः ।

४. (क) किन्हीं पांच वाक्यों को शुद्ध कीजिये :

पुत्रस्य सह पिता गच्छति । गुरुः छात्रं पुस्तकं ददाति । वृक्षेण फलं पतति । कृष्णं नमः अस्तु । बालः गृहे प्रविशति । वानरः वृक्षम् अवरोहति । चौरं दण्डात् ताडयति । रामः रावणस्य हन्ति ।

५. (क) किन्हीं तीन समस्त पदों का विग्रह कीजिए और समास का नाम भी बताइये :

प्रतिदिनम्, हरिहरौ, राजगृहम्, पुरुषव्याघ्रः, दिगम्बरः ।

(ख) कोई से तीन कृदन्त रूप बताइये :
दा का तुमुन्नन्त, पा का क्तान्त, चल् का क्त्वान्त, वन्द् का तव्यान्त और लिख् का शत्रन्त ।

६. (क) किन्हीं दो के स्त्रीलिंग शब्द बताइये :

राजा, अश्वः, नरः, सिंहः, युवा ।

(ख) पठ् और चल् के णिजन्त रूप लिखिये ।

अथवा

वाच्य-परिवर्तन कीजिये :

छात्रः वेदं पठति । रामेण रावणः हतः ।

७. संस्कृत में अनुवाद कीजिये :

(क) भारतवर्ष हमारा प्यारा देश है । हम भारतमाता के पुत्र और कन्याएं हैं । यह भूमि हमारे लिए विविध प्रकार के अन्न आदि देती है । इनमें अनकों पवित्र नदियाँ बहती हैं जिनका स्वच्छ और मधुर जल हम पीते हैं ।

(ख) हम पिछले वर्ष कश्मीर की सैर को गए । इस वर्ष हम हिमालय के अन्य दृश्यों को देखेंगे । यदि हमारे मित्र समय पर आएं तो हमारे साथ ही चलें । तुम भी अगले वर्ष किसी सुन्दर स्थान को देखो । इस वन में पाण्डव निवास करते थे ।

(ग) रथ दो पहियों से चलता है । मैं तुम्हें कल एक मीठा फल दे दूंगा । तू मेरे साथ नगर को चल । धन के बिना जीवन में कोई सुख नहीं । मोहन सोहन से अधिक चतुर है ।

(घ) सूर्य के उदय से पहले-पहले उठना चाहिए। प्रातः उठकर स्नान करना अच्छा होता है। मार्ग में चलते-चलते पाठ याद करो। पढ़े हुए पाठों को घर पर फिर पढ़ो। संस्कृत पढ़ने के लिए काशी जाओ।

१९६२

१. (क) किन्हीं चार में सन्धि कीजिए :

गंगा + उदकम्, रामः + हसति, यदा + एव, अर्जुनः + उवाच, तद् + हितम्, हसन् + अपि।

(ख) किन्हीं चार में सन्धिविच्छेद कीजिए :

बालोऽवदत्, तन्मयम्, यदीदम्, रामश्चकार, विद्वांस्तत्र, देवालयः, महद्भयम्।

२. (क) किन्हीं छः शब्दों के रूप बताइए :

'नर' के षष्ठी में, 'मनस्' के प्रथमा में 'अस्मद्' के चतुर्थी में, 'मति' के तृतीया में, 'मधु' के द्वितीया में, 'कवि' के सप्तमी में, 'राजन्' के सम्बोधन में, 'इदम्, के प्रथमा में और 'लता' के सम्बोधन में।

(ख) किन्हीं छः पदों की विभक्तियाँ बताइए :

हरे, पित्रा, नद्यः, विदुषे, चक्रिणा, सरिताम्, तस्मिन्, एते, युष्मत्।

३. किन्हीं चार शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द बनाइए :

नरः, अजः, विद्वान्, मूषकः, बालः, सर्पः, गर्दभः।

४. किन्हीं छः वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

(१) पिता पुत्रस्य वदति, (२) गुरू छात्रं पुस्तकं ददाति। (३) बालः सर्पं दण्डात् ताडयति, (४) नगरेण ग्रामः क्रोशे अस्ति, (५) जनाः स्वगृहाणां वसन्ति, (६) नरेभ्यो नापितो धूर्तो अस्ति, (७) लक्ष्मणस्य सह रामः वनं अगच्छत्, (८) श्यामः मोहनेन चतुरतरः अस्ति।

५. (क) किन्हीं तीन धातुओं के रूप लिखिए:

गम् के लङ् में, अस् के लट् में, वद् के लृट् में, कुप् के लोट् में, और पा के विधिलिङ् में।

(ख) किन्हीं तीन पदों के लकार और पुरुष बताइए :
वन्दते, अगणयम्, स्पृश, कुर्यात्, ज्ञास्यामि ।

६. (क) कारयति शब्द कैसे बनता है ? इस शब्द का अर्थ क्या है ?

अथवा

'रामः रावणं हन्ति'—इस वाक्य में वाच्य-परिवर्तन कीजिये ।

(ख) किन्हीं तीन समस्त पदों में समास-विग्रह कीजिए और अर्थ भी बताइए :

प्रतिग्रामम्, विद्यालयः, धर्मार्थौ, मुखकमलम्, मृगनयना, अधीतविद्यः ।

(ग) किन्हीं छः कृदन्त शब्दों में कृत्-प्रत्यय बताइये :

अगत्य, पठितुम्, एलितवान्, वन्दितव्यः, प्राप्तम्, दर्शनीयः, गच्छन्, वर्धमानः, कार्यम् ।

७. (क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

हम अपने घरों में सुख से रहते हैं। यदि अध्यापक जी विद्यालय में हों तो तुम सब उनसे संस्कृत पढ़ो। लड़कियों ने चन्द्रमा के प्रकाश में नाचा। आज हम दो उस नदी का सुन्दर दृश्य देखेंगे ।

(ख) मोहन का घर किस नगर में है ? कवियों ने सुन्दर काव्य लिखे। हम लड़कियों के लिए मीठे फल लायेंगे। छात्र विद्वानों का आदर करें तुम महात्मा के पास जाओ।

(ग) आज जो-जो लड़का यहाँ आया है, वह-वह अभी भीतर आ जाए। मैं नदी से मीठा पानी लाऊंगा। चाँद का प्रकाश बच्चों को अच्छा लगता है। हमने उस बाग के मीठे फल खाए। नगर से ग्राम तक दो कोस है।

(घ) अपना काम उचित समय पर करना चाहिए। काम करके खेलने को जाना चाहिए। मैं पढ़े हुए पाठ को याद कर चुका। यह स्थान देखने के योग्य है। साँप छूते-छूते ही मार देता है।

१९६३

१. (क) किन्हीं चार में सन्धि कीजिए :

दैत्य+अरिः, यदि+अपि, राम+चिनोति, वाक्+ईशः, शिवः+वन्द्यः, तद्+शिवः ।

(ख) किन्हीं चार में सन्धिच्छेद कीजिए :
गणेशः, रामोऽकथयत्, वृद्धावस्था, प्रत्युवाच, भानूदयः, सच्चित् ।

(क) किन्हीं छः शब्दों के रूप बताइये :
'बाल' के षष्ठी में, 'मुनि' के तृतीया में, 'पितृ' के प्रथमा में, 'नदी' के द्वितीया में, 'फल' के चतुर्थी में, तद् (पुं०) के पंचमी में, 'राजन्' के सप्तमी में ।

(ख) किन्हीं छः शब्दों की विभक्तियाँ बताइये :
तस्मिन्, जगत, वदन्तम्, स्त्रियै, लताभ्याम्, गावः, पत्युः ।

३. (क) किन्हीं तीन धातुओं के रूप लिखिए :—
हस् के लङ् में, अद् के लट् में, दा के लृट् में, नश् के लोट् में और विधिलिङ् में ।

(ख) किन्ही तीन पदों के लकार और पुरुष बताइये :
अपठत्, सेवस्व, स्यात् दास्यति, दीव्यतु ।

४. किन्हीं चार शब्दों के स्त्रीलिङ्ग शब्द बताइए :
वीरः, वत्सः, मनोहरः, कुमारः, सिंहः, तपस्विन् ।

५. किन्हीं छः वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

(क) स सखिम् आह्वयति।
(ख) नदिषु गंगा श्रेष्ठतमा ।
(ग) तस्य मित्रः आगच्छति ।
(घ) अयं नदी वेगवान् ।
(ङ) राजा दरिद्रं धनं ददाति ।
(च) कस्यचित् सह विवादं मा कुरु ।
(छ) लक्ष्मणः रामात् अनुगतः ।
(ज) इदं साप्ताहिक पत्र अस्ति ।

६. (क) किन्ही दो में वाच्य बदलिए :
(१) ते गृहं गच्छन्ति ।

(२) त्वया देवाः पूज्यन्ते ।
(३) बालकेन रुद्यते ।

(ख) किन्हीं तीन समस्त पदों में समास-विग्रह कीजिए और अर्थ भी बताइये :—

कूपपतितः, लक्ष्मीपतिः, शुभोत्सवः, घनश्यामः, नीलाम्बरः ।

(ग) किन्हीं चार कृदन्त शब्दों में कृत्-प्रत्यय बताइये :—

कृत : गृहीत्वा, गतवान्, दातुम्, पूजियव्यः, दर्शनीयः, भोज्यः ।

७. (क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

(*i*) गोपाल मुँह धोता है ।
(*ii*) फुलवाड़ी में माली फूल की मालायें बनाता है ।
(*iii*) सिपाही तलवार से शत्रुओं को मारता है ।
(*iv*) इस लड़के की बुद्धि तीक्ष्ण है ।
(*v*) बोलता हुआ तोता उड़ गया ।
(*vi*) बालक ने कहा —मैं आगे से सच बोलूंगा ।
(*vii*) आप क्यों शोक करते हैं ?
(*viii*) मैं यह पूछना चाहता हूँ कि तुम यहाँ आकर क्या करोगे ।
(*ix*) अच्छी तरह बोलो और सबका सत्कार करो ।
(*x*) वर्षा बन्द हो जाने पर हम बाजार जायेंगे ।

(ख) किसी जंगल में एक सिंह सुख से सो रहा था । इतने में एक चूहा उसकी गर्दन पर दौड़ गया । सिंह जाग पड़ा । चूहे की उद्दण्डता देखकर उसे क्रोध आया । उसने चूहे को पकड़ लिया । चूहे ने गिड़गिड़ाकर उसे छोड़ देने की प्रार्थना की । सिंह ने उदारतापूर्वक उसे छोड़ दिया ।

१९६४

१. (क) किन्हीं चार में सन्धि कीजिए :

सूर्य + उदयः, कवि + इन्द्रः, सत् + चरित्रः, जगत् + नाथः, नरः + अवदत्, निः + कपट ।

(ख) किन्हीं चार रूपों का सन्धिच्छेद कीजिए :—

हिमालयः, सदैव, तच्छ्रुत्वा, वागीशः, नरो गच्छति, स्वागतम् ।

२. (क) केवल छः शब्दों के रूप बताइये :

'राम' के चतुर्थी में, 'हरि' के सप्तमी में, 'गुरू' के तृतीया में, 'माला' के द्वितीया में 'जल' के प्रथमा में, 'अस्मद्' के षष्ठी में, 'सर्व' (पुं०) के पंचमी में ।

(ख) किन्हीं छः पदों की विभक्तियां बताइये :

यस्मिन्, वारीणि, नद्यै, रामाणाम्, पितुः, नरैः, बालेभ्यः ।

३. (क) केवल तीन धातुओं के रूप लिखिये :

दृश् के लङ् में, अस् के लट् में, नृत् के लोट् में, कृ के लृट् में, पा के विधिलिङ् में ।

(ख) किन्हीं तीन पदों के लकार और पुरुष बताइये :

अगच्छन्, वर्धन्ते, देहि, हन्यात्, स्मरिष्यन्ति ।

४. (क) किन्हीं चार शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द लिखिए :

ब्राह्मणः, राजन्, विद्वस्, सुन्दरः, गायकः, बुद्धिमत् ।

(ख) किन्हीं छः वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

(*i*) दरिद्रं धनं देहि ।

(*ii*) शिवं नमः ।

(*iii*) रामः लक्ष्मणस्य सह गच्छति ।

(*iv*) त्वं कुत्र गच्छति ?

(*v*) अयं मम गृहं अस्ति ।

(*vi*) तव भ्राता मम मित्रः ।

(*vii*) देवः नेत्रस्य काणः अस्ति ।

(*viii*) वृक्षेण पत्राणि पतन्ति ।

(*ix*) पिता पुत्रं क्रुध्यति ।

५. (क) केवल दो वाक्यों का वाच्य-परिवर्तन कीजिए :

बालः जलं पिबति । अहं ग्रामं गच्छामि । तेन पुस्तकं पठ्यते ।

(ख) नीचे लिखे समस्त पदों में से केवल **तीन** का नाम निर्देश कीजिए :
यथाशक्ति, त्रिलोकी, दशाननः, पीताम्बरम्, पितरौ।

(ग) किन्हीं दो के तुलनावस्था (Comparative) तथा अतिशयावस्था (Superlative) वाचक शब्द लिखो :
प्रिय, गुरु, पटु, दीर्घ।

६. (क) संस्कृत में अनुवाद कीजिए :
(*i*) माता भोजन पकाती है।
(*ii*) नदियाँ पहाड़ों से निकलती हैं।
(*iii*) गुरु के लिए नमस्कार हो।
(*iv*) बालक सदा सच बोलें।
(*v*) यह विद्यार्थी मूर्ख हैं।
(*vi*) पहाड़ों में हिमालय सबसे ऊँचा है।
(*vii*) कौन सफलता नहीं चाहता ?
(*viii*) जैसा करोगे वैसा भरोगे।
(*ix*) चोर धन चुराकर भाग गये।
(*x*) संस्कृत सरल और मीठी भाषा है।

(ख) सीता पतिव्रता स्त्री थी। वह राम के साथ वन गई। वहाँ वे सुख से रहते थे। एक बार उसने एक मृग देखा। उसे देखकर वह बहुत प्रसन्न हुई और राम से कहने लगी—महाराज ! मुझे यह हरिण ला दें। राम बाण से हरिण को मारकर सीता के लिए ले आये। आश्रम में सीता को न पाकर वह अति दुःखित हुए।

हायर सैकिण्डरी इलैक्टिव

१९६४

१. (अ) नीचे लिखे किन्हीं **दो** शब्दों में सन्धि कीजिए :
महा+ऋषिः, पौ+अनः, निः+फलम्।

(ब) केवल **तीन** शब्दों का सन्धिच्छेद कीजिए।
दुर्नीतिः, षष्ठः, गिरीन्द्रः, महैश्वर्यम्, बसन्ततुः।

२. (अ) निम्नलिखित शब्दों के रूप लिखिए :
(१) मधु या अक्षि—द्वितीया विभक्ति।
(२) तत् (स्त्रीलिंग)—षष्ठी „ ।
(३) वधू या श्री—सप्तमी „ ।

(ब) निम्नलिखित धातुओं के रूप लिखिए :
(१) दृश या स्था—लट् उत्तम पुरुष।
(२) शक् या क्री—लङ् प्रथम पुरुष।
(३) भी या व्यध्—लृट् मध्यम पुरुष।

(स) किन्हीं चार संख्याओं को संस्कृत शब्दों में लिखिए :
१०, १५, ३६, ६०, ११०, १०००।

३. (अ) किन्हीं दो का वाच्य-परिवर्तन कीजिए :
(१) नारदः वेदान् शृणोति।
(२) विदुषा कुलीनेन गर्वो न क्रियते।
(३) कविः नृपाणां गुणान् अवर्णयत्।

(ब) निम्नलिखित किन्हीं पाँच समस्त पदों का विग्रह कीजिए और समास के नाम लिखिए :
पुरुषसिंहः, त्रिलोकी, राजलक्ष्मीः, खेचर, काकोलूकम्, मधुरप्रकृतिः, उपगङ्गम्।

(स) निम्नलिखित किन्हीं दो प्रत्ययों को जोड़कर शब्द बनाइये :
त्व, इमन्, इन्, विन्, मय।

४. (अ) चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किन स्थितियों में होता है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(ब) निम्नलिखित धातुओं में से किन्हीं दो के णिजन्त रूप लट् लकार उत्तम पुरुष में लिखिए :
नृत्, अश्, शी, नी।

५. (अ) संस्कृत में अनुवाद कीजिये :
(१) अच्छे कार्यों द्वारा राजा अपना यश चारों दिशाओं में फैलाता है।

(२) इस स्कूल की दसवीं जमात में पचपन लड़के पढ़ते हैं।

(३) पर्वतों में हिमालय सबसे ऊँचा है।

(४) यह भिखारी नहीं, जटाओं से कोई साधु प्रतीत होता है।

(५) सम्पत्ति में बहुत-से मित्र होते हैं किन्तु विपत्ति में कोई नहीं आता।

(ब) एक दिन सिद्धार्थ शहर में गया। वहाँ उसने एक बूढ़े मनुष्य को देखा। उसने छन्दक से पूछा "यह कौन है ?" छन्दक ने कहा 'यह बूढ़ा है, कभी जवान था।' सिद्धार्थ दुःखी हृदय से वापिस घर लौट आया। प्रातःकाल वह नौकरों से जगाया गया। गुरु के द्वारा उसे धर्म का उपदेश दिया गया। आचार्यों द्वारा उसे ज्ञान का फल बताया गया। किन्तु सिद्धार्थ उस बूढ़े की मूर्ति को नहीं भूला। अगले दिन वह फिर नदी के किनारे गया। नदी में उसने एक लाश देखी। उसने छन्दक से पूछा कि यह क्या है ? छन्दक ने उत्तर दिया—'यह मनुष्य की मृत देह है'। सिद्धार्थ छन्दक के वचन सुन कर चुपचाप घर आया।

(अ) हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

अस्ति मगधदेशे चम्पकवती नाम, अरण्यानी। तस्यां चिरात्, महता स्नेहेन मृगकाकौ निवसतः। स च मृगः स्वेच्छया भ्राम्यन्, पुष्टाङ्गः केनचित् शृगालेनावलोकितः। तं दृष्ट्वा शृगालोऽचिन्तयत्। आः कथमेतन्मांसं सुललितं भक्षयामि। भवतु। विश्वासं तावदुत्पादयामिः। इत्यालोच्य, उपसृत्याब्रवीत। मित्र कुशलं ते। मृगेणोक्तम्। कस्त्वम्। स ब्रूते। क्षुद्रबुद्धिनामा जम्बुकोऽहम्। अत्रारण्ये, मित्र-बन्धुहीनो, मृतवद् एकाकी निवसामि। इदानीं, भवन्तं मित्रसासाद्य, पुनः सबन्धुर्जीवलोकं प्रविष्टोऽस्मि।

(ब) (१) सत्संगतिः कणय किं न करोति पुंसाम् ?

(२) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

(३) अस्मै विदुषे ब्राह्मणे दक्षिणां प्रयच्छ।

(४) त्वरते मे मनोऽध्ययनाय।

(५) रज्जु सर्पं न मन्येध्वम् ।

७. निम्नलिखित में से किन्हीं दो के भाव को विस्तार में लिखिए :

(१) सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः ।

(२) लोचनाभ्याम् विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति ?

(३) उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।

मैट्रिकुलेशन परीक्षा

१९६५

१. किन्हीं चार में संधि कीजिए :

(क) अद्य+एव, पितृ+आज्ञा, इष्+तः, क्रुध्+धः, कस्मिन्+चित् ।

(ख) किन्हीं चार का सन्धिच्छेद कीजिए :

महेन्द्रः, अप्येवम्, नायकः, अजन्ताः, यशांसि ।

२. किन्हीं तीन के रूप लिखिए :

'सरित्' की षष्ठी में, 'पितृ' की द्वितीया में, 'गिर' की प्रथमा में, 'मधु' की चतुर्थी में, 'अदस्' की स्त्रीलिंग सप्तमी में।

(ख) किन्हीं चार के लिए संस्कृत शब्द लिखिए :

स्त्री ने, नदियों में, दोनों का, मित्र को, पत्थर पर, कलम से ।

३. किन्हीं चार के स्त्रीलिङ्ग शब्द लिखिए :

अजः, सिंहः, तपस्विन्, विद्वान्, सुन्दरः, ब्राह्मणः ।

(ख) किन्हीं चार संख्याओं को संस्कृत में लिखिए :

बारह, पच्चीस, तीस, पेंतालीस, अस्सी, निनानवे ।

४. (क) किन्हीं तीन धातुओं के रूप लिखिये :

'स्था' (लट्), 'अधि+इ' (लृट), 'हन' (लङ्), 'नृत्'(लोट्), 'मुच् (विधिलिङ्) ।

(ख) किन्हीं चार के लकार और पुरुष बताइये :

रक्षेः, पश्यानि, अलभन्त, ब्रूहि, भ्राम्यथ, कुर्यात् ।

५. किन्हीं छः वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(क) ईश्वरं नमः। (ख) ज्ञानेन विना न मुक्तिः। (ग) रामस्य सह गृहं गच्छति। (घ) बालः सिंहं बिभेति। (च) मां फलं रोचते। (छ) दीनस्य प्रति दया कर्तव्या। (ज) लता बुद्धिमान कन्या अस्ति। (झ) देवेन सुरेन्द्रः कृशतरः अस्ति। (ट) अलं विवादात्।

६. किन्हीं तीन के समस्त पद लिखकर अर्थ बताइये :

रथस्य पश्चात्, त्रयाणां पथां समाहारः नखैः भिन्नः धर्मात् भ्रष्टः, धर्मं जानाति।

(ख) किन्हीं चार के प्रकृति और प्रत्यय बताइये :

पिबन्, नयमानः, स्मृतः, दत्तवान्, गन्तव्यः, रोदनीयः, पक्तुम्, विनश्य।

(ग) 'चोरः धनं हरति'—इस वाक्य का वाच्य-परिवर्तन कीजिए।

७. सरल संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

(क) एक कुएँ में एक मेंढक रहता था, एक दिन उसके पास समुद्र का मेंढक आया, पहले ने पूछा—'समुद्र कितना बड़ा है?' दूसरे ने कहा—'बहुत बड़ा है।' पहला थोड़ा-सा उछला और बोला—'क्या इतना बड़ा है?' दूसरा बोला—'नहीं इससे बहुत बड़ा।' पहला थोड़ा और भी उछलकर पूछने लगा—'क्या इतना बड़ा?' दूसरा बोला—'नहीं इससे भी बहुत बड़ा।' अब तो कुएँ का मेंढक कुएँ के आर-पार उछल कर बोला—'तो भी मेरे इस कुएँ से बड़ा नहीं हो सकता है।' दूसरा हँसने लगा।

(ख) (क) तेरी साईकिल कहाँ है? (ख) क्या रमा भी तेरे साथ आई? (ग) विद्या सबसे बड़ा धन है। (घ) घटा घिर आई, मोर नाचने लगा। (च) किसी से भी मत डरो (छ) अब बालक खेलें। (ज) ऊँटों के विवाह पर गधे गीत गाते हैं। (झ) रोगी की दशा अब अच्छी है। (ण) आत्मा अमर है। (ट) आजकल गर्मियों की छुट्टियाँ हैं।

